राजभाषा आलोक

वार्षिकांक 2024

भाकृअनुप
ICAR

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

राजभाषा आलोक

वार्षिकांक 2024

भाकृअनुप
ICAR

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली 110 001

डॉ. अनुराधा अग्रवाल, परियोजना निदेशक, कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली 110012 द्वारा प्रकाशित एवं मेसर्स चन्दू प्रेस, 469, पटपटगंज औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली 110092 द्वारा लेजरटाइपसेट व मुद्रित।

शिवराज सिंह चौहान

SHIVRAJ SINGH CHOUHAN

सत्यमेव जयते

**कृषि एवं किसान कल्याण और
ग्रामीण विकास मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली**

**Minister of Agriculture & Farmers Welfare and Rural Development
Government of India
Krishi Bhawan, New Delhi**

संदेश

खेती किसानी और इससे जुड़े हुए विभिन्न क्रियाकलापों में हमारे देश का लगभग 55% कार्यबल लगा हुआ है। हमारा कृषि उत्पादन हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। आज महानगर से लेकर छोटे गांव/कस्बों तक के बाजार एवं हाट कृषि उत्पादों से भरे हुए हैं। देश के किसानों के परिश्रम और सूझबूझ तथा वैज्ञानिकों के अनुसंधान से कृषि एवं इससे जुड़े लगभग प्रत्येक क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई है। सरकार अब कृषि अनुसंधान को भी नई दिशा व नई ऊर्जा देना चाहती है। अब अनुसंधान की दिशा किसानों की आवश्यकताओं एवं कठिनाइयों को ध्यान में रखकर तय की जा रही है। अब तक वैज्ञानिक अनुसंधान करते थे और इसके परिणामों को किसानों को बतलाया जाता था, किंतु अब किसान अपनी जरूरतें बताएंगे और वैज्ञानिकगण किसानों की जरूरतों के अनुरूप अनुसंधान करेंगे।

देश की कृषि के वर्तमान स्तर को प्राप्त करने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है। किसान चाहे देश के किसी भी भाग का हो–चाहे पहाड़ी क्षेत्रों में हो, तटीय क्षेत्रों में हो, अलग–अलग पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में हो अथवा जलवायु संबंधी विषम स्थितियों में हो, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा लगभग हर क्षेत्र के किसानों के लिए उत्कृष्ट कार्य किया गया है तथा हर क्षेत्र की खेती को संवारने संबंधी कार्य किए गए हैं।

अपने विभिन्न क्रियाकलापों और अधिदेशों पर ध्यान देने के साथ–साथ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद राजभाषा संबंधी अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन भी करता रहा है। इसी दिशा में एक कदम राजभाषा हिन्दी में निकाली जाने वाली यह पत्रिका ''राजभाषा आलोक'' है। मैं 'राजभाषा आलोक' पत्रिका के इस 28वें अंक के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि यह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी।

शुभाकांक्षी

(शिवराज सिंह चौहान)

भागीरथ चौधरी

BHAGIRATH CHOUDHARY

कृषि एवं किसान कल्याण
राज्य मंत्री
भारत सरकार

MINISTER OF STATE FOR AGRICULTURE
& FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

संदेश

हाल ही में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की वार्षिक आम बैठक आयोजित की गई तथा फिर कुछ समय बाद परिषद का स्थापना दिवस मनाया गया। दोनों ही समारोहों में देश की कृषि की प्रगति की गाथा देखने–सुनने को मिली। यह जानकर मन बहुत प्रसन्न होता है कि अब हम कृषि के क्षेत्र में न केवल आत्मनिर्भर हैं, बल्कि हम विश्व के अन्य देशों को भी पौष्टिक आहार उपलब्ध करवाने में सक्षम हो रहे हैं। आज कृषि संबंधी तमाम जानकारी हमारी अपनी भाषा हिन्दी में उपलब्ध है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थान, जो अपने–अपने क्षेत्र की पारिस्थितिकी के अनुरूप कृषि अनुसंधान में लगे हैं, अपने शोध से संबंधित बहुत से प्रकाशन निकालते हैं। ये प्रकाशन क्षेत्रीय भाषा में तथा आवश्यकतानुसार देश की राजभाषा हिन्दी में निकाले जाते हैं।

परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा निकाला जाने वाला एक विशेष प्रकाशन ''राजभाषा आलोक'' है, जो परिषद के विभिन्न संस्थानों/केंद्रों में राजभाषा के विभिन्न क्रियाकलापों का सार दर्शाता है। वर्ष 2024 से संबंधित यह अंक (अंक 28) अब प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं राजभाषा आलोक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं तथा आशा करता हूं कि इससे पाठक–गण अवश्य लाभान्वित होंगे।

शुभेच्छु

(भागीरथ चौधरी)

रामनाथ ठाकुर

RAMNATH THAKUR

कृषि एवं किसान कल्याण
राज्य मंत्री
भारत सरकार

Minister of State for
Agriculture & Farmers Welfare
Government Of India

सत्यमेव जयते

संदेश

हमारा देश भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारी संस्कृति की जड़ें खेतों, खलिहानों और मेहनतकश अन्नदाताओं में गहराई से रची–बसी हैं। देश की खाद्य सुरक्षा, आर्थिक सुदृढ़ता और आत्मनिर्भरता का आधार हमारे किसान हैं, जिनके परिश्रम से हमारा देश विकास के मार्ग पर अग्रसर है। हमारे किसान आज केवल अन्नदाता ही नहीं, बल्कि नवाचारकर्ता और उद्यमी के रूप में भी पहचान बना रहे हैं।

वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में अनेक परिवर्तन और नवाचार हो रहे हैं। जलवायु–परिवर्तन, सीमित प्राकृतिक संसाधन और बदलते बाजार की मांगों के बीच हमें टिकाऊ, आधुनिक और लाभकारी खेती की दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। इस दिशा में भारत सरकार अनेक योजनाओं के माध्यम से निरंतर प्रयासशील है।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद "राजभाषा आलोक" नामक पत्रिका के वार्षिक अंक 2024 का प्रकाशन करने जा रहा है। किसी भी सरकारी संगठन में उसकी गतिविधियों से संबंधित पत्रिकाओं का हिंदी में प्रकाशन संघ सरकार की राजभाषा नीति का एक अंग होता है। हर्ष का विषय है कि इस पत्रिका में परिषद मुख्यालय व देशभर में फैले उसके अनुसंधान संस्थानों में न केवल राजभाषा हिंदी संबंधी वर्ष पर्यन्त चलीं गतिविधियों की सम्यक जानकारी है, अपितु नवीनतम वैज्ञानिक अनुसंधानों, तकनीकी उपलब्धियों और उन्नत कृषि पद्धतियों पर हिंदी में सारगर्भित लेख भी हैं।

आज जब भारत आत्मनिर्भरता की दिशा में दृढ़तापूर्वक अग्रसर है, तब कृषि क्षेत्र की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। नवाचार, जैविक खेती, प्राकृतिक कृषि, जल संरक्षण, फसल विविधीकरण और किसानों की आय दोगुनी करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को सफल बनाने के लिए अनुसंधान एवं विस्तार सेवाओं की सहभागिता आवश्यक है। मेरा मानना है कि ये कार्य हिंदी और भारतीय भाषाओं में आसानी से किए जा सकते हैं।

अतः मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी है कि पत्रिका "राजभाषा आलोक" परिषद की गतिविधियों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में उत्तरोतर वृद्धि लाने में एक प्रेरणा पुंज का कार्य करेगी। "राजभाषा आलोक" के सफल प्रकाशन के लिए परिषद के सभी कर्मियों एवं सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं सहित

(रामनाथ ठाकुर)

सत्यमेव जयते

डॉ. एम. एल. जाट
सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप)
Dr M. L. Jat
SECRETARY (DARE) & DIRECTOR GENERAL (ICAR)

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 001
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION (DARE)
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH (ICAR)
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel.: 23382629, 23386711 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

आमुख

मुझे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की हिंदी में प्रकाशित गृह पत्रिका ''राजभाषा आलोक'' के माध्यम से आपके साथ प्रथम संवाद स्थापित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। किसी संगठन में कर्मचारियों से संवाद स्थापित करने के कई माध्यम हैं। इनमें गृह पत्रिकाएं भी एक सशक्त माध्यम होती हैं, जो संगठन में काम करने वाले लोगों को अपनी छिपी हुई साहित्यिक प्रतिभा एवं रचनाधर्मिता को उजागर करने का एक मंच भी प्रदान करती हैं। यह प्रसन्नता का विषय है कि ''राजभाषा आलोक'' विगत कई वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही है और परिषद व उसके अनुसंधान संस्थानों तथा संबद्ध कार्यालयों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों के साथ–साथ कृषि क्षेत्र में हो रहे वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं नवाचारों जैसे तकनीकी विषयों पर हिंदी में प्रकाशित लेखों से भी परिचित करा रही है और इस प्रकार सरकार की राजभाषा नीति की एक अपेक्षा को भी पूर्ण कर रही है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, मत्स्य पालन, कृषि वानिकी तथा कृषक कल्याण आदि से जुड़े अनुसंधानों के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। हमारे वैज्ञानिक जलवायु परिवर्तन, टिकाऊ कृषि प्रणाली, प्राकृतिक खेती, मृदा स्वास्थ्य, फसल विविधीकरण और उन्नत बीज प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट शोध कार्य कर रहे हैं। जहां एक ओर पशुपालन और दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में उन्नत नस्लों का विकास तथा पशु पोषण और रोग नियंत्रण के लिए की जा रही अनुसंधान गतिविधियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना रही हैं, वहीं मत्स्य पालन क्षेत्र में समुद्री एवं मीठे जल की प्रजातियों के संवर्धन, आधुनिक मत्स्य पालन तकनीकों तथा मूल्य संवर्धन की दिशा में किए जा रहे प्रयास खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को नए आयाम दे रहे हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नवाचार आधारित कृषि अनुसंधान को जनभाषा हिंदी में लाकर किसानों, वैज्ञानिकों एवं नीति निर्माताओं के मध्य एक सशक्त संवाद स्थापित करने की दिशा में प्रयासशील है। इस दिशा में हिंदी पत्रिका ''राजभाषा आलोक'' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः यह अपेक्षित है कि हम सभी उत्साह एवं उमंग के साथ परिषद मुख्यालय और उसके अधीन कार्यरत अनुसंधान संस्थानों व सम्बद्ध कार्यालयों में राजभाषा–हिन्दी का अधिकतम प्रयोग करने का हर संभव प्रयास करें तभी ''राजभाषा आलोक'' के प्रकाशन की सार्थकता होगी। मैं इस अंक से जुड़े सभी लेखकों, कार्मिकों और संपादक मण्डल को उनके समर्पित प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देता हूं। आइए, हम सब मिलकर विज्ञान एवं भाषा के सेतु द्वारा आत्म निर्भर एवं विकसित भारत के निर्माण में सहभागी बनें।

''राजभाषा आलोक'' के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं

(एम.एल. जाट)

संजय गर्ग
SANJAY GARG
अपर सचिव, डेयर एवं सचिव, आई.सी.ए.आर.
ADDITIONAL SECRETARY, DARE &
SECRETARY, ICAR

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग
कृषि भवन, नई दिल्ली – 110001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS' WELFARE
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH AND EDUCATION
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI–110001

संदेश

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की गृह–पत्रिका "राजभाषा आलोक'' का नवीनतम अंक प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे संगठन की राजभाषा गतिविधियों का प्रतिबिंब है, बल्कि राजभाषा के प्रति जागरूकता, प्रेरणा और संवाद का एक माध्यम भी है। राजभाषा हिन्दी हमारे राष्ट्र की आत्मा और अभिव्यक्ति की प्रमुख भाषा है। हिन्दी पत्रिका के रूप में प्रस्तुत हमारा यह प्रकाशन हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

हमारे देश की प्रगति में कृषि का स्थान सर्वोपरि है। भारत की आर्थिक संरचना तथा सामाजिक जीवन में कृषि केवल अन्न उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे ग्रामीण विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा आत्मनिर्भरता का भी आधार है। आज जब तकनीकी नवाचारों और वैज्ञानिक शोधों ने कृषि को नई दिशा प्रदान की है, तब यह आवश्यक है कि हम आधुनिक कृषि पद्धतियों और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग पर विशेष ध्यान दें।

इस पत्रिका का प्रकाशन न केवल भाषा और साहित्य के संवर्धन का कार्य करेगा, अपितु परिषद और उसके संस्थानों के पाठकों को विविध प्रकार की जानकारी से भी समृद्ध करेगा। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को प्रेरित करेगी कि वे अपने–अपने कार्यक्षेत्र में नवाचार, परिश्रम और समर्पण के साथ योगदान करें।

मैं "राजभाषा आलोक'' की संपादकीय टीम तथा इसमें सहयोग देने वाले सभी साथियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन के अपने उद्देश्य में सफल होगी और एक सार्थक भूमिका निभाएगी।

शुभकामनाओं सहित।

(संजय गर्ग)

संपादकीय

हिन्दी अनुवाद, राजभाषा कार्यान्वयन और संसदीय सत्र संबंधी दायित्वों के बीच हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन का कार्य आरंभ में बड़ा दुरूह प्रतीत होता है। लेकिन अनुभव बतलाता है कि कोई काम तब तक ही कठिन लगता है, जब तक उसे आरंभ न किया जाए। एक बार जब रेलगाड़ी चल पड़ती है तो फिर सरपट दौड़ने लगती है। परिषद मुख्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा आलोक'' की रेल भी गत 27 अंकों को पार करती हुई 28वें अंक तक आ पहुंची है। इसमें इंजन की जगह महानिदेशक महोदय का सारगर्भित आलेख है जो 2047 के विकसित भारत की ओर भारतीय कृषि के रूपांतरण को चित्रित करता है। रेल के अन्य डिब्बों के रूप में फसल विज्ञान प्रभाग और बागवानी विज्ञान प्रभाग के वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गए आलेख हैं। इस प्रकार कुछ आलेख, कुछ कविताएं मिलकर आलेख का खंड बना है तथा परिषद के विभिन्न संस्थानों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों से मिलकर पत्रिका का राजभाषा खंड तैयार हुआ है।

यह पत्रिका एक छोटा–सा प्रयास है जो परिषद मुख्यालय सहित परिषद के विभिन्न संस्थानों में राजभाषा की गतिविधियों को दर्शाता है। हमारी यह पत्रिका ''राजभाषा आलोक'' राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है। यहां यह उल्लेखनीय है कि परिषद मुख्यालय द्वारा समय–समय पर संघ की राजभाषा नीति से संबंधित दिशा–निर्देशों से अधिकतर संस्थानों/कार्यालयों को अवगत कराया जाता है और संस्थानों द्वारा भेजी जा रही तिमाही प्रगति रिपोर्टों की लगातार समीक्षा की जाती रही है। इन्हीं सब बातों को समेटे हुए ''राजभाषा आलोक'' का यह अंक प्रस्तुत है।

हम प्रकाशनार्थ सामग्री उपलब्ध करवाने वाले संस्थानों/केंद्रों को, विभिन्न आलेखों के लेखकों को और अपनी रचनाएं भेजने वाले रचनाकारों को धन्यवाद देते हैं। इस पत्रिका को मूर्त रूप प्रदान करने में सहयोग देने के लिए हिंदी अनुभाग के सभी अधिकारियों और हमें निरंतर मार्गदर्शन देने के लिए परिषद के महानिदेशक महोदय एवं परिषद के सचिव महोदय के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

— संपादक मंडल

भाकृअनुप
ICAR

राजभाषा आलोक
वार्षिकांक: 2024
(अंक 28)

संरक्षक
डॉ. एम.एल. जाट
सचिव, डेयर एवं महानिदेशक
भाकृअनुप

संपादक मंडल
राम दयाल शर्मा
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

भूपेन्द्र सिंह पर्सवाल
मुख्य तकनीकी अधिकारी

ओम प्रकाश जोशी
मुख्य तकनीकी अधिकारी

सहयोग
चन्द्र प्रभा, उच्च श्रेणी लिपिक
ललित त्रिवेदी, आशुलिपिक
सत्य वीर सिंह,
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर (संविदा)

परामर्श
डॉ. अनुराधा अग्रवाल
परियोजना निदेशक (डीकेएमए)

प्रस्तुति
पुनीत भसीन
प्रभारी, प्रोडक्शन एकक
(डीकेएमए)

अनुक्रमणिका

आलेख एवं कविता खंड पृष्ठ सं.

1. **विकसित भारत 2047 की दिशा में भारतीय कृषि का रूपांतरण: रणनीतियां एवं भावी पथ** 3
एम.एल. जाट

2. **खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में फसल विज्ञान प्रभाग के योगदान की एक झलक** 8
पवन कुमार शर्मा, पार्थ रॉय चौधरी, रेनू, संजीव कुमार झा, ईश्वर सिंह, मनोज कुमार गुप्ता, पूनम जसरोटिया, प्रशांत कुमार दाश, शरत कुमार प्रधान, संजीव गुप्ता, देवेंद्र कुमार यादव

3. **समृद्धि और पोषण सुरक्षा के लिए गौण बागवानी फसलों का महत्व: संभावनाएं एवं प्रयास** 14
संजय कुमार सिंह, प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी, विश्व बंधु पटेल एवं सुधाकर पाण्डेय

4. **भारतीय खाद्य प्रणाली में मशरूम का योगदान** 20
बृज लाल अत्री

5. **कालमेघ की औषधीय उपयोगिता** 24
चन्द्रभानु, वीना यादव, पंकज शर्मा, पुष्पेंद्र प्रताप सिंह, दीपशिखा एवं सुनील कुमार

अस्वीकरण टिप्पणी
इस पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में दी गयी सूचनाएं, डेटा एवं विचार लेखकों के अपने हैं तथा इनमें किसी त्रुटि व चूक के लिए संपादक मंडल जिम्मेवार नहीं है। राजभाषा गतिविधियों से संबंधित सूचनाएं भी विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों द्वारा उपलब्ध करवायी गयी हैं। संपादक मंडल द्वारा केवल सूचनाओं को पत्रिका में समाहित करने के लिए व्यवस्थित किया गया है। इसी तरह कविताओं की मौलिकता का दायित्व भी उनके रचनाकारों का है।
- संपादक मंडल

कविताएं

		पृष्ठ सं.
i.	**कर्णफूल** निशा	26
ii.	**हरियाली की नई कहानी** अमनदीप कौर	27
iii.	**शर्म नहीं आती** संदीप बिश्नोई	28
iv.	**हरा रंग जाने कहाँ से आया है** कमलेश शर्मा	29
v.	**पंख बना रहा हूँ** मोहनीश पंचारिया	30
vi.	**सराहना की भावना** बी.जी. फाल्के	31
vii.	**कुपित द्रोपदी** ऋषभ नारंग	32
viii.	**चोरी का एक दिन** अनुपम कुमार चौबे	33
ix.	**अंगूर की शान और अंगूरी राणी** विट्ठल गायकवाड़	36

राजभाषा खंड

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय एवं परिषद के विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों/ब्यूरो आदि की राजभाषा गतिविधियां 39

आलेख
एवं कविता
खंड

विकसित भारत 2047 की दिशा में भारतीय कृषि का रूपांतरण: रणनीतियां एवं भावी पथ

एम.एल. जाट*

भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि हमारी अर्थव्यवस्था का मेरुदंड है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारतीय कृषि में असाधारण प्रगति हुई है। वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा का सूत्रपात भी कृषि क्षेत्र से ही हुआ है। यहां की ऋतुएं एवं विविधताओं से भरा मौसम हर प्रकार की खेती करने में मददगार है। किसान हमारे अन्नदाता हैं, उनके द्वारा उत्पन्न अन्न से ही समस्त प्राणियों का भरण पोषण होता है, इसलिए हम सब का यह नैतिक कर्तव्य है कि भारत के एक प्रमुख पोषण प्रहरी किसान की खुशहाली के लिए हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

देश की कृषि प्रगति में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का अमूल्य योगदान है। आज विश्व स्तर पर, चावल (वर्ष 2024–25 में 149.1 मिलियन टन) के मामले में भारत का प्रथम और गेहूं (117.3 मिलियन टन) तथा बागबानी उत्पादन (367.72 मिलियन टन) में द्वितीय स्थान है। जहां हरित क्रांति काल में खाद्यान्न उत्पादन में वार्षिक वृद्धि मात्र 4.1 मिलियन टन अर्जित की गई थी वहीं वर्ष 2014–15 से 2024–25 की अवधि के दौरान जलवायु परिवर्तन एवं अन्य विषम परिस्थितियों के बावजूद वार्षिक वृद्धि बढ़कर 8.1 मिलियन टन तक पहुंच गई जो खेती में नवाचारों द्वारा ही संभव हो सका।

देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन बढ़कर 354 मिलियन टन के रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच गया है। खाद्यान्न की तरह ही बागवानी क्षेत्र ने भी 7.5 मिलियन टन की वार्षिक वृद्धि के साथ रिकार्ड उत्पादन हासिल किया है। मशीनीकरण सहित फसल उत्पादन और फसल सुरक्षा प्रौद्योगिकियों के साथ उपयुक्त किस्मों के प्रयोग से वर्ष 1950 के बाद से खाद्यान्न (6.54 गुणा), दलहन (2.88 गुणा), तिलहन (7.69 गुणा), कपास (10.63 गुणा) तथा गन्ना (7.94 गुणा) का उत्पादन उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है।

देश ने टिकाऊ आधार पर जलवायु–अनुकूल एवं पोषण सुरक्षा हेतु श्रीअन्न एवं दलहन को प्राथमिकता दी है। श्रीअन्न के उत्पादन, मूल्यवर्धन तथा मार्केटिंग को सहयोग करने के लिए वैश्विक श्रीअन्न उत्कृष्टता केंद्र – मिलेट्स एंड अदर एनसिएंट ग्रेन्स इंटरनेशनल रिसर्च इनिशिएटिव (MAHARISHI) की भी स्थापना की जा रही है।

वैश्विक श्रीअन्न अनुसंधान उत्कृष्टता केंद्र का शिलान्यास समारोह

पिछले छः दशकों से कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय प्रगति और सिंचाई तथा बुनियादी सुविधा (यथा सड़क, बिजली तथा बाजार) में निवेश, अनुसंधान संस्थानों की स्थापना, क्रेडिट एवं विस्तार सेवाओं की डिलीवरी एवं प्रोत्साहन (यथा इनपुट, रियायत तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य) के परिणामस्वरूप भारत की कृषि खाद्य प्रणाली में उल्लेखनीय रूपांतरण आया है। हालांकि, ऐसे कुछ प्रोत्साहन रहे जिन्होंने देश को कई खाद्य और गैर–खाद्य वस्तुओं में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया लेकिन प्रोत्साहन के कई अवयव, अनेक कारकों के कारण सतत विकास के लिए सहायक नहीं रहे हैं। उदाहरणार्थ लंबे समय से भरपूर नीतिगत समर्थन प्राप्त फसलों यथा चावल, गेहूँ और गन्ना से अब कृषि विकास में योगदान मिलना कम हो गया है।

*सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर), भारत सरकार एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

वर्तमान परिवेश में हमारी कृषि खाद्य प्रणाली को अनेक महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भूजल संसाधनों में कमी, मृदा स्वास्थ्य में गिरावट, जैव–विविधता का नुकसान एवं पर्यावरणीय अपघटन आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त सीमांत कृषि जोत (≤1 हेक्टेयर) 51 प्रतिशत से बढ़कर 68 प्रतिशत हो गई है और औसत खेत आकार 2.25 हेक्टेयर से घटकर 1.08 हेक्टेयर रह गया है। पूर्वानुमान हमें यह चेतावनी देते हैं कि वर्ष 2047 तक औसत कृषि जोत मात्र 0.60 हेक्टेयर तक सीमित हो जाएगी जो कि छोटी जोत वाले किसानों की आर्थिक व्यवहार्यता के लिए गहरा संकट है। साथ ही कृषि एवं कृषि आधारित आजीविका के लिए जलवायु–परिवर्तन एक प्रमुख खतरे के रूप में उभरा है।

वर्तमान एवं उभरती चुनौतियों की प्रकृति को देखते हुए खाद्य, भूमि और जल प्रणाली का रूपांतरण करना जरूरी हो गया है ताकि सुरक्षित एवं पौष्टिक खाद्य की पहुंच आम जन तक सुनिश्चित की जा सके, टिकाऊ खपत को बढ़ावा दिया जा सके, पर्यावरण अनुकूल उत्पादन को प्रोत्साहित किया जा सके, दबाव के प्रति अनुकूलता को मजबूत किया जा सके और मूल्य श्रृंखला के बीच समान आजीविका को सहयोग दिया जा सके।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद हमारी राष्ट्रीय आकांक्षा स्पष्ट है कि वर्ष 2047 तक भारत एक विकसित, समावेशी और आत्मनिर्भर राष्ट्र का कीर्तिमान स्थापित करे तथा कृषि खाद्य प्रणाली इस विजन के हृदय में अवस्थित हो।

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार की अध्यक्षता में विकसित भारत में कृषि की भूमिका पर संगोष्ठी एवं गहन विचार–विमर्श

विकसित भारत 2047 को साकार करने के लिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी कृषि और सम्बद्ध क्षेत्र प्रति वर्ष कम से कम 6 प्रतिशत की दर से आगे बढ़े और राष्ट्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मेरुदंड बने। पिछले दशक (2014–2023) में जहां कुल सकल घरेलू उत्पाद 5.9 प्रतिशत की दर पर आगे बढ़ा, वहीं कृषि क्षेत्र मात्र 3.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज कर पाया।

अतः वर्ष 2047 तक विकसित भारत की ओर हमारी यात्रा को आधार प्रदान करने वाले कुछ रणनीतिक स्तंभ हैं जैसे कि–नए विज्ञान और नवाचार पर आधारित स्तंभ, उद्यमशीलता द्वारा बढ़ाया गया स्तर और साझेदारी के माध्यम से बनाए रखा गया स्तंभ। इन सभी पर संक्षिप्त विवरण निम्नवत हैः

- **अंतर-विषयी दृष्टिकोण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अनुसंधान को प्राथमिकता देनाः** भारत की राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) ने राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा में अभूतपूर्व योगदान दिया है। हालांकि, हमेशा से उत्पादन केंद्रित अनुसंधान पर फोकस बना रहा। परंतु उभरते व्यापक रुझानों, सीमित संसाधनों और अनेक दशकों से सृजित मौजूदा समृद्ध डेटा एवं सूचना के साथ अंतर–विषयी दृष्टिकोण पर फोकस करते हुए अनुसंधान प्राथमिकता पर मजबूत कार्य करना जरूरी हो गया है ताकि मांग चालित और संदर्भ से जुड़े अनुसंधान परिणामों का सृजन किया जा सके। इसलिए, बेहतर परिणामों के लिए अधिक तालमेल के साथ संसाधनों का अनुकूलन करने के लिए विभिन्न अंतर–विषयी स्तरों (देश, राज्य और संस्थान) पर उभरते विज्ञान {कृत्रिम मेधा (AI), मशीन लर्निंग (ML), क्वांटम कम्प्यूटिंग, खाद्य प्रणाली दृष्टिकोण आदि} को शामिल करते हुए अनुसंधान को महत्व देना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।
- **सुदृढ़ डेटा इकोसिस्टम विकसित करनाः** राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के अंतर्गत पिछले 60 वर्षों के दौरान कृषि अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं पर बड़ी मात्रा में आँकड़ों का सृजन किया गया है। विकास के लिए यह आँकड़ा कृषि अनुसंधान के भविष्य को सही आकार देने वाला एक खजाना है। विश्व स्तर पर अर्थशास्त्र के सभी क्षेत्रों में आँकड़ो को सूचित निर्णयों के लिए सबसे मजबूत संसाधन माना जाता है। कृषि क्षेत्र

न केवल इसके आँकड़ों का उपयोगकर्ता है वरन सूचित निर्णयों के लिए अन्य क्षेत्रों (पर्यावरण, उर्वरक, जल तथा ग्रामीण विकास आदि) के लिए योगदान करने वाला भी है। इसलिए, राष्ट्रीय स्तर पर एक एकीकृत एवं मजबूत कृषि आंकड़ा इकोसिस्टम का विकास करना डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी सुविधा के भारतीय विजन, त्वरित, सरल तथा सस्ते अनुसंधान परिणामों और डिलिवरी के लिए कृत्रिम मेधा, क्वांटम कम्प्यूटिंग आदि जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का वास्तविक जीवन में उपयोग करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह आँकड़ों पर आधारित इकोसिस्टम कृषि क्षेत्र में चार अनिवार्य D's (डिमांड, डेटा, डिजिटल एवं डिलिवरी) को मजबूत बनाने में मदद करेगा।

- **इको-रीजनल स्तर पर प्रणाली केंद्रित अनुसंधानः** कृषि क्षेत्र में जटिल चुनौतियां हैं और इसलिए इनका समाधान खण्ड–खण्ड में किए गए अनुसंधान के परिणामों से नहीं किया जा सकता है। अतः प्रणालीबद्ध तरीके से समाधान करने की आवश्यकता है। क्योंकि किसान के पास खेती करने की अपनी एक प्रणाली है अतः हमारे द्वारा किए जा रहे अनुसंधान के परिणाम किसान की प्रणाली में फिट होने चाहिए। इसमें परिषद की अनुसंधान डिजाइन में अंतर–विषयी, अंतर–संस्थान के साथ 'प्रणाली केंद्रित अनुसंधान' की जरूरत अनिवार्य रूप से है। इससे अनुसंधान परिणामों की अनुकूलता और स्वीकार्यता को बढ़ाने के लिए पर्यावरण–क्षेत्र–विशिष्ट अनुसंधान परिणाम विकसित करने में मदद मिलेगी।
- **भविष्य के लिए प्रजननः** यह देश सतत कृषि विकास के लिए नवीन प्रबंधन दृष्टिकोण (प्राकृतिक खेती, जैविक कृषि, पुनर्जनन कृषि, अंतर–फसलचक्र आदि) पर भी कार्य कर रहा है। हालांकि, प्रजनन के तहत अभी भी मुख्य तौर पर पारंपरिक कृषि पद्धतियों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। भारत में जननद्रव्य के खजाने वाला सबसे बड़ा जीन बैंक है, जिसका उपयोग सस्यविज्ञान प्रबंधन प्रतिमानों को पूरा करने हेतु प्रजनन कार्यक्रमों में किया जाना चाहिए। इसमें जीन बैंकों के साथ सामंजस्य बनाते हुए समर्पित प्रजनन–पूर्व कार्यक्रमों के विधिवत आयोजन की आवश्यकता है। जीन बैंकों को और अधिक मजबूत बनाने के लिए भारत सरकार ने पहले ही वर्ष 2025–26 के बजट में दूसरा जीन बैंक स्थापित करने के लिए बजट का आबंटन कर दिया है। इससे भविष्य के लिए प्रजनन कार्यक्रमों को मजबूती प्रदान करने का उत्कृष्ट अवसर मिलेगा।
- **वैज्ञानिक विधि प्रतिपादनः** ज्ञान और प्रौद्योगिकियों की तीव्र, वास्तविक समय और सटीक डिलीवरी तथा उन्हें अपनाने के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित क्लासिकल और रैखिक विस्तार प्रणाली से परे नए दृष्टिकोण को आजमाने की आवश्यकता है। इसलिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विस्तार प्रभाग को अंतर्दृष्टि, लक्ष्य, व्यवसाय मॉडल, मूल्य–श्रृंखलाओं, बाजारों, व्यवहार विज्ञान आदि पर नए कौशल/विशेषज्ञता के साथ मजबूत बनाए जाने की जरूरत है। हमारी विस्तार प्रणाली को व्यापक रूप से उत्पादन केंद्रित दृष्टिकोण के साथ विकसित किया गया था परंतु वर्तमान परिवेश में उत्पादन एक समस्या नहीं है वरन 'उत्पादन से पहले एवं उत्पादन के उपरांत' कई प्रकार की चुनौतियां हैं। इसमें सरल विस्तार की अपेक्षा 'विस्तार में अनुसंधान' के लिए नवीन कौशल/विशेषज्ञता/दृष्टिकोण/टूल्स की जरूरत है। उच्च गुणवत्ता वाले गैर–कृषि विश्वविद्यालयों के समाज विज्ञान एवं मानव विज्ञान से जुड़े अनुसंधानकर्मियों के साथ सक्रिय सहयोग/संपर्क बनाकर इसका आंशिक समाधान किया जा सकता है। सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के संगठनों को शामिल करते हुए एक मजबूत और संदर्भ से जुड़ा डिजिटल विस्तार करना एक प्रभावी कदम होगा।
- **गुणवत्तायुक्त मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली द्वारा जीवंत परिषद का बहुमुखी विकासः** 21वीं सदी के दूसरे दशक के अंतिम वर्षों में भारतीय कृषि में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। यह बदलाव मुख्यतः संसाधन–आधारित दृष्टिकोण से विज्ञान–आधारित प्रणाली की ओर था। अत्याधुनिक अनुसंधान एवं विकास द्वारा संचालित इस परिवर्तन के लिए ऐसे बहु–कुशल मानव संसाधनों की आवश्यकता है जो उन्नत, प्रौद्योगिकी–समर्थित और बाजार–उन्मुख कृषि को बढ़ावा दे सकें। ऐसे परिदृश्य में

अनुसंधान कार्यक्रमों को लागू करने और उन्हें समुन्नत बनाने, प्रौद्योगिकियों का विकास करने, चुनौतियों का सामना करने और अवसरों का सदुपयोग करने के लिए संस्थागत व्यवस्था विकसित करने हेतु गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन विकास एक अनिवार्य आवश्यकता है।

कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अग्रणी क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में कुशल मानव शक्ति की कमी कृषि में खुशहाली हासिल करने के लिए जमीनी स्तर पर परिणाम देने में और साथ ही कृषि क्षेत्र में वांछित प्रगति दर को आगे ले जाने में एक प्रमुख बाधा है। शिक्षा में निवेश और गरीबी उन्मूलन के बीच एक सीधा संबंध है, क्योंकि इससे कृषि उत्पादकता और लाभप्रदता को टिकाऊ बनाए रखने में मदद मिलती है। युवाओं को ऐसे बदलावों से निपटने के लिए बेहतर ढंग से तैयार करना चुनौती है। आज की युवा आबादी नए तकनीकी बदलावों के साथ तालमेल बिठाने में सक्षम है। उनके द्वारा नई तकनीकों को अपनाने की सफलता, सूचना तक समान पहुँच पर निर्भर करती है ताकि वे इन नए विकास के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ कार्य कर सकें।

इस नए वातावरण में सफलता के लिए कौशल (Skill), कौशल उन्नयन (Upskill) तथा पुनः कौशलीकरण (Reskill) को अपनाया जाए। सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकर्षित करने में व्यापक और सक्रिय भूमिका निभाई जाए। इसके लिए छात्रों के समग्र विकास, प्रगति और रोजगार के लिए कॉलेजों में उन्हें उचित वातावरण और सुविधाएं प्रदान की जाएं। राज्यों द्वारा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को कहीं अधिक धन राशि प्रदान की जाए ताकि इस क्षेत्र में नई चुनौतियों का सामना करने के लिए छात्रों को बेहतर रूप से सुसज्जित करने हेतु बुनियादी सुविधाओं एवं सेवा सुविधाओं को आधुनिक बनाया जा सके और उन्हें मजबूती प्रदान की जा सके। जैसे कि पूर्व में भी उल्लेख किया गया है कि विकसित भारत के लिए कृषि क्षेत्र में 6 प्रतिशत या उससे ज्यादा की वृद्धि बुनियादी जरूरत है अतः शोध, शिक्षा एवं प्रसार के लिए संसाधनों की कमी दूर की जानी चाहिए।

- **कृषि अनुसंधान, शिक्षा तथा विस्तार में लैंगिक एवं सामाजिक समावेशनः** कृषि क्षेत्र में तेजी से प्रगति करने हेतु लैंगिक (महिलाओं) और सामाजिक समावेशन पर कहीं अधिक ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। महिलाओं की कृषि कार्य संबंधित निर्णय लेने में सक्रिय भूमिका, ग्रामीण परिवेश की खुशहाली एवं समृद्धि के लिए नितांत आवश्यक है। परम्परागत कृषि में महिलाओं का बहुत अधिक श्रम लगता है। अतः विभिन्न नवाचारों का उपयोग करते हुए

कृषि क्षेत्र में मानव संसाधन विकास

हमारा लक्ष्यः महिलाओं द्वारा किए जा रहे शारीरिक श्रम में कमी लाना

महिलाओं के इस बोझ को कम किया जाना भी आवश्यक है।

परिषद द्वारा विकसित की गई प्रदर्शन इकाइयों का महिलाओं द्वारा ज्ञानवर्धक दौरे अधिक से अधिक आयोजित किए जाने चाहिए ताकि महिलाओं में उन्नत कृषि के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सके।

- **देश के लक्ष्यों, संस्थागत लक्ष्यों और व्यक्तिगत लक्ष्यों को जोड़कर आउटपुट बढ़ाने के लिए दक्षता और जवाबदेही में सुधार लाने हेतु संस्थागत सुधारः** देश के स्तर पर उच्च स्तरीय परिणामों के साथ सामंजस्य रखते हुए अनुसंधान प्राथमिकता को जोड़कर एक फ्रेमवर्क का विकास करके राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में सुधार करने की जरूरत है ताकि संस्थागत एवं व्यक्तिगत परिणामों में दोहरेपन से बचा जा सके, संगठनात्मक परिणामों की दिशा में प्रगति का मूल्यांकन किया जा सके और राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) की समग्र प्रभावशीलता और उत्पादकता हेतु प्रदर्शन आधारित पुरस्कारों की संस्कृति का सृजन किया जा सके।
- **व्यापक भागीदारी एवं व्यवसाय योग्य योजना का विकासः** राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) को एक मजबूत कार्रवाई उन्मुख व्यवसाय योजनाएं बनाने की जरूरत है जिनमें संसाधन गतिशीलता और वांछित डिलीवरी शामिल हो। इसमें पारम्परिक भागीदारी परिदृश्य से आगे जाकर भागीदारी नेटवर्क को मजबूत बनाने की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होगी।
- **विकास के लिए कृषि अनुसंधान में निवेश में वृद्धिः** जैसा कि हम वर्तमान में अनुसंधान पर सकल घरेलू उत्पाद का मात्र 0.43% ही खर्च कर रहे हैं और विस्तार के मामले में तो यह और भी कम (0.095%) है। इससे स्पष्ट रूप से यह पता चलता है कि 0.93% के वैश्विक औसत की तुलना में भारत में अनुसंधान एवं विस्तार पर बहुत कम खर्च किया जा रहा है। अतः अनुसंधान, शिक्षा तथा विस्तार को मजबूती प्रदान करने और विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमें कृषि में अनुसंधान एवं प्रसार पर होने वाले निवेश को कृषि आधारित सकल घरेलू उत्पाद का कम से कम एक प्रतिशत तक बढ़ाए जाने की तत्काल आवश्यकता है।

महिलाओं द्वारा शुष्क क्षेत्र में मोठबीन फसल की उन्नत खेती की प्रदर्शन इकाइयों का ज्ञानवर्धक दौरा

अन्ततः विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए हमें अपने काम में दूरदर्शिता रखने के साथ–साथ नवाचारों को सतत रूप में विकसित करना होगा जैसा कि महात्मा गांधी ने हमें सिखाया था कि, यह भूल जाना कि धरती को कैसे खोदा जाए व मिट्टी की देखभाल कैसे की जाए स्वयं को भूल जाने जैसा है। यह सीख हमें जमीन से जुड़े रहने और हमारे अन्नदाताओं के प्रति सचेत रहने में मदद करती है।

खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में फसल विज्ञान प्रभाग के योगदान की एक झलक

पवन कुमार शर्मा*, पार्थ रॉय चौधरी*, रेणु*, संजीव कुमार झा*, ईश्वर सिंह*, मनोज कुमार गुप्ता**, पूनम जसरोटिया***, प्रशांत कुमार दाश***, शरत कुमार प्रधान***, संजीव गुप्ता***, देवेंद्र कुमार यादव****

ब्रिटिश सरकार ने भारत में लॉर्ड लिनलिथगो की अध्यक्षता में रॉयल कमीशन ऑन एग्रीकल्चर (1926–1928) स्थापित किया। इस आयोग ने भारत में कृषि अनुसंधान की देखरेख और समन्वय के लिए एक केंद्रीय निकाय की स्थापना की सिफारिश की। इस सिफारिश के आधार पर सरकार ने 16 जुलाई 1929 को ईमपीरियल कृषि अनुसंधान परिषद की स्थापना की, जिसका नाम 1946 में बदलकर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) कर दिया गया। परिषद के अंतर्गत 8 प्रभाग (फसल विज्ञान, बागवानी विज्ञान, प्राकृतिक संसाधन, कृषि अभियांत्रिकी, पशु विज्ञान, मत्स्य विज्ञान, कृषि शिक्षा और कृषि विस्तार) कार्यरत हैं। फसल विज्ञान प्रभाग, आईसीएआर का एक प्रमुख प्रभाग है, जो विभिन्न फसलों जैसे अनाज, दलहन, खाद्यान्न, तिलहन, वाणिज्यिक, चारा एवं संभावना फसलों के क्षेत्र में अनुसंधान, विकास और नवाचार के लिए जिम्मेदार है। 1950 से 1980 के दशक तक विशेष फसल आधारित अनुसंधान संस्थानों और अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं (एआइसीआरपी) की शुरुआत की गई। इन परियोजनाओं द्वारा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और आईसीएआर संस्थानों को एकीकृत फसल–विशिष्ट कार्यक्रमों के तहत एक साथ लाया गया। फसल विज्ञान प्रभाग मुख्य रूप से फसल सुधार, आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन, बीज तकनीक, फसल उत्पादन अनुसंधान कार्य समन्वित करता है।

फसल विज्ञान प्रभाग ''स्थायी खाद्य, पोषण और आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु नवीन तकनीकों और किस्मों/उत्पादों के विकास हेतु विज्ञान–आधारित ज्ञान सृजन'' के दृष्टिकोण पर कार्य कर रहा है। यह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) का सबसे बड़ा प्रभाग है जो अपने 28 संस्थानों एक समविश्वविद्यालय (IARI), 24 राष्ट्रीय संस्थान, तीन ब्यूरो (पादप, कीट और सूक्ष्मजीव), 26 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं (AICRPs) और अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजनाओं (AINPs) तथा नौ अन्य परियोजनाओं के माध्यम से उच्च उपज वाली फसल किस्मों और उनके उत्पादन एवं संरक्षण तकनीकों के विकास हेतु अनुसंधान कार्यक्रम चलाता है। प्रभाग का नेतृत्व उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) करते हैं और फसल विज्ञान प्रभाग के अंतर्गत पाँच अनुभाग, पाँच सहायक महानिदेशकों और पाँच प्रधान वैज्ञानिकों द्वारा समर्थित हैं।

आईसीएआर की योजना "खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए फसल विज्ञान" प्रभाग की वृहत योजना है, जिसे छह प्रमुख योजनाओं में वर्गीकृत किया गया है, अर्थात् (1) बुनियादी और रणनीतिक अनुसंधान और शिक्षा, (2) पादप आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन, बीज और पहाड़ी कृषि, (3) खाद्य और चारा फसलों के लिए आनुवंशिक सुधार, (4) दलहन और तिलहन फसल सुधार, (5) आनुवंशिक लाभ के लिए वाणिज्यिक फसलों में सुधार और (6) कीट और सूक्ष्मजीव संसाधन, पौध संरक्षण और परागण अनुसंधान। प्रभाग में 2076 वैज्ञानिकों, 1990 तकनीकी, 1384 प्रशासनिक और 1556 सहायक कर्मचारियों की स्वीकृत शक्ति है। एआईसीआरपी/एआईएनपी के 48 राज्य/केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालयों में लगभग 670 केंद्र हैं। फसल विज्ञान प्रभाग एनएआरएस सहयोगियों के साथ मिलकर 85 फसलों पर अनुसंधान कार्य कर रहा है।

* प्रधान वैज्ञानिक, फसल विज्ञान संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
** मुख्य तकनीकी अधिकारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
*** सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
**** उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

मुख्य कार्य और उपलब्धियाँ

किसानों के प्रयासों और उन्नत तकनीकों के समावेश–जैसे कि बीज श्रृंखला में जलवायु–अनुकूल किस्मों को शामिल करना और उन्हें किसानों तक उपलब्ध कराना–के परिणामस्वरूप खाद्य उत्पादन पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा है, जो निम्नलिखित है:

- टिकाऊ और स्थिर उत्पादन के लिए उच्च उपज देने वाली जलवायु–अनुकूल किस्में: कुल 3053 प्रकार की कृषि फसलें, जिनमें अनाज की 1454, तिलहन की 432, दलहन की 467, चारा की 194, रेशे की 383, गन्ने की 90 और अन्य फसलों की 33 किस्में शामिल हैं, जिनमें से 2813 किस्में जलवायु–अनुकूल हैं।
- उन्नत किस्मों को अपनाने से 1950–51 से अब तक खाद्यान्न उत्पादन में 7 गुना, तिलहन में 8 गुना, कपास में 10 गुना और गन्ने में 8.6 गुना वृद्धि हुई है।
- खाद्य अनाज का अब तक का सबसे अधिक उत्पादन, जिसका कुल अनुमानित उत्पादन 353.96 मिलियन टन (2024–25) है, जो 2014–15 (252.02 मिलियन टन) की तुलना में 44% अधिक है।
- चावल का अब तक का सबसे अधिक रिकॉर्ड उत्पादन 149.07 मिलियन टन (2024–25) रहा, जो 2014–15 (105.48 मिलियन टन) की तुलना में 41% वृद्धि दर्शाता है।
- इसी तरह, गेहूं का भी अब तक का सबसे अधिक रिकॉर्ड उत्पादन 117.50 मिलियन टन (2024–25) हुआ, जो 2014–15 (86.53 मिलियन टन) के मुकाबले 35% से अधिक बढ़ा है।
- मक्का का उत्पादन भी 42.28 मिलियन टन (2024–25) के अब तक के सबसे उच्च स्तर पर पहुंचा, जो 2014–15 (24.17 मिलियन टन) की तुलना में लगभग 75% की रिकॉर्ड वृद्धि है।
- तिलहन का अब तक का सबसे अधिक उत्पादन 42.60 मिलियन टन (2024–25) अनुमानित है, जो 2014–15 (27.51 मिलियन टन) से 55% से अधिक है। यह तिलहन क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।
- प्रमुख तिलहन फसलों जैसे सोयाबीन (15.18 मिलियन टन, अब तक का सबसे अधिक), सरसों (12.60 मिलियन टन) और मूँगफली (11.90 मिलियन टन, अब तक का सबसे अधिक) ने रिकॉर्ड दर्ज किए हैं। देश ने खाद्य अनाज उत्पादन में निरंतर प्रगति की है, जो मुख्य रूप से उत्पादकता में वृद्धि के कारण संभव हुई है। उपयुक्त किस्मों के साथ–साथ फसल उत्पादन और संरक्षण तकनीकों के उपयोग से 1950 से खाद्य अनाज (6.54 गुना), दलहनी फसलें (2.88 गुना), तिलहन (7.69 गुना), कपास (10.63 गुना) और गन्ना (7.94 गुना) का उत्पादन बढ़ा है। इसके अलावा, खराब मौसम जैसे सूखा, असमय वर्षा और उच्च तापमान के बावजूद, देश के कई हिस्सों में चार लगातार वर्षों (2021–22–315.62 मिलियन टन, 2022–23–329.69 मिलियन टन, 2023–24–332.23 मिलियन टन, 2024–25–353.96 मिलियन टन) के दौरान फसल उत्पादन में वृद्धि का रुझान देखा गया है।
- कुपोषण की गंभीर समस्या से निपटने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा जैव–संवर्धित (बायोफोर्टिफाइड) किस्मों का विकास एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और पिछले ग्यारह वर्षों (2014 से 2025) की अवधि में परिषद द्वारा कुल 170 जैव–संवर्धित (बायो–फोर्टिफाइड) फसल किस्मों का विकास किया गया है, जो देश में पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इनमें सबसे अधिक 73 गेहूं, 32 मक्का, 15 धान, 13 बाजरा, 2 कुटकी, 9 सरसों, 8 सोयाबीन, 7 रागी, 3–3 मसूर और मूंगफली, 1–1 जौ, कंगनी, चना, अलसी और फाबाबीन की किस्में शामिल हैं। इन किस्मों को विशेष रूप से पोषक तत्वों से समृद्ध किया गया है, जिससे न केवल उपज बढ़ी है बल्कि जनसामान्य के स्वास्थ्य को भी लाभ पहुंचा है। यह उपलब्धि भारतीय कृषि में गुणवत्ता और पोषण दोनों को प्राथमिकता देने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

फसल किस्मों का विकास, विमोचन और अधिसूचना

फसल किस्मों का विकास, विमोचन और अधिसूचना खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, कृषि उत्पादकता बढ़ाने और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से नई किस्मों का विकास इस प्रकार किया जाता है कि वे अधिक उपज देने वाली, कीट और

रोग प्रतिरोधी तथा विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल हों। परीक्षण और स्वीकृति के बाद, इन किस्मों का औपचारिक विमोचन और अधिसूचना उन्हें बड़े पैमाने पर खेती के लिए उपलब्ध कराती है, जिससे किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज सुलभ हो पाते हैं और उनकी आजीविका में सुधार होता है। पिछले ग्यारह वर्षों (2014–2025) के दौरान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा व्यवस्था ने कुल 3053 किस्मों का विकास, किया हैं तथा इनकी अधिसूचना जारी की गई है जिनमें अनाज की 1454, तिलहन की 432, दलहन की 467, चारा की 194, रेशे की 383, गन्ने की 90 और अन्य फसलों की 33 किस्में शामिल हैं, जिनमें से 2813 (92%) किस्मों में एक या एक से अधिक जैविक/या अजैविक दबाओं के प्रति जलवायु–लचीलापन के गुण उपलब्ध हैं। इन 2813 किस्मों में से 1064 किस्मों का अनुमोदन बारानी क्षत्रों के लिए ही किया गया है।

विभिन्न फसलों की अत्यधिक कम जल आवश्यकता वाली किस्में

कम जल–खपत वाली फसलों को बढ़ावा देना टिकाऊ कृषि के लिए अत्यंत आवश्यक है, विशेष रूप से जल–संकट वाले क्षेत्रों में। इन फसलों को कम सिंचाई की आवश्यकता होती है, जिससे जल संसाधनों का संरक्षण होता है और भूजल पर दबाव कम पड़ता है। जलवायु परिवर्तन और बढ़ते सूखे की स्थितियों में ऐसी फसलें विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती हैं। पिछले ग्यारह वर्षों (2014–2025) के दौरान विकसित 3053 किस्मों में 328 किस्में सूखा सहिष्णु हैं। इनमें से 195 किस्में अनाज की हैं, जिनमें 103 धान, 30 गेहूं, 22 मक्का, 9 ज्वार, 13 बाजरा, 3 कुटकी, 5 कोदो, 1–1 साँवा और कँगनी, तथा 8 रागी की शामिल हैं। तिलहन की 25 किस्में हैं, जिनमें 5 सोयाबीन, 6 मूँगफली, 2–2 तिल और तोरिया, 1–1 रामतिल, तरामीरा और अलसी, तथा 7 भारतीय राई की किस्में हैं। दलहन की 43 किस्में हैं, जिनमें 4 उड़द, 2–2 मूंगबीन, कुलथी, मोठबीन और मसूर, 3 लोबिया, 14 अरहर, 9 चना, और 1–1 ग्वार, फाबाबीन, राजमा, खेसारी और विंग्डबीन शामिल हैं। रेशा फसलों की 14 किस्में हैं, जिनमें 11 कपास, 1 जूट और 2 मेस्ता की किस्में शामिल हैं। चारा फसलों की 16 किस्में हैं, जिनमें 3 चारा बाजरा, 2–2 चारा ज्वार और चावल की बीन, 1–1 चारा मक्का, चारा लोबिया, नेपियर बाजरा हाइब्रिड, फेस्क्यू घास, मार्वल घास, अंजन घास, चारा सेवन घास, गिनी घास और सेटरिया घास शामिल हैं। गन्ने की 33 किस्में, और अन्य फसलों की 2 किस्में हैं, जिनमें 1–1 कालिंगडा और अमरंथस शामिल हैं।

दुनिया की पहली दो जीनोम संपादित धान की किस्मों का विकास

डीआरआर धान 100 (कमला): सांबा महसुरी (बीपीटी 5204) की उच्च उपज वाली उत्परिवर्ती (म्यूटेंट) किस्म

भाकृअनुप – भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने जीनोम संपादन द्वारा धान की लोकप्रिय किस्म सांबा महसुरी में दानों की संख्या में बढ़ोतरी की है, जिससे जीनोम संपादित किस्म डीआरआर धान 100 ने सांबा महसुरी (मूल प्रजाति) की तुलना में 19% अधिक उपज दी और दानों तथा पकाने की गुणवत्ता भी मूल किस्म के समान ही बनी रही।

यह किस्म लगभग 130 दिनों में पक जाती है, जो सांबा महसुरी से 15–20 दिन जल्दी है। इसकी जल्दी पकने की विशेषता जल एवं उर्वरक की बचत करती है और मीथेन उत्सर्जन को भी कम करती है। इसका मजबूत तना (कलम) इसे गिरने से बचाता है।

यह किस्म आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, पुडुचेरी, केरल (जोन VII), छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश (जोन V), ओडिशा, झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, और पश्चिम बंगाल (जोन III) राज्यों के लिए विकसित की गई है।

पूसा डीएसटी राइस 1: एमटीयू 1010 की सूखा और लवण सहिष्णुता के प्रति उत्परिवर्ती (म्यूटेंट) किस्म

भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने धान की पतले दाने वाली मुख्य किस्म एमटीयू 1010 को सूखा और लवण सहिष्णुता (DST) प्रतिरोधिता के लिए जीनोम संपादन द्वारा विकसित किया है, जिसने लवणीयत के दबाव में मूल किस्म एमटीयू 1010 (3199 किग्रा/हेक्टेयर) की तुलना में औसतन 9.66% अधिक उपज (3508 किग्रा/हेक्टेयर) दी है।

क्षारीय स्थिति में भी इस किस्म ने एमटीयू 1010 (3254 किग्रा/हेक्टेयर) की तुलना में औसतन 14.66% अधिक उपज (3731 किग्रा/हेक्टेयर) दी है।

यह किस्म आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, पुडुचेरी, केरल (जोन VII), छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश (जोन V), ओडिशा, झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल (जोन III) राज्यों के लिए विकसित की गई है।

प्रजनक बीज उत्पादन

प्रजनक बीज उत्पादन संपूर्ण बीज उत्पादन श्रृंखला की आधारशिला है। यह नवीन विकसित फसल किस्मों की आनुवंशिक शुद्धता और गुणवत्ता सुनिश्चित करता है। वैज्ञानिक निगरानी में उत्पादित प्रजनक बीजों का उपयोग आधार और प्रमाणित बीजों के उत्पादन के लिए किया जाता है, जो अंततः किसानों तक पहुँचते हैं। आईसीएआर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग से प्राप्त मांग के अनुसार किस्मों के प्रजनक बीज उत्पादन करता है, ताकि विभिन्न बीज एजेंसियों/निजी कंपनियों द्वारा आगे आधार बीज एवं प्रमाणित बीज का उत्पादन किया जा सके और इनका वितरण किसानों को किया जा सके।

बीज (फसलों) पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत, पिछले पाँच वर्षों (2020–21 से 2024–25) के दौरान कुल 5,43,638.8 क्विंटल प्रजनक बीज का उत्पादन किया गया, जो कुल मांग 3,86,248.4 क्विंटल से काफी अधिक है। अनाजों का अधिक योगदान रहा, जिनका उत्पादन 3,04,244.2 क्विंटल था, जबकि मांग 1,96,226.7 क्विंटल थी। इसके बाद तिलहनों का स्थान रहा, जिनका उत्पादन 1,54,526.3 क्विंटल रहा, जबकि मांग 1,22,105.0 क्विंटल प्रजनक बीज की ही थी। दलहनों में प्रजनक बीज का उत्पादन 79,377.2 क्विंटल रहा, जबकि मांग 63,746.6 क्विंटल की थी। चारा फसलों में प्रजनक बीज का उत्पादन 5,053.2 क्विंटल रहा, जबकि मांग 3,981.6 क्विंटल थी और रेशा फसलों में प्रजनक बीज का उत्पादन 437.9 क्विंटल रहा, जबकि मांग 188.4 क्विंटल थी।

गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन

गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन सफल कृषि की आधारशिला है। अच्छे गुणवत्ता वाले बीज बेहतर अंकुरण, समान फसल वृद्धि, अधिक उपज तथा कीट और रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता सुनिश्चित करते हैं। बीज (फसलों) पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत, 2020–21 से 2024–25 के दौरान कुल 19,04,803.2 क्विंटल गुणवत्तापूर्ण बीज (फाउंडेशन सीड, सर्टिफाइड सीड, टीएल फसल और रोपण सामग्री) का उत्पादन किया गया। फसल समूहों में, अनाजों ने सबसे बड़ा योगदान दिया, जो कुल उत्पादन का लगभग 65% अर्थात् 12,36,339.9 क्विंटल था। इसके बाद दलहन (2,44,883.1 क्विंटल), तिलहन (1,71,825.5 क्विंटल), चारा (14,690.4 क्विंटल) और रेशा फसलों (4,942.1 क्विंटल) का स्थान रहा। कुल रोपण सामग्री का उत्पादन 2,32,122.2 क्विंटल था। विशेष रूप से, कुल गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन में पिछले वर्षों के दौरान निरंतर वृद्धि देखी गई, जो 2020–21 में 3,07,396.3 क्विंटल से बढ़कर 2024–25 में 4,33,114.7 क्विंटल हो गया, जो फसल क्षेत्रों में बीज उपलब्धता बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासों को दर्शाता है।

जननद्रव्य पंजीकरण, संरक्षण और अभिवृद्धि

जननद्रव्य का पंजीकरण मूल्यवान पौधों के आनुवंशिक संसाधनों के सुव्यवस्थित संरक्षण एवं सतत प्रयोग में मदद करता है, ताकि ये संसाधन भविष्य में उपयोग के लिए सुरक्षित रहें। नए जननद्रव्य को शामिल करने से रोग प्रतिरोधकता, सूखा सहिष्णुता और बेहतर उपज जैसी नई विशेषताएं आती हैं। ये सभी प्रयास टिकाऊ कृषि का समर्थन करते हैं। भाकृअनुप–राष्ट्रीय पादप अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली के राष्ट्रीय जीन बैंक में लगभग 2200 फसल प्रजातियों के 4.71 लाख से अधिक जननद्रव्य को संरक्षित किया गया हैं।

सूक्ष्मजीव अनुवांशिक संसाधनों का संरक्षण

सूक्ष्मजीव जर्मप्लाज्म संरक्षण का उद्देश्य विभिन्न प्रकार के सूक्ष्मजीवों की आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करना है ताकि भविष्य में कृषि, पर्यावरण, औद्योगिक और औषधीय उद्देश्यों के लिए उनका उपयोग किया जा सके। ये सूक्ष्मजीव मिट्टी की उर्वरता, पोषक तत्वों के चक्रण और पौधों के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं एवं फसल वृद्धि को बढ़ावा देते हैं और रोगों से सुरक्षा करते हैं। भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो, मऊनाथ भंजन, उत्तर प्रदेश की एक इकाई ''राष्ट्रीय कृषि महत्त्वपूर्ण सूक्ष्मजीव कल्चर संग्रह (एनएआईएमसीसी)'' को वर्ष 2020 में विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO), जिनेवा द्वारा बुडापेस्ट संधि के अनुच्छेद 7(1) के

अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय अभिसंचय प्राधिकरण (इंटरनेशनल डिपॉजिटरी अथॉरिटी – आईडीए) का दर्जा प्राप्त हुआ है। इस कल्चर संग्रह में कुल 9050 सूक्ष्मजीव अभिगमन (एकसेशन्स) उपलब्ध हैं तथा 11 सूक्ष्मजीव जर्मप्लाज्म पंजीकृत किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, 155 सूक्ष्मजीव नमूने सुरक्षित अभिरक्षा (सेफ डिपॉजिट) के रूप में रखे गए हैं।

पिछले दशक में प्रभाग में नए संस्थानों/केंद्रों/नए भवनों की स्थापना

i. नए संस्थान

- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), दिरपई चापोरी, गोगामुख, धेमाजी, असम
- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), गौरिया कर्मा, बरही, हजारीबाग, झारखंड

ii. नए भवन

- राष्ट्रीय जैविक तनाव प्रबंधन संस्थान, रायपुर (छत्तीसगढ़) (नया)
- भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, रांची (झारखंड) (नया)
- भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना (पंजाब)
- राष्ट्रीय एकीकृत कीट प्रबंधन अनुसंधान संस्थान, दिल्ली

iii. नए क्षेत्रीय केंद्र

- भाकृअनुप–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, खोरधा, भुवनेश्वर (ओडिशा)
- भाकृअनुप–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान (कानपुर) क्षेत्रीय केंद्र, बीकानेर (राजस्थान)
- भाकृअनुप–भारतीय मूंगफली अनुसंधान संस्थान का क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, बीकानेर, राजस्थान
- भाकृअनुप–भारतीय मूंगफली अनुसंधान संस्थान का क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल
- भाकृअनुप–भारतीय मूंगफली अनुसंधान संस्थान का क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, अनंतपुर, आंध्र प्रदेश
- भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केंद्र, बाड़मेर (राजस्थान)

अन्य देशों में संस्थागत निर्माण

आईएआरआई, कंधार, अफगानिस्तान में अफगान राष्ट्रीय कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (ANASTU) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से म्यांमार के येजिन कृषि विश्वविद्यालय में उन्नत कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा केंद्र (ACARE) की स्थापना।

फसल विज्ञान अनुसंधान की वर्तमान प्राथमिकताएँ

- वर्तमान में जलवायु परिवर्तन के कृषि पर नकारात्मक असर को ध्यान में रखते हुए आईसीएआर जीनोम संपादन तकनीक के माध्यम से जलवायु के प्रति फसलों की सहनशीलता बढ़ाने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने को वरीयता दे रही है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए "जीनोम संपादन उपकरणों के माध्यम से जलवायु लचीलापन बढ़ाना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना" नामक एक परियोजना वर्ष 2023–24 से प्रारंभ की गई है। इस उप–योजना के अंतर्गत फसल एवं प्राकृतिक संसाधन ब्यूरो के 25 संस्थान 24 प्रमुख फसलों पर कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, चार प्रमुख कीट प्रजातियों का भी जीनोम संपादन किया जा रहा है। यह परियोजना जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने और देश में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
- अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष 2023 के दौरान आईआईएमआर भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद को वैश्विक श्री अन्न उत्कृष्टता केंद्र के रूप स्थापित करने की घोषणा की गई थी, जिसमें श्री अन्न अनुसंधान में न्यूनतम वैज्ञानिक तकनीक के प्रयोग के लिए विश्वस्तरीय प्रयोगशालाओं, फील्ड रिसर्च फैसिलिटी, श्री अन्न जीन बैंक की स्थापना तट गुडामलानी, बाड़मेर राजस्थान में एक नए बाजरा कृषि अनुसंधान केंद्र की स्थापना शामिल हैं।
- इसके साथ साथ नए नए कीटों के प्रकोप से पहले से ही तैयार रहने के लिए उभरते कीटों पर एक नेटवर्क की स्थापना की गई है।
- जैवप्रौद्योगिकी अनुसंधान को बल देने के लिए बायोटेक फसलों पर भी एक नेटवर्क की शुरुआत की गई है।
- अनुसंधान के साथ साथ बायोफोर्टिफाइड किस्मों को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया जा रहा है।

भविष्य का कार्य-क्षेत्र

- आधुनिक जैव प्रौद्योगिकी और फेनोमिक उपकरणों का उपयोग करके 2047 तक खाद्य मांग को पूरा करने के लिए प्रमुख फसलों में आनुवंशिक लाभ को 1% से 2.4% तक बढ़ाना।
- निर्यात क्षमता वाली जलवायु प्रतिरोधी, जैव–फोर्टिफाइड, कम अवधि की फसल किस्मों का विकास करना, जिनमें प्रसंस्करण योग्य गुण हों।
- आयात कम करने, घरेलू मांग को पूरा करने और निर्यात बढ़ाने के लिए दलहन और तिलहन उत्पादन बढ़ाना।
- उभरते कीटों और बीमारियों पर रणनीतिक और भविष्योन्मुखी अनुसंधान, डिजिटल प्रौद्योगिकियों, रोबोटिक्स और एआई का उपयोग करके उनके त्वरित निदान उपकरणों और पूर्व चेतावनी प्रणाली का विकास करना।
- 10 वर्ष से कम पुरानी उच्च उपज देने वाली और जलवायु प्रतिरोधी किस्मों की हिस्सेदारी बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाने के लिए बीज प्रणाली का पुनरुद्धार करना और आत्मनिर्भरता के लिए राजस्व सृजन मॉडल विकसित करना और अपनाना।
- नए क्षेत्रों (एआई, रोबोटिक्स, जीनोमिक चयन और बिग डेटा एनालिटिक्स) में वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित करना।

उपरोक्त कार्य–क्षेत्रों में अनुसंधान के लिए 2025–26 की बजट घोषणा में उच्च उपज वाले बीजों पर राष्ट्रीय मिशन, कपास उत्पादकता के लिए मिशन तथा फसलों के जर्मप्लाज्म के लिए दूसरे जीन बैंक की स्थापना का प्रावधान किया गया है।

❑

आज की सबसे पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं की ओर मुड़ें और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें। हमें अपनी सभी प्रादेशिक कार्रवाइयां अपनी–अपनी भाषाओं में चलानी चाहिए तथा हमारी राष्ट्रीय कार्रवाइयों की भाषा हिन्दी होनी चाहिए। जब तब हमारे स्कूल और कॉलेज विभिन्न देशी भाषाओं में शिक्षा देना आरंभ नहीं करते, तब तक हमें आराम लेने का अधिकार नहीं है।

–राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा।

–डॉ. ज़ाकिर हुसैन

समृद्धि और पोषण सुरक्षा के लिए गौण बागवानी फसलों का महत्व: संभावनाएं एवं प्रयास

संजय कुमार सिंह*, प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी**, विश्व बंधु पटेल*** एवं सुधाकर पाण्डेय***

भारत में जैव विविधता की एक समृद्ध और विविध विरासत है, जिसमें उष्णकटिबंधीय वर्षावनों से लेकर अल्पाइन वनस्पतियों और समशीतोष्ण वनों से लेकर तटीय आर्द्रभूमि तक के आवासों का एक विस्तृत वर्ण–पट शामिल है। भारतीय उपमहाद्वीप में कई बागवानी फसलों की प्रजातियों की उत्पति हुई हैं। भारतीय मूल की गौण बागवानी फसलों के अलावा, पिछली चार शताब्दियों के दौरान दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप एवं दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में उत्पादित कई गौण बागवानी फसलों को भारत लाया गया। ये बागवानी फसलें अधिक पोषक तत्वों से भरपूर एवं जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने के कारण व्यापक स्तर पर खेती की जाने की सम्भावनाओ से भरपूर हैं। इन फसलों को कई नामो से जाना जाता है। जैसे–'कम उपयोग वाले, गौण बागवानी फसलें' या 'भविष्य की बागवानी फसलें' या 'आकांक्षी बागवानी फसलें'।

भारतीय और विदेशी मूल की इन बागवानी फसलों की कई विशिष्ट विशेषताएँ हैं, जोकि इन्हें मुख्य बागवानी फसलों की तुलना में अलग करती हैं। जिसमें जैविक एवं अजैविक तनाव–सहनशीलता और जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलता शामिल है। इसके अतिरिक्त, ये फसलें अनेक आवश्यक पोषक तत्वों (लाभकारी फाइटोकेमिकल्स), औषधीय एवं स्वास्थ्यवर्धक गुणों से समृद्ध हैं। इन बागवानी फसलों की खेती ग्रामीण आबादी की खाद्य और पोषण–संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है, जो गरीब समुदायों के लिए खाद्य और आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। पुरातन काल से कई ऐसी फसलों को वनों से संकलित कर आयुर्वेदिक तथा देशी औषधियों के रूप में उपयोग किया जाता रहा है।

भारत कई गौण बागवानी फसलों जैसे कटहल, बेल, आंवला, बेर, खेजड़ी, जामुन, इमली, महुआ, फालसा, लसोड़ा, करोंदा, पीलू, बिलंबी, कोकम, आवला, चिचिंडा, परवल, ककरोल, चठैल, फलीवाली सब्जियाँ, चौलाई, बथुआ, कचरी, फूट आदि का उद्गम केंद्र है। इनके अलावा अन्य गौण बागवानी फसलें जैसे कि रामबुतान, मैंगोस्टीन, लोंगन, एवोकेडो, वाटर एप्पल, हॉग प्लम, मैकाडामिया नट, कीवीफ्रूट, लॉन्गसैट, ड्यूरियन, पैशन फ्रूट, ड्रैगन फ्रूट, पुलासन, कमरख, केल, सतावर, छोटी ककड़ी, गोभीवर्गीय सब्जियाँ आदि फसलें पिछले कुछ शताब्दियों के दौरान लायी गयीं और कई अब भारतीय परिस्थितियों में अनुकूलित हो गयी हैं (तालिका 1)। अधिकांश गौण बागवानी फसलें घर के आसपास कम मात्रा में उगाई जाती हैं या वनों से एकत्र की जाती हैं, लेकिन हाल ही में इनमें से कुछ फसलों की व्यावसायिक खेती की जा रही है।

अनुसंधान एवं प्रसार

ऐसी कई गौण बागवानी फसलों की पहचान की गई है, जिनमें उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि प्राप्त करने की क्षमता है तथा इस प्रकार स्थानीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर राष्ट्रीय पोषण सुरक्षा में काफी सुधार किया जा सकता है। पिछले तीन दशकों में गौण बागवानी फसलों पर अनुसंधान रुचियों में एक विविधीकरण देखा जा सकता है। वैकल्पिक फसलों के रूप में या नए उत्पादों के स्रोतों के रूप में कृषि प्रणालियों के लिए गौण बागवानी फसलों को बढ़ावा देने के लिए कई

*उप–महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली
**प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली
***सहायक महानिदेशक (बागवानी विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली

तालिका 1. क्षेत्रवार महत्वपूर्ण गौण बागवानी फसलें

कृषि जलवायु क्षेत्र	फलों की फसलें	सब्जियाँ	पुष्प
उत्तरीय शीतोष्ण क्षेत्र	कैथा, मेहल, भोटिया बादाम, मीठा पांगर, चिउरा, जंगली खुबानी, काला हिसालू, पीला हिसालू, ब्लूबेरी, काफल, घिनवा, इत्यादि	चौलाई, गौण पत्तेदार सब्जियाँ, गेठी, गौण कद्दू वर्गीय सब्जियाँ, बथुआ, लाई साग, सतवारी, लिगुड़े, केरुवा, कमल ककड़ी, इत्यादि	बुराँश, जंगली लिली, पियोली, इत्यादि
उत्तर पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र	कृष्ण फल, रक्त फल, बर्मीज अंगूर, जंगली नाशपाती, क्विंस, कचाई नींबू, इलाइची नींबू, गौण नीबू प्रजातियाँ, इत्यादि	चौलाई, पोई साग, कलमी साग, लाई साग, गौण पत्तेदार सब्जियाँ, रतालू, चाउ–चाउ, कमल ककड़ी, इत्यादि	कमल, आर्किड, इत्यादि
मध्यवर्ती उपोष्ण क्षेत्र	बेल, चिरौंजी, खिरनी, महुआ, जामुन, केंदु, बेल, करोंदा, फालसा, आवला, ताड़ी, इत्यादि	चौलाई, पोई साग, लाई साग, कलमी साग, गौण पत्तेदार सब्जियाँ, रतालू, गौण कद्दू वर्गीय सब्जियाँ, ट्री बीन, सिंघाड़ा, इत्यादि	कमल, आर्किड, इत्यादि
उत्तर–पूर्वी उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र	महुआ, करौंदा, कृष्ण फल, बडहल, कटहल, गुलाब जामुन, चालटा, इत्यादि	चौलाई, पोई, कलमी साग, लाई साग, गौण पत्तेदार सब्जियां, एरियल रतालू, खीरे, फली वाली सब्जियाँ, कुंदरू, सिंघाड़ा, इत्यादि	कमल, आर्किड, इत्यादि
उत्तर–पश्चिमी उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र	फालसा, खजूर, बेर, शरीफा, इमली, लोकाट, लसोड़ा, केर	चौलाई, गौण पत्तेदार सब्जियां, रतालू, ककड़ी, इत्यादि	सेलोसिया जीनीया, इत्यादि
शुष्क एवं गर्म क्षेत्र	बेल, चिरौंजी, खिरनी, महुआ, जामुन, केंदु, कैंथ, सीताफल, करोंदा, इत्यादि	चौलाई, गौण पत्तेदार सब्जियां, एरियल रतालू, ककड़ी, बेसेला, पानी पालक, फली वाली सब्जियाँ, इत्यादि	गोम्फ्रेना, पोर्टुलाका, इत्यादि
अर्द्ध शुष्क एवं गर्म क्षेत्र	बेल, चिरौंजी, खिरनी, महुआ, जामुन, कैथ, सीताफल, इमली, इत्यादि	गौण पत्तेदार सब्जियां, लाई पत्ता, इत्यादि	सेलोसिया जीनीया, इत्यादि
मध्य उष्णकटिबंधीय क्षेत्र	महुआ, फालसा, खिरनी, सीताफल, आंवला, बेल, करौंदा, जामुन, कैथ, कमलम, केडू, करोंदा, इमली, इत्यादि	चौलाई, गौण पत्तेदार सब्जी, एरियल रतालू, ककड़ी, करीपत्ता, इत्यादि	गैलार्डिया, पोर्टुलाका, इत्यादि
दक्षिणी उष्णकटिबंधीय जलवायु क्षेत्र	शरीफा, आंवला, बेल, करौंदा, जामुन, कैथ, बारबेडोस चेरी, बिलिम्बी, हॉग प्लम, गुलाब जामुन, कमरख, करौंदा, सूरीनाम चेरी, इमली, मैकाडामिया नट, कमलम, हनुमान फल, कटहल, इत्यादि	चौलाई, गौण पत्तेदार सब्जी, एरियल रतालू, ककड़ी, सहजन, इत्यादि	कमल, आर्किड, इत्यादि
तटीय उष्णकटिबंधीय आर्द्र क्षेत्र	एवोकैडो, रामबूतान, मैंगोस्टीन, कोकम, कृष्ण फल, मलयन एप्पल, अन्य गौण गार्सिनिया, बिलंबी, ब्रेडफ्रूट, हॉग प्लम, बारबाडोस चेरी, गुलाब जामुन, कमरख, करौदा, सूरीनाम चेरी, सफेद चीकू, मैकाडामिया नट, कमलम, हनुमान फल, कटहल, बडहल, इत्यादि	गौण पत्तेदार सब्जियाँ, रतालू, खीरा, ककरोल, चठैल, गौण फली वाली सब्जियाँ, सहजन, करीपत्ता, इत्यादि	कमल, आर्किड हेलिकोनिया, टार्च लिली, सजावटी अदरक प्रजातियाँ, इत्यादि

महत्वपूर्ण कदम उठाये गए हैं। कई आईसीएआर के संस्थान और राज्य कृषि विश्वविद्यालय, इन फसलों के अनुसंधान एवं विकास पहलुओं पर काम कर रहे हैं। कार्यशालाएं, क्षेत्र–दिवस, सेमिनार, फसल मेले एवं विविधता मेले इन फसलों को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। आईआईएचआर, बेंगलुरु, केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, चेटल्ली, केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र भुवनेश्वर, केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, गोधरा, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर ने इन फसलों के अनुसंधान एवं विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु से शरीफा की अर्का सहान, चकोतरा की अर्का अनंता, अर्का चंद्रा, केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, चेटल्ली से एवोकेडो की अर्का सुप्रीम व अर्का कुर्ग रवि, रामबुतान की अर्का कुर्ग अरुण एवं अर्का कुर्ग पीताभ, मलयन एप्पल की सीएचईसम–1 किस्में जारी की गयी तथा कोकम, करोंदा, वृक्षआँवला, हनुमान फल एवं चकोतरा के उन्नत संकलनों की पहचान की गयी। केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, भुवनेश्वर से गौण कद्दू वर्गीय सब्जियों के टीसल गार्ड – अर्का भारत, स्पाइन गार्ड–अर्का नीलांचल शांति, कुंदरू – अर्का नीलांचल कुंखी इत्यादि का विकास किया गया। केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, गोधरा से बेल (गोमा यशी, थार दिव्या, थार नीलकंठ, थार सृष्टि), जामुन (गोमा प्रियंका, थार क्रांति), और फालसा (थार प्रगति) विकसित की गयी. काशी मनु, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित देश की प्रथम कलमीसाग की किस्म है जो एक पौष्टिक साग है और लौह, विटामिन, मिनरल्स और प्रोटीन का अच्छा स्रोत है। यह पाचन में सहायक होता है और एनीमिया से ग्रसित लोगों के लिए लाभकारी है। पारंपरिक रूप से कलमीसाग जलभरित क्षेत्रों में उगाया जाता है, परन्तु यह प्रजाति जलरहित (upland) क्षेत्रों में वर्षभर उगाई जाती है। इनके अतिरिक्त कई किसानों की उन्नत किस्में जैसे कटहल में सिद्दू, शंकरा, अग्रहारा, जामुन में राउंड द ईयर, इमली में लक्ष्मणा इत्यादि को पंजीकृत कराया गया। इनके अतिरिक्त प्रवर्धन, उत्पादन और सस्योतर प्रबंधन तकनीकों का भी विकास किया गया। इन फसलों

तालिका 2. गौण बागवानी फसलों की प्रमुख किस्में

फसल का नाम	किस्म	श्रोत
रामबुतान	अर्का कुर्ग अरुण, अर्का कुर्ग पीताभ	केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, चेटल्ली
एवोकेडो	अर्का सुप्रीम, अर्का कुर्ग रवि	केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, चेटल्ली
मलयन एप्पल	सीएचईसम–1	केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, चेटल्ली
शरीफा	अर्का सहान	भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु
चकोतरा	अर्का अनंता, अर्का चंद्रा	भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु
बेल	गोमा यशी, थार दिव्या, थार नीलकंठ, थार सृष्टि	केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर
जामुन	गोमा प्रियंका, थार क्रांति	केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर
फालसा	थार प्रगति	केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर
टीसल गार्ड	अर्का भारत	केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, भुवनेश्वर
स्पाइन गार्ड	अर्का नीलाचल शांति	केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, भुवनेश्वर
कुंदरू	अर्का नीलाचल कुंखी	केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, भुवनेश्वर
कलमीसाग	काशी मनु	भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी
सिंघाड़ा		
फूट		
कचरी	ए के एच–119	केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर
लम्बी लोबिया (याद्लोंग बीन)	अर्का मंगला	भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु

रामबुतान – अर्का कुर्ग अरुण

एवोकेडो – अर्का सुप्रीम

कमलम (ड्रैगन फ्रूट)

मकादामिया नट

मैनगोस्टीन

कोकम

लोंगन – गण्डकी लोंगन 1

वृक्ष–आँवला

शरीफा – अर्का सहन

कंटोला (स्पाइन गार्ड) –
अर्का नीलांचल शांति

ककोडा (टीजल गार्ड) –
अर्का भरत

कुंदरू –
अर्का नीलांचल कुंखी

के प्रसार के लिए बड़ी संख्या में पौधों का प्रवर्धन कर किसानों को उपलब्ध कराये जा रहे हैं। कई निजी नर्सरियां भी इन फसलों के गुणन एवं पौधसामग्री की आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन फसलों की सफलतापूर्वक खेती की कई कहानियां हैं, जहां किसानों ने अच्छा लाभ प्राप्त किया है। (तालिका 2)

सफलता की कहानियाँ

कई प्रगतिशील उत्पादकों ने पिछले एक दशक में इन फसलों को अपनाया है और पर्याप्त लाभ प्राप्त कर रहे हैं। श्री जैकब पुत्तुर, कर्नाटक ने सुपारी, काली मिर्च, रबर, केला और अन्य फसलों के लिए अनुकूल क्षेत्र में रामबूटन की खेती में विविधता लाने का कार्य किया। आत्मविश्वास और रणनीतिक प्रबंधन प्रथाओं के साथ, उन्होंने अपने स्वयं के फार्म आउटलेट के माध्यम से रामबूतान के फलों को बेचकर अधिक कीमतें अर्जित कीं। उनका रामबूतान बाग क्षेत्र के सभी उत्पादकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया। रेनी जैकब, कंजिरापल्ली, एक चार्टर्ड अकाउंटेंट और बागान मालिक ने 2008 में रबर के पेड़ों को काटकर रामबुतान लगाया और वह सालाना 12 टन रामबुतान की फसल लेते हैं, जिसका बाजार मूल्य 16 लाख रुपये से अधिक है। केरल के कालीकट के श्री अहमद कुट्टी, पी.के. ने अपनी जमीन पर मैंगोस्टीन की खेती में रुचि लेकर अच्छा लाभ अर्जिन किया। केरल के त्रिशूर के चालाकुडी कस्बे के परियारम गांव के श्री एम. के. मार्लिन ने मैंगोस्टीन की खेती और विपणन में भाग लिया। परियारम गांव में हर साल 1 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य का मैंगोस्टीन पैदा होता है। तमिलनाडु के थेनी जिले में श्री आर. रमेश ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर श्रीवैगई पैशन फ्रूट एसोसिएशन की शुरुआत की। उन्होंने अलग–अलग इलाकों में 150 एकड़ जमीन पर पैशन फ्रूट लगाया है और मदुरै और चेन्नई में बाजार एवं प्रसंस्करण के अवसरों की तलाश कर रहे हैं। केरल के कोट्टायम के एक सेवानिवृत्त सैनिक श्री जोसेफ लुइस कावलम ने अपनी 5 एकड़ जमीन पर पैशन फ्रूट की खेती करके अपने जीवन को 'मीठा' बना लिया है। उन्हें प्रतिदिन 200 किलोग्राम से अधिक फल मिलते हैं, जिन्हें बाजार में 80 रुपये प्रति किलोग्राम (फार्म गेट मूल्य) की दर से बेचा जाता है।

तमिलनाडु के डिंडीगुल जिले के थांडीकुडी गाँव के प्रगतिशील उत्पादक श्री वीरअरासु ने अपने कॉफी के पौधों को छाया प्रदान करने के लिए 2002 में अपने कॉफी बागान में 800 एवोकाडो के पेड़ लगाए थे। उन्होंने इस फसल की क्षमता को पहचाना और वे व्यक्तिगत रूप से इस फसल को बढ़ावा दे रहे हैं। अब डिंडीगल जिले के लोअर पलनी पहाड़ियों में कई एवोकाडो उत्पादक हैं। अनुमान है कि वहाँ एवोकाडो के 12 लाख पेड़ हैं और सालाना 12–15 करोड़ रुपये का कारोबार करते हैं। पिछले पाँच वर्षों में ड्रैगन फ्रूट की खेती में भारी उछाल आया है। बेंगलुरु के एक सॉफ्टवेयर पेशेवर श्री जगदीश गिरी ने 2018 में अपने डोड्डाबल्लापुर फार्म में लगभग 1,000 ड्रैगन फ्रूट के पौधे लगाए। वर्तमान में, उन्हें प्रति किलोग्राम ड्रैगन फ्रूट के 100 से 150 रुपये मिलते हैं वह बेंगलुरू में मॉल और दुकानों में फल बेचते हैं और इस बात पर जोर देते हैं कि किसानों को किसी एक बाजार पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, क्योंकि इससे वे बाजार के उतार–चढ़ाव के प्रति संवेदनशील हो जाएंगे। पुत्तूर के पास एक किसान ने टीसल गार्ड–अर्का भरत की खेती आरम्भ की तथा इसके फलों और पोधों को बेचकर लगभग 2 लाख रुपये लाभ अर्जित किया। कलमीसाग की किस्म काशी मनु देश भर में सफलतापूर्वक उगती पाई गयी। 25,000 से अधिक परिवारों को किचन गार्डन हेतु रोपण सामग्री वितरित की गई। कई प्रगतिशील किसानों ने इसे व्यावसायिक रूप से अपनाया, जहाँ 90–100 टन/हेक्टेयर उपज प्राप्त हुई, लागत 1.4–1.5 लाख/हेक्टेयर और आय 12–15 लाख/हेक्टेयर/वर्ष रही । इससे अन्य किसानों को भी प्रेरणा मिली और युवाओं के लिए उद्यमिता का अवसर विकसित हुआ।

चुनौतियां एवं संभावनाएँ

गौण बागवानी फसलों की खेती से कुछ किसानों को अच्छा लाख प्राप्त हुआ हैं लेकिन ये सफलताएं कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित हैं। इनके व्यापक रूप से अंगीकरण और प्रसार के लिए कई चुनौतियाँ हैं।

- आनुवंशिक संसाधनों का एकीकृत प्रबंधन और उच्च उपज क्षमता वाली देशी और छोटी विदेशी बागवानी फसलों में पोषक तत्वों से भरपूर जननद्रव्यों की विस्तृत पहचान आवश्यक है।

- गौण बागवानी फसलों की प्रवर्धन, उत्पादन तकनीकें विकसित करना।
- इन फसलों की नयी किस्मों के गुणवत्तायुक्त बीज और रोपण सामग्री की उपलब्धता।
- खाद्य प्रसंस्करण उद्योग से गौण बागवानी फसलों, पोषक तत्वों से भरपूर उप–उत्पादों के मूल्य निर्धारण ने कार्यात्मक खाद्य पदार्थों और चिकित्सीय खाद्य योगों में उनके उपयोग के लिए तकनीकें विकसित करना।
- विभिन्न कृषि–जलवायु और कृषि–पारिस्थितिक क्षेत्रों में देशी बागवानी प्रजातियों को बढ़ावा देना।

गौण बागवानी फसलें अपनी रोग–प्रतिरोधक क्षमता और स्वास्थ्य संबंधी लाभों के कारण लोकप्रिय हो रही हैं। गौण बागवानी फसलों, विदेशी फलों और सब्जियों का उत्पादन और व्यापार वैश्विक महत्व प्राप्त कर रहा है। फसल विविधीकरण में इन फसलों की जबरदस्त संभावनाएं हैं। इनमें से कुछ में फार्मास्यूटिकल और प्रसंस्करण उद्योगों के लिए बहुत संभावनाएं हैं। इन फलों का क्षेत्र और उत्पादन बढ़ रहा है। पिछले एक दशक में इन फलों और अन्य उपयोग में आने वाले फलों पर कई सफलता की कहानियां हैं। वर्तमान में बाजार दरें ऊंची हैं और किसानों को अच्छा मुनाफा हो रहा है। जैसे–जैसे अधिक किसान इन फलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं, उम्मीद है कि भविष्य में और अधिक उपज बाजार में आएगी। इन फसलों के बेहतर जीनोटाइप की पहचान पर कुछ काम किया गया है, लेकिन इन फसलों की उत्पादन तकनीकों, सस्योतर प्रबंधन पर बहुत सीमित शोध कार्य किया गया है। इन फसलों के मुनाफे को बनाए रखने के इन आयामों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। ❑

उत्तम खेती मध्यम बान।
अधम चाकरी भीख निदान।।
भूमि ल भुमियां छोड़िए, बड़ौ भूमि को वास।
भूमि बिहीनी बेल जो, पल में होत बिनास।।
खेती उत्तम काज है, इहि सम और न होय।
खाबे को सबको मिलै, खेती कीजे सोय।।
एक हर हत्या दो हर काज।
तीन हर खेती चार हर राज।।
दस हल राव, आठ हर राना।
चार हलों का, बड़ा किसाना।।
खेती तौ थोरी करै, मेहनत करै सवाय।
राम चहै बा मनुस खों, टोटौ कभऊन आय।।
असाड़ सावन करी गमतरी, कातिक खाये, पुआ।
मांय बहिनियां पूछन लागे, कातिक कित्ता हुआ।।
उत्तम खेती आप सेती, मध्यम खेती भाई सेती।
निक्कट खेती नौकर सेती, बिगड़ गई तो बलाय सेती।।
खुद करै तौ खेती, नई तौ बंजर हेती।
खेती उनकी कहें, जो हल अपने हांत गहें।।
आदी खेती उनकी कहें, जो नित हल के संग रहें।
बयें बीज उपजै नई तहां, जो पूंछें कै हर है कहां।।

भारतीय खाद्य प्रणाली में मशरूम का योगदान

बृजलाल अत्री*

भोजन जीवन की मूलभूत और महत्वपूर्ण आवश्यकता है और यह कटु सत्य है कि भारत सहित दुनिया भर की बड़ी आबादी भोजन की कमी और कुपोषण से जूझ रही है। संपूर्ण भोजन के रूप में, मशरूम एक पौष्टिक शाकाहारी व्यंजन है और उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन (20–35 प्रतिशत शुष्क वजन के आधार पर) का एक अच्छा स्रोत है। भारत में, पाँच प्रकार के मशरूम अर्थात् सफेद बटन मशरूम (*एगेरिकस बाईस्पोरस*), ढींगरी (*प्लुरोटस स्पीशीज*), दूधिया (*कैलोसाइबे इंडिका*), पराली मशरूम (*वोल्वेरिएला वोल्वेसिया*) और शिटाके (*लेंटिनुला एडोड्स*) की व्यावसायिक रूप से खेती की जाती है, जिनमें नमी की मात्रा लगभग 70–95% होती है। मशरूम का शुष्क पदार्थ विटामिन और खनिजों के अंश के साथ कार्बोहाइड्रेट (50–65%), प्रोटीन (19–35%), और आवश्यक फैटी एसिड (2–6%) से बना होता है।

खाद्य मशरूम कई अलग–अलग न्यूट्रास्यूटिकल्स का स्रोत हो सकते हैं, जैसे β–ग्लूकन, लेक्टिन, असंतृप्त फैटी एसिड, फेनोलिक यौगिक, टोकोफेरोल, एस्कॉर्बिक एसिड, एल्कलॉइड और कैरोटीनॉयड। मशरूम के प्रोटीन का अत्यधिक महत्व है जो इसमें अधिकांश सब्जियों की तुलना में अधिक पाया गया है। मशरूम में मानव स्वास्थ्य के लिए आवश्यक खनिज K, P, Na, Ca और Mg शामिल हैं जबकि मामूली मात्रा में Cu, Zn, Fe, Mo और Cd हैं। उच्च रक्तचाप, मधुमेह और मोटापे जैसी बीमारियों/विकारों से पीड़ित लोग कम Na और उच्च K के कारण अपने दैनिक आहार में मशरूम का उपयोग कर सकते हैं। यह पाया गया है कि मशरूम को पकाने के बाद भी विटामिन और अन्य महत्वपूर्ण पोषण घटकों में कोई महत्वपूर्ण कमी नहीं होती है, जिससे वे विभिन्न कार्यात्मक घटकों के साथ सुपर फूड बन जाते

*प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, सोलन

हैं। विभिन्न मशरूम जैसे रिशी (*गैनोडर्मा ल्यूसिडम*), विलो ब्रैकेट फंगस (*फेलिनस लिंटेस*), ऑयस्टर (*प्लुरोटस स्पीशीज*) में एंटी–म्यूटाजेनिक, एंटी–एजिंग, एंटी–वायरल, एंटी–बैक्टीरियल, एंटी–फंगल और एंटी–कार्सिनोजेनिक गुण भी बताए गए हैं।

चूँकि मशरूम प्रोटीन, विटामिन, खनिजों से भरपूर होते हैं और इनमें कार्बोहाइड्रेट और वसा की मात्रा बहुत कम होती है, इसलिए इन्हें *सुपर फूड* माना जाता है। पहले के समय में चीन और जापान में विशेषाधिकार प्राप्त लोगों द्वारा मशरूम का सेवन किया जाता था, लेकिन जागरूकता के कारण, अब सभी श्रेणियों के उपभोक्ताओं को अपने भोजन में मशरूम की आवश्यकता होती है। रोमन और चीनियों ने मशरूम को क्रमशः *''भगवान का भोजन''* और *''जीवन का अमृत''* माना है। लगभग 50 मिलियन टन के कुल विश्व उत्पादन में से, चीन लगभग 27 किलोग्राम/व्यक्ति/वर्ष की खपत के साथ 46 मिलियन टन (>90%) से अधिक का उत्पादन करने में अग्रणी है। दूसरी ओर लगभग 3.50 लाख टन उत्पादन वाले भारत में उपलब्धता मुश्किल से 220 ग्राम/व्यक्ति/वर्ष है।

पोषण संबंधी घटक

भारत में, अधिकांश आबादी गेहूं, मक्का, चावल, ज्वार, बाजरा जैसे अनाज के साथ–साथ दालों का सेवन करती है जिनमें प्रोटीन और आवश्यक अमीनो एसिड की कमी होती है। चूंकि मानव शरीर विटामिन और खनिजों को संश्लेषित नहीं कर सकता है, इसलिए दैनिक आहार के माध्यम से इन घटकों को प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है। हालाँकि, मशरूम 70–95% पानी से बना होता है, फिर भी, यह प्रोटीन, रेशा, खनिज, विटामिन, एंटीऑक्सिडेंट, पॉलीसेकेराइड, फेनोलिक यौगिक, टरपेनोइड, सेकेंडरी मेटाबोलाइट्स आदि का एक पैकेट है। चूंकि इसमें कार्बोहाइड्रेट और वसा कम होते हैं, इसलिए मशरूम संभावित रूप से कम कैलोरी वाले कार्यात्मक खाद्य पदार्थों के साथ–साथ न्यूट्रास्यूटिकल्स का भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं। मीठे, खट्टे, नमकीन और कड़वे स्वादों के अलावा, मशरूम में ग्लूटामेट की उपस्थिति के कारण विशिष्ट नमकीन स्वाद होता है।

प्रोटीन

मशरूम 2.20 से 3.50 ग्राम/100 ग्राम (एफडब्ल्यूबी) और 19.05 से 35.10 ग्राम/100 (डीडब्ल्यूबी) तक प्रोटीन का बहुत समृद्ध स्रोत है। मानव शरीर के विभिन्न अंगों की संरचना, कार्यप्रणाली तथा ऊतकों का नियमन प्रोटीन द्वारा होता है। वे अमीनो एसिड नामक छोटे ब्लॉकों से बने होते हैं जो मूलभूत घटक होते हैं और लंबी श्रृंखलाओं के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े होते हैं। बीस विभिन्न प्रकार के अमीनो एसिड मिलकर एक प्रोटीन बनाते हैं। मशरूम में 9 आवश्यक अमीनो एसिड जैसे हिस्टिडीन, आइसोल्यूसीन, ल्यूसीन, लाइसिन, मेथियोनीन, फेनिलएलनिन, थ्रेओनीन, ट्रिप्टोफैन और वेलिन पाए जाते हैं। सभी आवश्यक अमीनो एसिड युक्त भोजन को *''संपूर्ण प्रोटीन''* कहा जाता है। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, मशरूम प्रोटीन की पाचनशक्ति 60–70% तक होती है जबकि मानव आहार में इसकी कमी से क्वासियोरकोर और मरास्मस रोग होता है। क्वासियोरकोर रोग में जठरांत्र प्रणाली में ऑसमाटिक असंतुलन होता है जिसे एडिमा कहा जाता है और साथ ही यकृत का आकार भी बढ़ जाता है। मरास्मस में, कुल प्रोटीन ऊर्जा कुपोषण होता है जिससे वसा ऊतक और मांसपेशियों का स्पष्ट नुकसान होता है।

कार्बोहाइड्रेट

कार्बोहाइड्रेट कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बने चीनी के अणु होते हैं जो मानव शरीर में टूटकर ग्लूकोज बनते हैं जो कोशिकाओं और ऊतकों के लिए ऊर्जा का मुख्य स्रोत है। कार्बोहाइड्रेट को आगे शर्करा, स्टार्च और फाइबर में उप–विभाजित किया जाता है। विभिन्न मशरूमों के पाचन कार्बोहाइड्रेट प्रोफाइल में स्टार्च, पेंटोस, हेक्सोज, डाईसैकराइड, अमीनो शर्करा, चीनी अल्कोहल और चीनी एसिड शामिल हैं। शर्करा ग्लूकोज और फ्रुक्टोज जैसे सरल कार्बोहाइड्रेट होते हैं जो शरीर द्वारा तुरंत अवशोषित होते हैं और तुरंत ऊर्जा देते हैं।

वसा

वसा को फैटी एसिड या लिपिड के रूप में भी जाना जाता है जो तीन अणुओं के एक साथ जुड़ने से बने होते हैं और ट्राइग्लिसराइड कहलाते हैं। कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन की तुलना में मशरूम में वसा की मात्रा बहुत कम होती है। अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए मानव शरीर में आवश्यक वसा जैसे ओमेगा–3 वसा

(मछली और अलसी के बीज से) और ओमेगा–6 वसा (नट्स, बीज और मकई के तेल से) की आवश्यकता होती है। मशरूम के फलन में लिनोलिक, ओलिक और लिनोलेनिक के रूप में वसा की नगण्य मात्रा होती है। मशरूम में पॉलीअनसैचुरेटेड फैटी एसिड (पीयूएफए) के रूप में वसा होती है जो रक्त कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करती है। पीयूएफए को हृदय को विभिन्न बीमारियों से बचाने वाला कार्डियोपल्मोनरी माना जाता है।

विटामिन और खनिज

जहां तक विटामिन का सवाल है, मशरूम विशेष रूप से विटामिन बी का एक प्रमुख स्रोत है। मशरूम में फोलिक एसिड और विटामिन बी 12 के अंश के साथ थायमिन, राइबोफ्लेविन, नियासिन, बायोटिन, पैंटोथेनिक एसिड की प्रशंसनीय मात्रा उपलब्ध होती है जो अन्यथा अधिकांश पारंपरिक सब्जियों में अनुपस्थित होती है। राइबोफ्लेविन (विटामिन बी2), पैंटोथेनिक एसिड (विटामिन बी5) और नियासिन (विटामिन बी3) से युक्त विटामिन बी अलग–अलग मशरूम में अच्छी मात्रा में पाया जाता है। इन विटामिनों की कमी से क्रमशः त्वचा में दरार, थकान और पेलाग्रा होता है। ये विटामिन कार्बोहाइड्रेट, वसा और प्रोटीन को तोड़ने के बाद शरीर को ऊर्जा प्रदान करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। मशरूम विटामिन डी का एकमात्र स्रोत है और यह देखा गया है कि जब तोड़े गए मशरूम के फल पराबैंगनी प्रकाश के संपर्क में आते हैं तो विटामिन डी की मात्रा कई गुणा बढ़ जाती है। मशरूम को विटामिन के अलावा खनिजों का पावरहाउस भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें K, P, Ca, Mg, Cu, Zn, Fe, Mo, Cd जैसे प्रमुख खनिज पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। यह देखा गया है कि K, P, Na और Mg मशरूम की कुल राख सामग्री का लगभग 56–70% है जबकि K अकेले लगभग 45% है। इन घटकों के अलावा, मशरूम सेलेनो–प्रोटीन के रूप में सेलेनियम का भी समृद्ध स्रोत है जो शरीर को ऑक्सीडेटिव क्षति और संक्रमण से बचाने में सहायक है, जिससे प्रतिरक्षा को बढ़ावा मिलता है।

विकास को बढ़ावा देने वाले पदार्थ

विभिन्न मशरूमों में एल्कलॉइड होते हैं जो मानव शरीर में कई प्रकार के कार्य करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। लेक्टिन (बटन मशरूम) अग्न्याशय बीटा कोशिकाओं के विकास को प्रेरित करता है, जिससे इंसुलिन के उत्पादन में वृद्धि होती है। इसी तरह, ढींगरी मशरूम में लोवास्टैटिन होता है जो कोलेस्ट्रॉल संश्लेषण को रोकने के लिए जिम्मेदार होता है। शिटाके में, पानी में घुलनशील β–ग्लूकेन्स डेंड्राइटिक कोशिकाओं की गतिविधि को बढ़ाते हैं जो कैंसर कोशिकाओं की पहचान में शामिल होते हैं। कॉर्डिसेप्स में उपलब्ध कॉर्डिसेपिन विभिन्न न्यूट्रास्युटिकल और चिकित्सीय क्षमता जैसे एंटी–बायोटिक, एंटी–फंगल, एंटी–इंफ्लेमेटरी, इम्यूनो–मॉड्यूलेटरी, एंटीऑक्सीडेंट, एंटी–एजिंग, एंटी–कैंसर, एंटी–वायरल आदि के लिए जाना जाता है।

मशरूम के औषधीय घटक

मशरूम में मौजूद कई जैव–सक्रिय यौगिक मानव स्वास्थ्य में सुधार लाने वाली कई पुरानी बीमारियों, विकारों और बीमारियों को रोकने के लिए जिम्मेदार हैं। पॉलीसेकेराइड, फिनोल, ट्राई–टेरपेनोइड्स, पेप्टाइड्स, फ्लेवोनोइड्स, β–ग्लूकन, फाइटोस्टेरॉल, कार्यात्मक प्रोटीन आदि शरीर में कई कार्य करते हैं। मशरूम कैंसर के खतरे को कम करने, ट्यूमर के विकास को रोकने, रक्त शर्करा को संतुलित करने, विभिन्न बैक्टीरिया, वायरस, कवक के विकास को रोकने, शरीर में सूजन को कम करने, फेफड़ों के संक्रमण को ठीक करने, प्रतिरक्षा बढ़ाने, कोलेस्ट्रॉल को कम करने और एंटी–डिप्रेसेंट के रूप में कार्य करने के साथ–साथ एंटी–एजिंग गतिविधि में भाग लेकर मानव स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

दिल से जुड़ी बीमारियों के लिए मशरूम

चूंकि मशरूम में उच्च पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड (पीयूएफए) के साथ वसा की बहुत कम मात्रा होती है, इसलिए ये हृदय संबंधी बीमारियों से पीड़ित लोगों के लिए स्वादिष्ट व्यंजन हैं। मशरूम में पोटाशियम की उच्च मात्रा उच्च रक्तचाप को कम करने के लिए फायदेमंद है। ताजा और सूखे ढींगरी मशरूम के सेवन से मानव शरीर में कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम पाया गया है। ढींगरी मशरूम में लोवास्टैटिन और शिटाके में एरीटाडेनिन जैसे एल्कलॉइड कोलेस्ट्रॉल के स्तर को काफी कम करते पाए गए हैं। अधिकांश मशरूमों में K:Na अनुपात बहुत अधिक (110:1) होता है जो अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए फायदेमंद है।

मोटापे को रोकना

चूंकि मशरूम में कोई स्टार्च, बहुत कम वसा और शर्करा नहीं होती है, इसलिए कैलोरी मान बहुत कम होता है जो मोटापे के बिना स्वस्थ बनाए रखने में सहायक होता है। उच्च प्रोटीन के साथ–साथ रेशे से शरीर को मजबूत बनाने में मदद मिलती है और मल त्यागने से कब्ज की समस्या दूर हो जाती है। चूंकि मशरूम प्रोटीन का एक समृद्ध स्रोत है, इसलिए उच्च यूरिक एसिड से पीड़ित लोगों को इसका सेवन सीमित करना चाहिए।

कैंसर रोधी गतिविधि

मशरूम में कैंसर रोधी यौगिक होते हैं, जो मानव शरीर में कैंसर कोशिकाओं के विकास को रोकने में मदद करते हैं यदि शिटाके और टर्की टेल जैसे मशरूम का नियमित रूप से सेवन किया जाए। मशरूम में β–ग्लूकेन्स और लिनोलिक एसिड के साथ संयोजन में सेलेनियम, प्रोस्टेट और स्तन कैंसर दोनों के साथ–साथ मुक्त कणों की उपस्थिति के कारण कोशिका क्षति को रोकने के लिए बताया गया है। ट्रामेटेस वर्सीकलर से पृथक एक यौगिक पॉलीसेकेराइड–के (क्रेसिन) को कैंसर की जांच के लिए एक प्रमुख दवा के रूप में पाया गया है। विभिन्न मशरूमों में पाए जाने वाले कई पॉलीसेकेराइड्स ने कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी के प्रभाव को कम करने की क्षमता दिखाई है, जिन्हें नैदानिक परीक्षणों के माध्यम से मान्य किया गया है।

लंबी उम्र

मशरूम में कई पॉलीसेकेराइड होते हैं जो शरीर में पाए जाने वाले सुपर ऑक्साइड मुक्त कणों को खत्म करने के लिए भी जिम्मेदार होते हैं, जिससे आयु बढ़ती है। एंटीऑक्सिडेंट भी मुक्त कणों से छुटकारा पाने और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चूंकि, चीन में मशरूम की खपत दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में बहुत अधिक है, इसलिए चीनियों की औसत आयु बेहतर है, जबकि भारत में मशरूम की उपलब्धता काफी कम है, इसलिए भारतीयों की औसत आयु तुलनात्मक रूप से कम है। खनिजों का पावरहाउस, विटामिन और आवश्यक अमीनो एसिड का पैक स्वस्थ चयापचय को बनाए रखने में मदद करता है, जिससे बेहतर और स्वस्थ जीवन मिलता है। मशरूम के सेवन से व्यक्ति स्वस्थ आंखें, गुर्दे, अस्थि मज्जा, यकृत, त्वचा, नाखून, बाल, मजबूत हड्डियां, बेहतर हीमोग्लोबिन और उत्तम प्रतिरक्षा पा सकता है।

बेहतर पाचन तंत्र

मशरूम रेशे का बहुत समृद्ध स्रोत है जो न केवल भोजन सामग्री को पाचन तंत्र में ले जाने में मदद करता है, बल्कि इसे साफ भी करता है और मानव शरीर को पेट और आंत से संबंधित विभिन्न बीमारियों से मुक्त रखता है। किण्वित और गैर–किण्वित रेशा भी प्री–बायोटिक्स के रूप में कार्य करते हैं और बृहदान्त्र में उपयोगी बैक्टीरिया को आश्रय देते हैं। मशरूम के नियमित सेवन से कब्ज की समस्या दूर हो जाती है और मल त्यागने में आसानी होती है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना

चूंकि मशरूम विभिन्न प्रकार के पोषण और औषधीय घटकों से भरे हुए हैं, इसलिए वे प्रतिरक्षा को बढ़ाने और मजबूत करने में सक्षम हैं। यदि मशरूम का नियमित रूप से सेवन किया जाए तो सेलेनियम, विटामिन, खनिज, एंटीऑक्सिडेंट सभी मानव प्रतिरक्षा प्रणाली को विनियमित करने में योगदान करते हैं। गैनोडर्मा, टर्की टेल, शिटाके, मैटाके, हेरेशियम और कॉर्डिसेप्स ने प्रतिरक्षा संतुलन प्रभाव और एंटीऑक्सिडेंट दिखाए हैं जो शरीर में मुक्त कणों से लड़ते हैं।

हालाँकि, मशरूम में पोषण और औषधीय दोनों ही दृष्टि से बहुत बड़ी क्षमता है, तथापि, जागरूकता की कमी और भारत में कम उत्पादन के कारण यह अंतिम और आम उपभोक्ताओं तक नहीं पहुंच पाया है। अन्य फसलों की तुलना में, मशरूम को प्रति इकाई क्षेत्र में बहुत अधिक रिटर्न के साथ पूरे वर्ष उगाया जा सकता है। औषधीय लाभों के लिए, समय की मांग है कि अधिक से अधिक चिकित्सीय परीक्षण किए जाएं ताकि तैयार किए गए उत्पादों को लोकप्रिय बनाया जा सके। जैव–सक्रिय यौगिकों और द्वितीयक मेटाबोलाइट्स को दुनिया भर में विभिन्न संगठनों और प्रयोगशालाओं के माध्यम से मान्य किया जाना आवश्यक है। चूँकि दुनिया में अधिकांश लोग शाकाहारी भोजन की ओर बढ़ रहे हैं, यदि शाकाहारी मांस उपलब्ध कराया जाए तो मशरूम बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। किसी भी रूप में मशरूम का सेवन अत्यधिक फायदेमंद है और यह अधिकांश मनुष्यों के लिए भविष्य का भोजन है क्योंकि यह न्यूट्रास्युटिकल गुणों वाला एक कार्यात्मक खाद्य पदार्थ है।

❑

कालमेघ की औषधीय उपयोगिता

चन्द्रभानु*, वीना यादव**, पंकज शर्मा***

कालमेघ एक छोटे आकार की वार्षिकी जड़ी बूटी है जो प्रायः भारतवर्ष के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाती है। इसका वैज्ञानिक नाम *एण्ड्रोग्रैफिस पैनीकुलाटा* है। कालमेघ का औषधीय उपयोग पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में सदियों से किया जाता रहा है। कालमेघ के औषधीय गुणों के समर्थन में आज बहुत से वैज्ञानिक प्रमाण भी उपलब्ध हैं। कालमेघ का उपयोग आयुर्वेदिक उपचारों के अतिरिक्त सौंदर्य प्रसाधनों में भी किया जाता है। इसका स्वाद बेहद कड़वा होता है। कालमेघ में *एण्ड्रोग्रैफोलिड* नामक एक सक्रिय यौगिक होता है, जो इसके कई औषधीय गुणों हेतु उत्तरदायी होता है। कालमेघ के प्रचलित देशी नाम निम्न प्रकार से है :

संस्कृत	–	भूनिम्बा, किराता
हिंदी	–	भुईनीम, कालमेघ, किरायत
बंगाली	–	कालमेघ, महातिता
गुजराती	–	करियातू
कन्नड़	–	कियाता, नीला वेविनागिड़ा
मलयालम	–	किरियात्ता, नीलविप्पू
मराठी	–	ओलेकिरायत
तमिल	–	नीलावेम्बू, शिरातकुची, सिरूनांगई
तेलगू	–	नीलावेमू

भारत के कई राज्यों में कालमेघ की खेती भी की जाती है। इसकी खेती वर्षा ऋतु के दौरान अथवा खरीफ फसल के रूप में की जाती है। कालमेघ की खेती करने वाले प्रमुख राज्य उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार और पश्चिम बंगाल हैं। अनके अतिरिक्त आंध्र प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, झारखंड, उड़ीसा, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, पंजाब, सिक्किम, तमिलनाडु, तेलंगाना, त्रिपुरा, उत्तराखंड, जम्मू और कश्मीर आदि राज्यों में भी इसकी खेती की जाती है।

आयुर्वेद के अनुसार कालमेघ जिसे भुईंनीम, किरायत, महातिता आदि नामों से जाना जाता है, एक महत्वपूर्ण औषधि है। जेण्टिनेशी कुल के चिरायता जैसी ही अति कड़वी और समान औषधीय गुणों से भरपूर होने के कारण कुछ लोग कालमेघ को भी चिरायता के नाम से ही पुकारते है। कभी–कभी बाजार में मिलने वाले चिरायता में कालमेघ का भी मिश्रण होता है। *एण्ड्रोग्रैफोलिड, डाईटरपिनोइड्स,* और *फ्लैवोनोइड्स* जैसे यौगिकों के कारण, कालमेघ में जीवाणुरोधी, कवकरोधी व विषाणुरोधी गुण विद्यमान होते हैं।

वानस्पतिक विवरण

कालमेघ एक वार्षिक, भारतीय पौधा है, जिसकी लंबाई 30 से.मी. से लेकर 1 मीटर तक हो सकती है। पत्तियां सरल, छोटे वृन्तयुक्त, अभिमुखी, चिकनी, दीर्घवृत्ताकार से लेकर भालाकार होती है। फूल छोटे, सफेद रंग के और बैंगनी धब्बोंयुक्त होते हैं।

पुष्पन व फलन – अगस्त से मार्च।

वासस्थान व वितरण

पूरे भारतवर्ष तथा श्रीलंका में कालमेघ के पौधे पाये जाते हैं। इनके अलावा वेस्ट इंडीज, जावा आदि देशों में यह वनस्पति उगाई जाती है। यह छायादार स्थानों पर बंजर भूमि में उगता है। नम जगहों पर यह वर्ष भर उगता रहता है। बहुत से स्थानों पर इसकी खेती भी की जाती है।

उपयोगी भाग – पत्तियां, जड़ व पंचांग

* प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ
** विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, हस्तिनापुर, मेरठ
*** असिस्टेंट प्रोफेसर, पादप रोग विज्ञान विभाग, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना

कालमेघ के औषधीय गुण धर्म

- प्रतिजैविक (एन्टीबायोटिक) दवाओं की खोज से बहुत पहले ही इस वनस्पति का प्रयोग विभिन्न संक्रामक बीमारियों के उपचार हेतु किया जाता था। वर्तमान में कालमेघ दर्जनों आयुर्वेदिक औषधियों का मुख्य अवयव है।
- एक औषधीय बूटी के रूप में कालमेघ का प्रयोग एशियाई देशों में आहार नाल व श्वसन तंत्र के संक्रमण, बुखार, अधन्नी (हरपीज) या जुलपित्ती, गलाशोथ आदि रोगों के उपचार हेतु सदियों से होता आ रहा है।
- चीनी ग्रंथों में इसे शरीर की गर्मी कम करने वाली बूटी के रूप में जाना जाता है, तथा इसका प्रयोग बुखार को कम करने व शरीर से विषैले पदार्थो को बाहर निकालने में किया जाता है।
- पिछले दशकों में हुये अनुसंधानों व प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक ग्रंथों के अनुसार कालमेघ एक चमत्कारिक औषधि है, तथा इसमें कफ–पित्तहर, दीपन, पाचन, आम दोषहर, दर्दनाक, भोथहर, यकृत उत्तेजक, पित्तसारक, रेचक, कृमिघ्न, सर्पविषनाशक, रक्तशोधक, नियतकालिक ज्वर प्रतिबंधक (मलेरिया), रक्त–थक्कारोधी, रोगाणुरोधी, (जीवाणु व विषाणुरोधी) रक्त शर्करा नियंत्रक, रोगरोधी क्षमता इत्यादि अनेकों गुण पाये जाते हैं।
- कालमेघ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अत्यधिक औषधीय गुणों से भरपूर होते हुए भी इसके हानिकारक प्रभाव न के बराबर है। कालमेघ का प्रयोग अतिसार, हैजा, मधुमेह, क्षयरोग, इन्फलूएन्जा, फेफड़ों की सूजन, खुजली, बवासीर, सुजाक, सर्पदंश व चर्मरोगों के उपचार में किया जाता है। बच्चों में यकृत विकारों के कारण पाचन शक्ति की कमजोरी व भूख न लगने के उपचार में कालमेघ बहुत ही

प्रभावकारी है। इसके लिये जड़ों का चूर्ण विशेष से प्रयोग किया जाता है।
- पौध स्वरस का प्रयोग रक्तशोधक के रूप में करते हैं। पंचांग से कालमेघाशव नामक आयुर्वेदिक औषधि बनायी जाती है, जिसका प्रयोग विषम या शीत ज्वर, यकृत, प्लीहा–विकारों, पीलिया आदि के उपचार व बलबर्धक के रूप में किया जाता है।
- ताजा पंचाग के लेप का प्रयोग बालों से जुएं (ढील) निकालने हेतु किया जाता है। पत्तियों के जूस का प्रयोग पेट दर्द को ठीक करने में किया जाता है। जड़ों का चूर्ण खुजली के उपचार में प्रयुक्त होता है।
- नवीन अनुसंधानों के अनुसार कालमेघ में एड्सरोधी व कैंसर रोधी क्षमता भी पायी गई है। ❑

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है, जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

कविताएं

कर्णफूल

निशा*

कैसा वह हर्ष रहा होगा,
कितना उत्साह व मर्मस्पर्शी क्षण रहा होगा
जो तात पहली बार आपने मुझे गोद में लिया होगा
उत्सव मनता था जब कुलदीपक का
तब आपने इस कन्या पर स्नेह लुटाया था
कर्णवेध से पहले ही लाए थे
अप्रतिम नन्हें कर्णफूल उपहार में
नन्हें झुमके लगे उनमें
मन मोहते जब इठलाते
वो मनोरम क्षण और स्मृतियां
आज समेट पा न रही मेरी अंखियां
तात ! लज्जित हूं, मन विह्वल है
खो गया मुझसे वो अमूल्य उपहार
कंचन क्षति का दुःख होगा या
जुड़े उससे अपशकुनों का एहसास
किंतु वर्षों से संजोया आभूषण नहीं
मुझको दिया आपका प्रेम प्रतीक था वो
क्षमा करें, खो गया मुझसे वो
मेरे हृदयप्रिय कर्णफूलों को
फिर मैं देख न पाऊंगी
पापा का प्यार निहार न पाऊंगी
यही सोच सोच कर कन्या आपकी
क्रंदन सागर में डूब गई,
याद करके आपको नन्हीं बच्ची
खुद से ही कुछ रुठ गई
लौटा दो मुझको मेरे प्रिय वो कर्णफूल
जो प्रीत चिह्न थे तात के
कैसा ये अनुराग है जनक
जिस नश्वर संसार में शरीर का मोल नहीं
और मैं रोती तुच्छ कनक वस्तु को
आंधी के बाद मन में शांति जैसे छाई है
रहते आप तो कहते
छोड़ो चलो कोई बात नहीं

*तकनीशियन, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, मऊ

हरियाली की नई कहानी

अमनदीप कौर*

बीते हुए कुछ बरसों में, बदली भारत की तस्वीर,
खेती–किसानी ने दी इस देश को नई तकदीर।
रूखा मौसम, बदलता पानी, फिर भी अडिग रहा किसान,
संघर्षों में भी उग आई, हरियाली की नई जान।
पारंपरिक तकनीक से हटकर अब, उगते फूल–फल, सब्जियाँ,
बढ़ी बागवानी, दूध की धार, बदलीं खेती की कार्यनीतियाँ।
भारत बना दूसरा सबसे बड़ा फल–सब्जी का निर्माता,
हर खेत से उगे समृद्धि, अब यही है दृढ़ इरादा।
सटीक सिंचाई, नए उपकरण, और यंत्रों की बढ़ी भागीदारी,
उन्नत बीजों की शक्ति से खिल उठी हर क्यारी।
डिजिटल इंडिया ने जोड़ी सूचना से खेत की डोर,
अब मौसम और बाजार दोनों की सही जानकारी हर ओर।
एग्री–टेक स्टार्टअप, प्राइवेट सेक्टर की बहार,
स्टोरेज, लॉजिस्टिक्स, मंडी सुधार ने खोले नए द्वार।
e-NAM से सीधा जुड़ा किसान मंडियों से अब,
बिचौलियों से मुक्ति, मूल्य पारदर्शिता का बना सबब।
पीएम–किसान, फसल बीमा, जागरूकता की है बात,
न्यूनतम समर्थन मूल्य ने दिया आय में संतुलन का साथ।
नीतियों ने संजोई है ग्रामीण जीवन की आशा,
बढ़ी है खपत, रोजगार, और खुशहाली की भाषा।
श्री अन्न, चावल, मसाले, समुद्री उपज से बढ़ा विदेश व्यापार,
भारत बना कृषि निर्यात में भी एक मजबूत आधार।
रोजगार, आय, सम्मान–सबने पाया नया विस्तार,
कृषि बनी अर्थव्यवस्था की फिर एक मजबूत दीवार।
बदलती जलवायु में भी श्री अन्न रहते हमेशा तैनात,
कम देखभाल में भी, मिले पोषण की भरपूर सौगात।
आने वाले समय में यह होगा खेती का सुकर मार्ग,
श्री अन्न से बढ़ेगा भारत का कृषि गौरव व उल्लास।
उठाओ हर किसान को, दो शिक्षा, तकनीक और मान,
अब न रहे वो सिर्फ कर्ज में डूबा हुआ इंसान।
है सभी को हो ज्ञात यह–जब किसान मुस्कुराएगा,
तभी देश हमारा सही मायनों में खिलखिलाएगा।

*सहायक, भाकृअनुप–भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

शर्म नहीं आती

संदीप बिश्नाई*

घर में साधु बन कर रहते
बाहर व्यभिचारी हो,
अपनी माँ का लाल कहाते
हमको शर्म नहीं आती ।

बहन–बेटियाँ सबकी हैं पर
वो तो घर की देवी हैं
बाहर की नारी है वस्तु
हमको शर्म नहीं आती

नवरात्रों में कन्या पूजन
दुर्गा पूजा में वंदन है
फिर दुराचार उसी धरती पर
हमको शर्म नहीं आती

नारी से ही जन्म लिया है
नारी ही तो भार्या है
फिर भी नारी का उत्पीड़न
हमको शर्म नहीं आती

कहते हैं कि देव हैं बसते
जहां नारियां वंदित हों
हो गए हम देवों से वंचित
हमको शर्म नहीं आती

क्या तभी उठेंगें, जब ऐसा कुछ
अपने किसी के साथ में हो
आँख मूँद कर बैठे हैं हम
हमको शर्म नहीं आती

बहुत हुआ, बस बहुत हुआ
अब और नहीं यह सहना है

*उप सचिव, भाकृअनुप (मुख्यालय), नई दिल्ली

हरा रंग जाने कहाँ से आया है

कमलेश शर्मा*

हरा रंग जाने कहाँ से आया है
धान के हृदय से प्रकट हुआ,
या मन के हर्षों–उल्लास से ।
हरियाली ने प्यार से घूँघट उठाया ।।
हरा रंग
    कोई कहता इसकी जननी प्रकाश है
    कहीं कुलीन वर्ग ने इसका ठेका लिया,
    राजधर्म कहते कि इसके रचयिता हम है ।।
    कानन ने हरियाली को गोद में खिलाया,
    हरा रंग
नदी कि काई, तो दूब कहती मैं जननी
तो इंद्रधनुष कहता मैं हूँ पिता,
कलाकार कहते मेरी आत्मा का रंग है।
विधि ने कैसा खेल रचाया ।।
हरा रंग
    हरे रंग हरियाली से वातावरण शुद्ध होता,
    ग्रीन का उपचार से जुड़ाव होता,
    हरित क्रांति से खाद्य का भंडार बढ़ा,
    हरे रंग ने मन में बहुत धूम मचाया ।।
    हरा रंग
ग्रीन लाइट पर थकी हताश गाड़ियाँ चल पड़तीं,
जगह–जगह जाम से, निजात मिलती,
हरी साग–सब्जियों से स्वास्थ्य सही रहता,
सात रंग में हरा रंग समाया ।।
हरा रंग

*सहायक प्रशासनिक अधिकारी
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर

पंख बना रहा हूँ

मोहनीश पंचारिया*

तय किया था उड़ना,
नीले आकाश में
उड़ान के लिए पंख बना रहा हूँ।
क्षणभंगुर जीवन की,
क्षणभंगुर दिक्कतों में सुराख कर
शंख बना रहा हूँ।
उमंग से भरा घोष भी गूंजेगा,
वही दहाड़ कंठस्थ रहा हूँ।
"सौदा" नहीं होता अब मुरझी आस से,
इस जिद को 'रण' बना रहा हूँ।
तय किया था उड़ना,
उड़ान के लिए पंख बना रहा हूँ।

*सहायक वित्त एवं लेखा अधिकारी, भा.कृ.अनु.प. (मुख्यालय), नई दिल्ली

सराहना की भावना

बी.जी. फाल्के*

मेरे ह्रदय में जाग गई भावना
विश्व में जिनका हुआ योगदान
ऐसे श्रेष्ठ वैज्ञानिक महान
करें उनकी हम सराहना, करें उनकी सराहना ।।

पेड़ से सेब नीचे गिर गया
न्यूटन ने हमें गुरुत्वाकर्षण सिखाया
धन्यवाद है एडिसन को
जिसने दुनिया को प्रकाश दिलाया ।।

मानव उत्क्रांती के जनक चार्ल्स डार्विन
गॅलिलिओ ने बनाई दूरबीन
टेलीफोन पर जब बात होती है
ग्राहम बेल की तब याद आती है ।।

राईट बंधुओं की खोज महान
समर्पित किया है हमें विमान
वाष्पचालित रेलगाड़ी का आविष्कार
जॉर्ज स्टीफेंसन ने किया चमत्कार ।।

धन्यवाद है नॉर्मन बोरलॉग और
एम एस स्वामीनाथन को
हरित क्रांति के जननायक को
वंदन है उनके योगदान को ।।

सराहना है आर्यभट्ट की भारत पुत्र की
जिन्होंने विश्व को शून्य दिया
धन्वंतरि जैसे महान वैज्ञानिक
आयुर्वेद से हमारा जीवन स्वस्थ किया ।
ऐसे श्रेष्ठ वैज्ञानिक महान
करें उनकी हम सराहना, करें उनकी सराहना ।।

*तकनीकी अधिकारी, राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे

कुपित द्रोपदी

ऋषभ नारंग*

ये बुद्ध सभा क्यों मौन पड़ी,
बस बैठ तमाशा देख रही?
कहाँ हैं कुरुवंश के शूरवीर?
कुलवधू का लुट रहा है चीर।
माँ की ममता ये कैसी है?
क्यों सास मेरी चुप बैठी है?
ताऊ तुम देख नहीं सकते,
क्या टेर भी सुन नहीं सकते?
माँ गांधारी पट्टी खोलो,
देखो दृश्य और कुछ बोलो।
हे बुद्धिमानों अब मुख खोलो...
हे भीष्म पितामह कुछ बोलो...
खूब रोई, खूब चिल्लाई,
पर बधिर सभा को लाज न आई।
छोड़ आस, विनय का त्याग करा,
अब द्रौपदी ने रूप रौद्र धरा।
तोड़ लोक–लाज की कलसी,
वो पांडवों पर जमकर बरसी।
हे ज्येष्ठ युधिष्ठिर धर्मराज,
आज धर्म–आडम्बर देख लिया।
जूए में खुद को हारे तो,
पत्नी को कैसे बेच दिया?
भीम के बल को क्या हुआ?
गदा को कैसे छोड़ दिया?
जंजीरों में कैद हो या
भुजाओं ने साथ छोड़ दिया?
पार्थ, मौन क्यों बैठे हो?
साँप तुम्हें क्या सूँघ गया?
स्वयम्वर मीनाक्ष जो साधा था,
गांडीव क्या तुमसे टूट गया?
नकुल–सहदेव, तुम बच्चे हो,
तुम तलवारें क्या उठाओगे!
पाँचों उघड़े यूँ बैठे हो,
लाज मेरी क्या बचाओगे!

शस्त्र क्या लेकर फिरते हो?
चूड़ी पहनो, घुँघरू बांधो।
ललकार में अब वो बात कहाँ!
गलियाँ घूमो, नाच नचाओ।
सुन हँसा वो पापी दुर्योधन,
दुशासन को आदेश दिया,
क्या हुआ मेरे प्रिय अनुज,
तानों ने तो ना घेर लिया?
छोड़ो इसके नाटक को,
क्षण भर अब देर लगाओ ना।
केश खींच घसीट इसे,
मेरी जंघा पर बिठाओ ना।
पाँच पतियों की कुल्टा है,
चीर खींच इसे नग्न करो।
उपहास कर भड़कायी जो,
शांत वो मेरी अग्न करो।
सुनकर धूर्त तिड़छा मुसकाया,
हाथ चीर की ओर बढ़ाया।
एक ओर द्रौपदी आँचल भींचे,
एक ओर दुशासन दामन खींचे।
जब कोई साथ न दिखा खड़ा,
कृष्णा ने कृष्ण को याद करा।
हे माधव... हे माधव मेरी पुकार सुनो।
प्रिय सखी की लाज रखो।
संघर्ष तो मैंने बहुत करा,
भूखे भेड़ों ने घेर रखा।
साड़ी का टुकड़ा बाँधा जो,
सुदर्शन का घाव वो याद करो।
टुकड़े का ऋण तुम आज भरो,
मेरी लाज बचा उपकार करो।"
सखी ने जिस क्षण नाम लिया,
कृष्ण ने वो क्षण थाम लिया।
वस्त्रहीन किये नर सभी,
जो स्वर्ण–सुसज्जित थे कभी।
रेशम के वो सारे कपड़े,
स्तंभों से लिपटे परदे,
सबको कुछ यूँ साथ लिया,
पट्टी–धागों से बाँध दिया।
बड़त–बड़त पट यूँ बड़ा,

लिपट गए अम्बर–धरा।
पट खींच दुशासन शिथिल खड़ा,
मूर्छित हुआ और गिर पड़ा।
अब धैर्य दुर्योधन का टूटा,
मद, काम–भाव सब छूटा।
सोचा, भाई ही मेरा अनाड़ी है,
या नारी–स्वरूप ये साड़ी है!
चकित द्रौपदी हरस उठी,
हर्ष से आँखें चमक उठीं।
सहज पांचाली ने व्यंग्य कसा,
क्या हुआ दुर्योधन, नाग डसा?
मेरे मित्र ने न सिर्फ लाज रखी,
धर्मयुद्ध की नींव रखी।
जा वीरों से तू यारी कर,
शस्त्र जुटा, तैयारी कर।
तेरी भाभी अब न दासी हूँ,
मैं रक्त तेरे की प्यासी हूँ।
जंघा संभाल तू, दुर्योधन...
भीम इसे ही तोड़ेंगे।
दुशासन के रक्त से पांडव
केश मेरे मिल धोएँगे।
मेरी वाणी को विलाप नहीं,
तू क्षत्राणी की ललकार समझ।
अस्मत जिसकी चोटिल करी,
उस शेरनी की हुँकार समझ।

*आशुलिपिक, भाकृअनुप (मुख्यालय), नई दिल्ली

चोरी का एक दिन

अनुपम कुमार चौबे*

सुबह की भागमभाग में
शहर के सपाट रास्तों पर
बोझलता लादे
दफ्तर जाते
मैं अक्सर ही सोचता हूं...
क्यूं न आज मुड़ जाऊं कहीं और
चल पडूं किसी सर्पिल कच्चे रास्ते पर
जिसके छोर पर कोई नदी
बस मेरी ही प्रतीक्षा में बैठी है...
और फिर
भीगी हवाओं की कानाफूसी में
खोये रहस्य को समझूं...
या फिर लहरों की कल–कल में
छुपे संगीत में खो जाऊं...
तो कभी
किसी बहती ठन्डी धार में पाँव डुबा
बैठा रहूं घन्टों
बेसुध.. बेफिक्र...
तो कभी
कागजी कश्तियाँ बना
बहाता चला जाऊं
फाइल के एक एक पन्ने की...
पानी की परतों में
खिसलती मछलियों को
देखता रहूं एकटक
बेझपक...
कभी, पानी पीने आये
किसी मेमने के पीछे
भागूं इधर उधर
कुछ उसी मेमने सा...
या पानी के जिद्दी फलक को
तोड़ता रहूं बार बार
पत्थर उछाल किनारे से
या फिर
किसी तरकुल के इर्द–गिर्द
ढूंढता फिरूं एक बचपन
जो मैं सालों पहले यहीं कहीं छोड़ आया था...

*सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी,
भाकृअनुप–राष्ट्रीय बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, मऊ

अंगूर की शान और अंगूरी राणी

श्री विठ्ठल द. गायकवाड़*

किसानों की प्यारी नाम मेरा अंगूर ।
साथ दूंगी हर बार याद रखना जरूर ।।
हमेशा अपने देश के मार्केट की शान ।
सातों समंदर पर भी मेरी ही पहचान ।।
मै हूँ फल अंगूर का नाम मेरा थॉमसन ।
फलों में सबकी पसंद और अनोखी शान ।।
खाने में मस्त और स्वाद में भी मेरा रुचिरा ।
बच्चों और बीमार को नया शक्ति का सहारा ।।
वैज्ञानिकों के अनुसंधान की अनोखी शान ।
हर प्रजाति में केवल अपनी ही पहचान ।।
छुट्टी हो या त्योहार, खाने में सिर्फ अंगूर ।
बच्चे और बूढ़े, सबको प्यारे मीठे अंगूर।।
अंगूरी का राजा और रंग मेरा गुलाबी ।
अमीरों की पसंद स्वादों में भी शराबी ।।
दिखने मे बड़ा और वजन से भी ज्यादा ।
रेडग्लोब नाम मेरा मधुर रुचि से वादा ।।
धूप में सूखा लो तो किसमिस बनती है ।
मशीन मे डालोंगे तो जूस मिलती है ।।
छोटों को पिलाया तो सेहत बनती है ।
बड़ों को पिलाया तो सेहत चुस्ती आती है ।।
मै हूँ जंगल की बगिया दीवानी। नाम मेरा अंगूरी राणी
सुनो मेरे जीवन की कहानी।घूमने चली खेतों की दीवानी।
वैज्ञानिकों की खोज अपनी। बन गयी किसानों की सयानी।
किसानों की पहली पसंद अपनी।जैसी ससुराल मे दुल्हन नवेली
अप्रैल में कटाई छटाई करते। बहुत सारे उर्वरोकों का प्रयोग करते।
जून जुलाई में पिलाते है पाणी। रूप मेरा देख कर होते है दीवाने।
खिलाते उर्वरक, छिड़कते कीटनाशक। जीवन मे लाती अनोखी महक।
तंदुरुस्त रूप मेरा जीवन की नई उमंग। सपनों की रानी किसानों के संग।
अगस्त, सितंबर में आती है जान। डेरे दार हरा रंग से मेरी पहचान।
अक्टूबर में मेरी फिर से छँटाई। पूरे जीवन में लाई नई रोशनाई।
नवंबर दिसंबर में बहारे फुल। देखते देखते रह जाते है गुल।
जनवरी में मेरा श्रृंगार न्यारा। देखने में लगे सबको प्यारा।
फरवरी में देखो मेरा रूप निराला। फल लगे हरे गुलाबी सफेद काला।
खाने में सभी की पहली पसंद। खाते खाते सभी को मिलता है आनंद।
टेबल में फलों का मेरा पहला स्थान। देश विदेशों में भी अनोखी पहचान।
फलों से बनती है काँड़ी, ज्यूस। बच्चे, बूढ़े खाते पीते हो जाते है खुश।
इसके फलों से बनती है वाईन। इसके पीने से दिनको भी आती है शाईन।
मिट जाती है शरीर की बीमारी। बस नहीं होनी चाहिए आदत की मजबूरी
फलों को सुखा कर बनाते हैं बेदाना। खाने में मीठा और सेहत का खजाना।
बच्चों की बीमारी में शक्ति का राज। जो खाये उसके शक्ति मे तंदरुस्ती का इलाज।

*सहायक, राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे

राजभाषा खंड

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय एवं परिषद के विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों/ब्यूरो आदि की राजभाषा गतिविधियां

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (मुख्यालय), नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

परिषद मुख्यालय में दिनांक 14 से 30 सितम्बर, 2024 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े का आरंभ दिनांक 14 और 15 सितम्बर, 2024 को माननीय गृह मंत्री की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस और अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन के साथ हुआ जो भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। परिषद मुख्यालय में पखवाड़े की अवधि के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें परिषद के वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने के लिए परिषद मुख्यालय में वार्षिक हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 15 अक्टूबर, 2024 को किया गया। इस दिन पुरस्कार विजेताओं को प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए। पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता अपर सचिव एवं वित्त सलाहकार, डेयर/भाकृअनुप श्रीमती अलका अरोड़ा जी ने की। इसी समारोह में परिषद की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "राजभाषा आलोक" के वर्ष 2023 के अंक (27वें अंक) का विमोचन भी किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की गति बनाए रखने के लिए तथा सरकारी काम–काज में हिंदी के कार्यान्वयन में समय–समय पर आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के लिए मुख्यालय में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता रहा है। इसी क्रम में रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान परिषद मुख्यालय में विभिन्न वर्गों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

वर्ष के दौरान सचिव महोदय की अध्यक्षता में डेयर सहित परिषद मुख्यालय की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में आयोजित की गयीं।

राजभाषा निरीक्षण

परिषद मुख्यालय के अधीनस्थ आने वाले संस्थानों में हिन्दी की प्रगति का जायजा लेने के लिए इस अवधि के दौरान अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण किया गया और पाई गई कमियों को दूर करने के उपाय सुझाए गए। वर्ष 2024 के दौरान परिषद के कुछ संस्थानों/केन्दों का माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण किया गया। परिषद के संस्थानों के निरीक्षण कार्य काफी हद तक सफल रहे तथा कहीं प्रशंसा तो कहीं आलोचना दोनों ही से राजभाषा कार्यान्वयन के कार्यों को बल मिला।

मूल रूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना

सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में किए जाने को प्रोत्साहन देने के लिए परिषद मुख्यालय में नकद पुरस्कार योजना चलाई जाती है। इस योजना के अंतर्गत हिन्दी में अधिकाधिक काम करने वाले 10 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।

संस्थानों से प्राप्त हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा

परिषद के अधीन आने वाले विभिन्न संस्थानों/केन्द्रों आदि से प्रत्येक तिमाही की समाप्ति पर राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी तिमाही प्रगति रिपोर्ट परिषद मुख्यालय को भेजी जानी अपेक्षित होती है। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति संबंधी तिमाही रिपोर्टों की नियमित रूप से समीक्षा की गई और भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक सुझाव दिए गए।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए अन्य कार्य

- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप–समिति द्वारा इस अवधि के दौरान किए गए निरीक्षणों के समय संस्थानों/केन्द्रों द्वारा दिए गए आश्वासनों को पूरा किए जाने से संबंधित रिपोर्टें भी सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के उपरांत संसदीय समिति सचिवालय को नियत अवधि में प्रस्तुत की गयीं।
- वर्ष की इस अवधि के दौरान संसद के सत्रों में संसदीय प्रश्नों/संसद में पेश की जाने वाली रिपोर्टों/कैबिनेट नोट इत्यादि से संबंधित विभिन्न कार्य संपन्न किए गए।
- परिषद के विभिन्न प्रभागों/अनुभागों से प्राप्त तकनीकी/प्रशासनिक प्रकृति के सभी अनुवाद कार्य समय पर संपन्न किए गए।
- माननीय कृषि मंत्री/कृषि राज्य मंत्री के कार्यालयों से प्राप्त विभिन्न सामग्री/वक्तव्यों/भाषणों आदि का अनुवाद निर्धारित समय–सीमा में किया गया।
- इसके अतिरिक्त, अनेक अनुभागों से प्राप्त रोजमर्रा के अनुवाद कार्यों सहित अन्य कार्य समय पर पूर्ण किए गए, जिनमें शासी निकाय/वार्षिक आम बैठक संबंधी अनुवाद कार्य भी शामिल हैं।

भाकृअनुप-भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

संस्थान में 14 से 30 सितम्बर, 2024 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े का आयोजन एवं इससे संबन्धित प्रतियोगताएं दिनांक 18 से 30 सितम्बर, 2024 के दौरान आयोजित की गईं। दिनांक 18 सितम्बर, 2024 को काव्य–पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान संस्थान के प्रभागों के लिए चल–शील्ड प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें वैज्ञानिक प्रभागों में कार्यरत वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मियों द्वारा वित्त वर्ष 2023–24 के दौरान राजभाषा हिंदी के लिए प्राप्त सम्मान/पुरस्कारों, हिंदी में लिखे एवं प्रस्तुत किए गए शोध पत्रों, हिंदी में दिए व्याख्यानों एवं सेमीनारों, हिंदी कार्यशालों के आयोजनों, शोध पत्र प्रस्तुति इत्यादि वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के कार्यों के आधार पर प्रभागीय चल–शील्ड प्रतियोगिता के परिणाम का निर्धारण किया गया।

संस्थान के वैज्ञानिकों के लिए हिंदी भाषा में "डिजिटल हिंदी शोध–पोस्टर प्रस्तुति" प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में वैज्ञानिकों द्वारा मूल शोध पर हिंदी भाषा में डिजिटल प्रस्तुतियां की गयी जिसमें से श्रेष्ठ प्रस्तुतियों को पुरस्कृत किया गया।

साथ ही, हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदीत्तर कार्मिकों के लिए शब्दार्थ लेखन प्रतियोगिता के साथ–साथ हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के विभिन्न वर्ग के कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

हिंदी पखवाड़े का समापन

दिनांक 30 सितम्बर, 2024 को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान में डॉ. दारोगा सिंह समृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस वर्ष कड़ी का तैंतीसवां व्याख्यान राष्ट्रीय प्रतिदर्श कार्यालय (एन.एस.एस.ओ.) के पूर्व महानिदेशक श्री राकेश कुमार त्यागी द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक द्वारा की गई। दिनांक 30 सितम्बर, 2024 को हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की गई। इसके अतिरिक्त, इस अवसर पर अक्टूबर, 2023 से अगस्त, 2024 तक की अवधि के दौरान संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं के वक्ताओं को प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए जाने की भी घोषणा की गयी।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

- जनवरी–मार्च, 2024 की तिमाही के दौरान संस्थान में वैज्ञानिक एवं तकनीकी वर्ग के कर्मियों के लिए संस्थान के संगणक अनुप्रयोग प्रभाग द्वारा, दिनांक 06–08 मार्च, 2024 को ''कृषि शिक्षा में डिजिटल पहल'' विषय पर (03 दिवसीय) हिंदी कार्यशाला का ऑफ–लाइन आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 14 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।
- अप्रैल–जून, 2024 की तिमाही के दौरान संस्थान में वैज्ञानिक एवं तकनीकी वर्ग के कर्मियों के लिए संस्थान के कृषि जैव सूचना विज्ञान प्रभाग द्वारा दिनांक 27 जून 2024 को एक पूर्ण दिवसीय कार्यशाला का ऑन–लाइन आयोजन किया गया जिसका विषय ''कृषि शिक्षा में ओमिक्स डेटा विश्लेषण का परिचय'' था। इस कार्यशाला में कुल 17 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।
- जुलाई–सितम्बर, 2024 की तिमाही के दौरान संस्थान में वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कर्मियों के लिए दिनांक 11 सितम्बर, 2024 को एक कार्यशाला ऑफ–लाइन आयोजित की गई जिसका विषय "परिषद में ई–गवर्नेस का अनुप्रयोग" था। इस कार्यशाला में कुल 26 कर्मियों ने सहभागिता की।

- अक्टूबर–दिसम्बर, 2024 की अवधि के दौरान संस्थान में वैज्ञानिक एवं तकनीकी वर्ग के कर्मियों के लिए दिनांक 19 दिसम्बर, 2024 को एक कार्यशाला का आयोजन ऑफ–लाइन ढंग से किया गया। कार्यशाला का विषय ''परीक्षण अभिकल्पनाएं एवं विश्लेषण'' था। इस कार्यशाला में कुल 23 कर्मियों ने सहभागिता की।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री जी द्वारा प्रेरणापद संदेश को संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच परिचालित किया गया और अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए अनुरोध किया गया। संस्थान के निदेशक ने भी एक अपील जारी करके सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अधिकाधिक प्रशासनिक कामकाज हिन्दी में करने का अनुरोध किया।

संस्थान में 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2024 तक राजभाषा पखवाड़ा उल्लास के साथ मनाया गया है इस दौरान हिन्दी को बढ़ावा देने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। राजभाषा पखवाड़ा को बढ़ावा देने के तहत हिन्दी निबंध, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, काव्य पाठ, आशुभाषण, तथा वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के समापन के दिन विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किये गये। कुछ प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार भी दिये गये।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान में हिन्दी में अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए एक दिवसीय चार कार्यशालाओं का आयोजन संस्थान एवं संस्थान के बाहर किया गया। प्रथम कार्यशाला "किसानों की अधिक आय एवं जोखिम को कम करने के लिए केन्द्र सरकार की योजनाएं" विषय पर 23 जून 2024 को आयोजित की गई। दूसरी कार्यशाला "स्वास्थ्य सेवाएं सभी के लिए मुफ्त होनी चाहिए" विषय पर 23 सितम्बर 2024 को आयोजित की गयी। इसी क्रम में तीसरी कार्यशाला का आयोजन "उच्च पशुधन उत्पादन के लिए विभिन्न डेयरी सेवाओं का योगदान" विषय पर 13 नवम्बर 2024 की आयोजित की गयी तथा चौथी कार्यशाला "ईएचआरएमएस के माध्यम से मानव संसाधन प्रबंधन में दक्षता एव पारदर्शिता" विषय पर 17 जनवरी 2025 को आयोजित की गयी। उपरोक्त कार्यक्रमों के आयोजन में डा. विकास कुमार ने काफी सराहनीय योगदान दिया।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी, हैदराबाद

भाकृअनुप-नार्म में दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा कार्यशाला संपन्न

भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (नार्म) में राजभाषा कार्यान्वयन की व्यावहारिक अनुपालनीयता विषय पर 28–29 मई, 2024 के दौरान दक्षिण क्षेत्रीय राजभाषा कार्यशाला संपन्न हुई। इस कार्यशाला में कुल 25 सहभागियों ने भाग लिया, इसमें

वैज्ञानिक संस्थानों में हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग, प्रौद्यौगिकी हस्तांतरण में भाषाओं का महत्व–व्यावहारिक अनुप्रयोग, राजभाषा कार्यान्वयनः दक्षिण क्षेत्र में अनुपालनीयता समस्या समाधान, सहभागियों द्वारा प्रस्तुतियाँ व विचार मंथन सत्र सम्मिलित थे। विशेष सत्र के रूप में वैज्ञानिक लेख सार हिंदी प्रस्तुतियाँ, तनाव प्रबंधन, संशोधित संसदीय निरीक्षण प्रश्नावली भरते समय ध्यान देने योग्य विषय इत्यादि प्रमुख रहे।

अकादमी में 29 मई, 2024 को डॉ. सी.एच. श्रीनिवास राव, निदेशक, नार्म की अध्यक्षता में समापन कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में दक्षिण क्षेत्र के विभिन्न कार्यालयों से राजभाषा अधिकारी, हिंदी कार्य से जुड़े वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों ने उत्साह से भाग लिया। डॉ. जे. रेणुका, संयुक्त निदेशक (राष्ट्रभाषा) एवं कार्यक्रम निदेशक ने सभी का स्वागत किया तथा रेखांकित किया कि इस क्षेत्रीय राजभाषा कार्यशाला के आयोजन की संकल्पना एवं योजना का संपूर्ण श्रेय निदेशक महोदय को ही है।

मुख्य अतिथि श्री होमनिधि शर्मा, उप–महाप्रबंधक भारत डॉयनॉमिक्स लिमिटेड़ हैदराबाद द्वारा वैज्ञानिक सामुदाय से आग्रह किया गया कि यथासंभव व्यावहारिक रूप में हिंदी का प्रयोग अवश्य करें। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. सी.एच. श्रीनिवास राव, निदेशक, नार्म ने स्पष्ट किया कि भाषा स्नेह से ही सिखाई जा सकती है। उन्होंने नार्म में आयोजित फोकार्स नव वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण में दिए जा रहे भिन्न भाषाओं के प्रशिक्षण पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के सहभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए गये। साथ ही नार्म–हरित परिसर नामक पुस्तिका का विमोचन निदेशक महोदय द्वारा किया गया। यह भाषाई बेला, सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन के पश्चात धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुई।

राजभाषा पर्व संपन्न

भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकदमी में बड़े उत्साह एवं उमंग से राजभाषा का पर्व 14 से 27 सितंबर, 2024 के दौरान मनाया गया। 14 सितंबर 2024 को अपने संदेश में संस्थान के निदेशक डॉ. सी.एच. श्रीनिवास राव ने अकादमी के संकाय सदस्य, अधिकारी एवं कर्मचारी सदस्यों को हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग करने की सलाह दी। साथ ही विद्यार्थियों को हिंदी के साथ साथ दक्षिण भाषाओं की जानकारी रखने संबंधी मार्गदर्शन दिया एवं अकादमी द्वारा भी फोकार्स–कृषि अनुसंधान सेवा के नव वैज्ञानिकों को विविध दक्षिण क्षेत्रीय भाषाओं के शिक्षण दिये जाने की सूचना दी। अकादमी में सदैव भाषा को व्यावहारिक रूप से पल्लवित करने का प्रयास किया जाता रहा है। इस दिशा में राजभाषा को नव रूप से पनपाने हेतु प्रशासनिक, वित्त एवं तकनीकी अधिकारी व कर्मचारियों के लिए आलेखन व टिप्पण, निबंध, केवल एक मिनट, गायन व अंत्याक्षरी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। प्रबंधन से जुड़े विद्यार्थियों के लिए वाद–विवाद एवं गायन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। वैज्ञानिक सामुदाय के लिए विशेषतः वैज्ञानिक सार लेख प्रस्तुति (हिंदी में) संपन्न हुई, जिसमें कई वैज्ञानिकों ने अत्यंत सहज एवं प्रभावी ढंग से शोधपत्र हिंदी में प्रस्तुत किए।

समापन कार्यक्रम 27 सितंबर, 2024 को संपन्न हुआ, जिसका शुभारंभ श्री विवेक पुरवार, प्रशासनिक प्रमुख के स्वागत से हुआ। इन्होंने 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। डॉ. जे. रेणुका, संयुक्त निदेशक (राष्ट्रभाषा) ने अकादमी में राजभाषा कार्यान्वयन को व्यावहारिकता से कार्यान्वित करने संबंधी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में निदेशक

महोदय द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन 2023 हिंदी संस्करण का विमोचन किया गया।

डॉ. सी.एच. श्रीनिवास राव, निदेशक महोदय ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र वितरित किए। निदेशक महोदय ने कहा कि भारत एक विशाल, बहुभाषिक, समृद्ध देश है, हमारे भारतीय देश विदेशों में उच्च पद पर सुशोभित हैं, हमें उन पर गर्व है। उन्होंने सभी को सरल हिंदी जो देश की संपर्क भाषा रही है, को सीखने की अभिप्रेरणा दी। उन्होंने रेखांकित किया कि विभिन्न भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने से प्रत्येक का व्यक्तित्व निखरता है।

वैज्ञानिक क्षेत्र में हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग

यह अकादमी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का एक प्रमुख शैक्षणिक शीर्ष संस्थान है, जहाँ कृषि अनुसंधान सेवा के चयनित फोकार्स प्रशिक्षुओं को कृषि अनुसंधान एवं प्रबंधन में बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस उन्नत योगदान को ध्यान में रखते हुए हमारे वैज्ञानिक बंधुओं को प्रेरित किया जाता है कि वें वैज्ञानिक/समसामायिक लेखों का सार हिंदी में प्रस्तुत करें। धान की खेती विषय पर दिनांक 27 सितंबर को 2024 को डॉ. के.एन. यामिनी, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा हिंदी में एक प्रभावशाली प्रस्तुति दी गई।

राजभाषा का अभिमुखीकरण सत्र

अकादमी में राजभाषा कार्यान्वयन के सुचारू अनुपालन की दिशा में वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारियों के लिए "केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन" के प्रति अभिमुखीकरण सत्र दिनांक 28 अक्तूबर, 2024 को आयोजित किया गेया। डॉ. जे. रेणुका, संयुक्त निदेशक (राष्ट्रभाषा) द्वारा सहभागियों को हिंदी में कार्य करने हेतु अभिप्रेरित करते हुए वैज्ञानिक तथा कार्यालयीन स्तर पर भाषा के महत्व को बताते हुए केंद्रीय सरकारी भाषा प्रणाली के प्रति सहभागियों को अभिमुखीकृत किया गया।

भाकृअनुप-केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई

हिंदी दिवस/पखवाड़ा एवं हिन्दी चेतना मास 2024 का आयोजन

भाकृअनुप–केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, माटुंगा, मुंबई में 1 सितंबर से 30 सितंबर 2024 तक राजभाषा हिंदी के सम्मान में हिंदी चेतना मास एवं दिनांक 14 से 30 सितंबर के दौरान हिंदी दिवस/पखवाड़ा मनाया गया। माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की अध्यक्षता में 14 सितंबर 2024, को हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन के साथ भारत मंडपम, नई दिल्ली में शुरू हुआ।

हिंदी चेतना मास के दौरान हिंदी को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें शुद्धलेखन/सुलेखन एवं निबंध लेखनः केवल कुशल सहायक कर्मचारियों के लिये एवं सभी के लिये, टिप्पण लेखन; केवल 'ग' क्षेत्र के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए तथा सभी के लिये तकनीकी वाक्यांश, कविता पाठ, अंत्याक्षरी, वर्ग पहेली, युनिकोड टंकण, आशुभाषण प्रतियोगिताएं शामिल थीं। इनमें संस्थान के सभी वैज्ञानिक, प्रशासनिक, सहायक कर्मचारी और एस.आर.एफ./वाई.पी. तथा आउट सोर्सिंग अंतर्गत कार्य करने वाले कर्मचारियों ने भाग लिया।

समापन समारोह में डॉ. एस.के. शुक्ल, निदेशक ने कहा कि एक भाषा के रूप में हिंदी देश भर के लोगों को एकजुट करती है और कर्मचारियों को गहरी भागीदारी के साथ काम करने में मदद करती है।

समापन दिवस समारोह में मुख्य अतिथि डा. दिनेश पाठक, अध्यक्ष एवं सहयोगी आचार्य हिंदी विभाग, एस.आई.ई.एस. कॉलेज, सायन, मुंबई ने संस्थान के नियमित सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के लिये संस्थान द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों के लिये कार्मिकों को बधाई दी एवं संस्थान के सभी कर्मचारियों को पूरे समाज के लाभ और सुधार के लिये मातृभाषा का उपयोग करने की आवश्यकता के बारे में भी जागरुक किया।

डॉ. डी.एम. कदम, विभागाध्यक्ष एवं अध्यक्ष हिंदी दिवस/ पखवाड़ा आयोजन समिति के अध्यक्ष ने कहा कि संस्थान में हिंदी कार्यान्वयन के ये प्रयास निरंतर जारी रहने चाहिए।

सरकारी कामकाज में टिप्पण/आलेखन मूलरुप से हिंदी में करने हेतु चलाई जा रही प्रोत्साहन योजना में सहभागिता करनेवाले कर्मचारियों को वर्ष 2023–24 के लिए पुरस्कार प्रदान किये गये। समापन समारोह में वर्ष 2023–24 के लिए सर्वोत्कृष्ट हिंदी कार्यान्वयन हेतु दी जानेवाली राजभाषा चल–वैजयंती शील्ड़ प्रदान करने के लिए प्रशासनिक अनुभागों में प्रशासन एकक (कार्मिक अनुभाग) तथा वैज्ञानिक अनुसंधान विभागों में रासायनिक एवं जैव रासायनिक प्रक्रिया विभाग को चुना गया।

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

दिनांक 1.1.2024 से 31.12.2024 की कालावधि में संस्थान में कुल 4 कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक एवं कुशल सहायक कर्मचारियों को हिन्दी में कुशलता पूर्वक कार्य करने हेतु उचित प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशालाओं का विवरण निम्नलिखित हैः

- दिनांक 27 मार्च, 2024 को संस्थान के सभी के वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों के लिए ऑन लाईन माध्यम और प्रत्यक्ष रुप में सरकारी कार्यालयों में राजभाषा की संभावनायें विषय पर व्याख्याता डॉ. महेंद्र कुमार साहु, मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं हिंदी विभाग, एन.बी.एस.एस. एवं लुप, नागपुर ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 50 कर्मचारियों/ अधिकारियों ने लिया।
- सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 28 जून, 2024 को ओटाई प्रशिक्षण केंद्र, नागपुर द्वारा ऑनलाईन माध्यम और प्रत्यक्ष रुप में राजभाषा हिंदी का प्रचार क्यों और कैसे विषय पर व्याख्याता श्री मनोज कुमार पाण्डेय, सहायक प्रोफेसर, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर वश्वविद्यालय, नागपुर ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 53 कर्मचारियों/ अधिकारियों ने लिया ।
- दिनांक 09 सितबंर, 2024 को सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए ऑन लाईन माध्यम और प्रत्यक्ष रुप में यूनिकोड टंकण विषय पर डॉ महेंद्र जैन, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 53 अधिकारियों/कर्मचारियों ने लिया ।
- दिनांक 30 दिसंबर, 2024 को ओटाई प्रशिक्षण केंद्र, नागपुर द्वारा ऑन लाईन माध्यम और प्रत्यक्ष रुप में आयोजित कार्यशाला में सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए राजभाषा के कार्य में कठिनाई और उनका व्यावहारिक समाधान विषय पर व्याख्याता श्री एस.पी. सिंह, विशेष कार्य अधिकारी हिंदी ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 53 कर्मचारियों/अधिकारियों ने लिया।

राजभाषा संबंधी प्रमुख उपलब्धियां

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की कुल 4 बैठकें आयोजित की गई। डा. एस.के. शुक्ल, निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 15.02.2024, 26.04.2024, 29.07.2024 एवं 19.11.2024 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न हुई। संस्थान के निदेशक डॉ. एस.के. शुक्ल ने दिनांक 27.05.2024 और दिनांक 25.10.2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई की अर्धवार्षिक बैठक में भाग लिया।

अन्य गतिविधियां

भाकृअनुप-के.क.प्रौ.अनु.स. द्वारा दिनांक 3 दिसंबर, 2024 को स्थापना दिवस एवं शताब्दी समारोह का आयोजन

आईसीएआर–सीआईआरसीओटी, को वर्ष 1924 में स्थापित किया गया था। 3 दिसंबर 2024 को राष्ट्र की सेवा में 100 वर्ष पूरे होने का गौरवपूर्ण अवसर मनाया गया। इस ऐतिहासिक अवसर को चिह्नित करने के लिए एक भव्य समापन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति ने डॉ. (श्रीमती) सुदेश धनखड़ के साथ मिलकर 'एक पेड़ माँ के नाम' पहल के तहत पौधारोपण किया।

राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

भाकृअनुप–के.क.प्रौ.अनु.सं ने 27 सितंबर 2024 को 'भारत में कपास की चुनाई के यंत्रीकरण को सफलतापूर्वक अपनाने के लिए चुनौतियाँ और रणनीतियाँ' विषय पर हाइब्रिड मोड में एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्देश्य कपास यंत्रीकरण में अब तक हुई प्रगति का आकलन करना, कमियों की पहचान करना तथा भारत में कपास की चुनाई के पूर्ण यंत्रीकरण को प्राप्त करने के लिए चुनौतियाँ और रणनीतियाँ तैयार करना था।

डॉ. एस.के. शुक्ल, निदेशक, भाकृअनुप – के.क.प्रौ. अनु.सं ने उल्लेख किया कि पिछले दो दशकों में, कपास की चुनाई और जिनिंग के यंत्रीकरण के कई पहलुओं पर सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किया गया है। उनका विचार था कि केवल यांत्रिक कपास चुनाई वाले यंत्रों का विकास कपास मशीनीकरण की चुनौती का समाधान नहीं करता है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कपास यंत्रीकरण में कुछ चुनौतियों का समाधान पीपीपी मोड में अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से किया जा सकता है।

डॉ. वी. जी. आरुडे, प्रधान वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव ने पूर्ण कपास यंत्रीकरण को सफलतापूर्वक अपनाने के लिए व्यापक रणनीतियाँ प्रस्तुत कीं। उन्होंने मशीन से चुनी गई कपास की सफाई और ओटाई के लिए एक केंद्रीकृत पायलट संयंत्र सुविधा बनाने की आवश्यकता दोहराई। राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर 'कपास चुनाई और प्रसंस्करण का यंत्रीकरण' पर तकनीकी लेख का संग्रह जारी किया गया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल

हिन्दी पखवाड़ा उत्सव 2024 का आयोजन

केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल के द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, मुख्यालय, कृषि भवन, नई दिल्ली के निर्देशानुसार संस्थान में 14–28 सितम्बर, 2024 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस के अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सी. आर. मेहता की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों, प्रशासन एवं वित्त से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों, तकनीकी श्रेणी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों, प्रोजेक्ट–कर्मियों, संविदा–कर्मियों एवं विद्यार्थियों के लिए 8 प्रतियोगिताओं–हिन्दी रंगोली प्रतियोगिता, हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिता, हिन्दी पोस्टर प्रतियोगिता, हिन्दी गीत अन्ताक्षरी प्रतियोगिता, हिन्दी क्विज प्रतियोगिता, हिन्दी वाद विवाद प्रतियोगिता, हिन्दी तकनीकी लिखित प्रतियोगिता एवं हिन्दी दमशराज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा आयोजन समिति की अध्यक्षा डॉ. नीता खांडेकर की अगुवाई में समिति के सदस्यों डा. बिक्रम ज्योति, डॉ. हर्षा वाकुडकर, श्री राजेश तिवारी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, श्रीमती दीपिका शेन्डे, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी तथा सदस्य सचिव श्री राकेश कुमार, उप निदेशक ने हिन्दी पखवाड़ा की विभिन्न गतिविधियों तथा प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

संस्थान के निदेशक डॉ. सी. आर. मेहता की अध्यक्षता तथा प्रोफेसर सी.सी. त्रिपाठी, निदेशक, एनआईटीटीटीआर, भोपाल के मुख्य आतिथ्य में दिनांक 03.10.2024 को संस्थान के रजत जयंती सभागार में आयोजित किए गए राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण–पत्र से सम्मानित कर सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग, प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहित किया गया।

संस्थान के हिन्दी प्रकाशनों की सूची

- कृषि अभियांत्रिकी दर्पण (पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित)
- संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन (आंशिक रूप से द्विभाषी)
- वार्षिक छुट्टियों का कैलेंडर (हिन्दी में)

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

संस्थान के 22 नवनियुक्त तकनीशियन श्रेणी–1 एवं 06 एसएमएस/विषय विशेषज्ञ कर्मचारियों के लिए दिनांक 20 जून 2024 को निदेशक समिति कक्ष में एनआईसी मेल एक्टिवेशन विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें श्री अभिषेक यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने प्रतिभागियों को एनआईसी मेल एक्टिवेशन, ईएचआरएमएस, वेबमेल, ईऑफिस आदि अकाउंट को एक्टिवेट करने, उसका प्रयोग करने आदि के बारे में प्रशिक्षित किया। इसी दिन निदेशक समिति कक्ष में उपरोक्त 28 कर्मचारियों के लिए "सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग" विषय पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री राकेश कुमार उप निदेशक, (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं की प्रारंभिक जानकारी देते हुए सरकारी कामकाज के दौरान राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने एवं इस दौरान आने वाली समस्याओं का समाधान किया एवं प्रशिक्षण प्रदान किया।

अन्य गतिविधियां

- संस्थान के निदेशक (कार्यालय प्रमुख) की अध्यक्षता में संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिनांक 18 अक्तूबर 2022 से गठित है। निदेशक की अध्यक्षता में इस समिति की प्रत्येक तिमाही में बैठक आयोजित की जाती है तथा बैठक में निर्णित बिन्दुओं पर तत्परतापूर्वक कार्रवाई की जाती है। बैठकों के कार्यवृत्त परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–भोपाल, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति समन्वय कार्यालय–भोपाल के साथ–साथ संस्थान के सभी प्रभागों एवं अनुभागों को निर्णित बिन्दुओं की अनुपालना हेतु पृष्ठांकित की जाती है। इस समिति की तिमाही बैठकें दिनांक 23.01.2025, 17.09.2024, 21.06.2024 एवं 06.04.2024 को आयोजित की गई।
- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही रिपोर्टें एवं संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की हिन्दी बैठकों के कार्यवृत्त परिषद मुख्यालय तथा राजभाषा विभाग को ऑनलाइन प्रेषित किए जाते हैं। तिमाही हिन्दी बैठकों के कार्यवृत्तों एवं तिमाही प्रगति रिपोर्टों पर परिषद मुख्यालय व राजभाषा विभाग,

नई दिल्ली से प्राप्त हुई अभ्युक्तियों एवं मार्गदर्शन के अनुसार अक्षरशः अनुपालना किया जाता है तथा इंगित की गई कमियों का तत्काल निराकरण किया जाता है।

- संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी तिमाही हिन्दी प्रगति रिपोर्ट को प्रत्येक तिमाही के अंत में राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर कार्यालय कोड ओएफएमपी3845 के अन्तर्गत समय पर अपलोड किया जा रहा है।
- राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(4) का अनुपालन सुनिश्चित करने एवं मॉनीटरिंग हेतु संस्थान के कार्यालय आदेश दिनांक 10.5.2024 के तहत जांच बिन्दु बनाए गए हैं।

भाकृअनुप-केंद्रीय कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी संस्थान सीफेट, लुधियाना

कृषि प्रसंस्करण के क्षेत्र में कार्यरत भाकृअनुप–केन्द्रीय कटाई उपरान्त अभियांत्रिकी एवं प्रौद्यिगिकी संस्थान (सीफेट), लुधियाना ज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ–साथ किसान, युवाओं एवं बेरोजगारों को उद्यमी बनाने की ओर अग्रसर है एवं इन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर इनकी आजीविका में सुधार करने में मदद करता है। भाकृअनुप–सीफेट देश भर के लोगों को कृषि फसलों, दलहन, तिलहन, बागवानी फसलों, पशुधन और मत्स्य उत्पाद के क्षेत्र में सस्योत्तर प्रसंस्करण में संवेदनशील बनाने और प्रशिक्षित करने में तत्पर है। भाकृअनुप–सीफेट, लुधियाना देश के प्रमुख संस्थानों में से एक अनुसंधान संस्थान है जो प्रौद्योगिकी विकास, प्रशिक्षण एवं प्रसार की दिशा में कार्य करता है। प्रौद्योगिकी विकास के साथ–साथ विकसित प्रौद्योगिकियों को हितधारकों तक पहुंचाने के लिए क्षेत्रीय एवं राजभाषा का प्रयोग करता है ताकि अधिकाधिक जनभागीदारी हो सके एवं लोग लाभान्वित हो सकें। इस कड़ी में संस्थान द्वारा राजभाषा हिंदी की तिमाही कार्यशाला का आयोजन किया जाता है जिसमे हिंदी के विद्वानों के व्याख्यान द्वारा राजभाषा हिंदी के उपयोग को बढाने की दिशा में प्रयास किये जाते है। इस सन्दर्भ में लुधियाना, देश–विदेश के अन्य भागों से विभिन्न वक्ताओं के व्याख्यान आयोजित किये जा चुके हैं। संस्थान नियमित रूप से प्रत्येक वर्ष उत्तरोतर उल्लास के साथ हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाडा का आयोजन करता है, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेती है। सीफेट में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन की गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं:

तिमाही कार्यशाला का आयोजन

संस्थान नियमित रूप से हिंदी के विद्वानों को आमंत्रित कर राजभाषा हिंदी की तिमाही कार्यशालाओं का सफल आयोजन करता है। राजभाषा हिंदी में कार्य करने को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए पिछले दो कार्यशालाओं से सस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी के अलावा लुधियाना में स्थित भाकृअनुप के दो अन्य संस्थानों भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंस्थान संस्थान, लुधियाना एवं भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), लुधियाना, के कार्मिकों को भी आमंत्रित किया गया।

जनवरी–मार्च (05.02.2024)	श्रीमति सुषमा मल्होत्रा, सहायक व्याख्याता, सिटी यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क	वैश्विक परिदृश्य में राजभाषा हिंदी एवं इसके वैश्विकरण की संभावनाएं एवं चुनौतियाँ
अप्रैल–जून (27.06.2024)	डॉ. नीरोत्तमा शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, मालवा सैन्ट्रल कॉलेज ऑफ एजुकेशन लुधियाना	कार्यालय उपयोग में राजभाषा हिंदी
जुलाई–सितंबर (16.08.2024)	श्री अनिल 'गुप्त', सेवानिवृत मंडल प्रबंधक, भारतीय साधारण बीमा निगम	राजभाषा हिंदी: कल, आज और कल
अक्टूबर–दिसंबर (25.11.2024)	डॉ. तीर्थंकर देब, प्रोफेसर एवं प्रभागाध्यक्ष, फार्माकोलॉजी, एम्स, कल्याणी, कोलकाता	स्वास्थ्य और अध्यात्मः वैज्ञानिक दृष्टिकोण''

तिमाही बैठकें

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित आयोजन किया जाता है। बैठकों के कार्यवृत नियमित रूप से जारी किये जाते हैं और

परिषद मुख्यालय द्वारा आवश्यक कार्रवाई की जाती है। राजभाषा विभाग एवं नराकास से समय–समय पर प्राप्त आदेशों का अनुपालन किया जाता है।

हिन्दी दिवस एवं राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14 सितंबर, 2024 को 'हिन्दी दिवस' एवं 14 सितंबर से 15 दिनों तक राजभाषा 'हिन्दी पखवाड़ा 2024' मनाया गया। समारोह का उद्घाटन दिनांक 14 सितम्बर 2024 को डॉ. आर.के. विश्वकर्मा, प्रभारी निदेशक, भाकृअनुप– सीफेट, लुधियाना द्वारा किया गया। इस अवसर पर वैज्ञानिक एवं कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए उन्होने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए दिनचर्या में सरल शब्दों के प्रयोग पर जोर दिया। उन्होंने भा.कृ.अनु.प.–सीफेट, लुधियाना में वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक कार्यो में हो रहे हिन्दी के प्रयोग की सराहना की एवं प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया। उन्होने संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों से अनुरोध किया कि वे अपने शोध–पत्रों को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने पर जोर दें। डॉ. अभिनव दुवे, वैज्ञानिक ने उद्घाटन समारोह का संचालन किया। श्रीमती जसवीर कौर ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (14–15 सितम्बर 2024) एवं हीरक जयंती समारोह में संस्थान के तीन अधिकारियों, डॉ. विकास कुमार, प्रभारी राजभाषा प्रकोष्ठ, श्री राजेश कुमरा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. दीपिका गोस्वामी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य ने भाग लिया।

भाकृअनुप–सीफेट, लुधियाना में राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा 2024 का समापन समारोह

राजभाषा हिंदी की अर्धवार्षिक पत्रिका

भाकृअनुप–सीफेट, लुधियाना नियमित रूप से 'फसलोत्तर प्रगति' पत्रिका प्रकाशित करती है जो विभिन्न कृषि उपज के फसलोत्तर रख–रखाव, प्रबंधन, मूल्यवर्धन एवं अन्य विषय वस्तुओं पर तथा कटाई प्रद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी से संबंधित हो।

भाकृअनुप-केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा

हिंदी पखवाड़ा 2024

हिंदी पखवाड़े के दौरान कई रचनात्मक और

ज्ञानवर्धक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसमें हिंदी टिप्पण और प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, निबंध लेखन और प्रश्न मंच प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, शोध–पत्र लेखन प्रतियोगिता, आशुभाषा और हिंदी हस्ताक्षर प्रतियोगिताएं शामिल हैं। इन सभी गतिविधियों में कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2024

भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल ने दिनांक 18.09.2024 से 04.11.2024 तक हिंदी पखवाड़ा–2024 का आयोजन किया गया। इस महोत्सव के दौरान वैज्ञानिकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता (20.09.2024), हिंदी शोध पत्र/पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता (23.09.2024), हिंदी श्रुतलेखन प्रतियोगिता (25.09.2024), हिंदी टंकण प्रतियोगिता (27.09.2024), भारत ज्ञान प्रतियोगिता (30.09.2024) तथा टिप्पण–आलेखन प्रतियोगिता (01.10.2024) का आयोजन किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं, संगोष्ठियां एवं प्रशिक्षण

- संस्थान के डॉ. एन.एन. दस्तूर सभागार में दिनांक 05.03.2024 को अपराह्न 3.00 बजे से ''अपनी हिन्दी सुधारें एवं हिन्दी की तिमाही रिपोर्ट भरने में आने वाली समस्याओं का निराकरण'' विषय पर एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। इस एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में संस्थान कार्यालयों के तकनीकी एवं प्रशासनिक श्रेणी के अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर अपने व्याख्यान में श्री धीरज शर्मा, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने तिमाही रिपोर्ट कैसे भरें विषय पर विस्तार से चर्चा की।
- संस्थान के डॉ. एन.एन. दस्तूर सभागार में दिनांक 27 06.2024 को अपराह्न 03.00 बजे से ''राजभाषा हिन्दी का सरलता से कार्यालय में प्रयोग'' विषय पर आयोजित की गई एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में संस्थान के प्रशासनिक और तकनीकी श्रेणी के अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित हुए।
- संस्थान के डॉ. एन.एन. दस्तूर सभागार में दिनांक 18.09.2024 को ''राजभाषा हिंदी एवं उसका कार्यान्वयन, शब्द रचना एवं शब्दावली'' विषय पर तिमाही हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 110 वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित हुए।

हिंदी शोध पत्र पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता (23.09.2024)

वर्ष 2024 के दौरान संस्थान की राजभाषा संबंधी प्रमुख गतिविधियां

- संस्थान की हिन्दी की तिमाही बैठकें प्रत्येक तिमाही में नियमति रूप से आयोजित की गयीं।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 12 जून, 2024 की बैठक में नराकास, करनाल के सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में वर्ष 2023–24 में सराहनीय कार्य हेतु पत्रिका प्रकाशन शोध संस्थान श्रेणी, बैंक श्रेणी, केन्द्रीय कार्यालय श्रेणी, निगम श्रेणी को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल की 12 जून, 2024 की बैठक में नराकास की अगली बैठक को 18 नवंबर, 2024 को आयोजित करने का निर्णय लिया गया।
- संस्थान में वर्ष के दौरान चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।
- निदेशक महोदय के हस्ताक्षर से संस्थान के सभी प्रभागों एवं अनुभागों में जांच बिन्दु बनाए गए।
- संस्थान की राजभाषा गृह पत्रिका दुग्ध गंगा 2023–24 के दूसरे संस्करण का प्रकाशन किया गया।
- संस्थान के 60 से अधिक शोधकर्ता विद्यार्थियों के थीसिस एब्सट्रेक्ट का हिन्दी अनुवाद किया गया।
- संस्थान के लगभग 14 विद्यार्थियों को प्रत्येक सप्ताह में तीन दिन हिन्दी की कक्षा के माध्यम से हिन्दी संबंधी बुनियादी जानकारी शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत की गयी।
- राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेजों को द्विभाषी में जारी किया गया।
- हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए।
- वर्ष 2023–24 के दौरान ''सरकारी कामकाज में मूल हिन्दी टिप्पण/आलेखन योजना'' के अन्तर्गत संस्थान के 10 विजेताओं को नकद पुरस्कार व प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया।

कार्यालय द्वारा वर्ष 2024 के दौरान प्रकाशित हिन्दी प्रकाशनों की सूची।

- दुग्ध गंगा पत्रिका 2023–24 (2)
- डेरी समाचार
- डेरी स्मारिका

भाकृअनुप-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

हिन्दी चेतना मास 2024

भाकृअनुप–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर द्वारा हिन्दी दिवस–2024 के उपलक्ष्य में दिनांक 14 सितम्बर से 14 अक्टूबर 2024 तक हिन्दी चेतना मास मनाया गया। केन्द्र द्वारा आयोजित इस पूरे चेतना मास के दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियां आयोजित की गईः

हिन्दी दिवस 2024 एवं हिन्दी चेतना मास का शुभारम्भ

भाकृअनुप–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर द्वारा हिन्दी चेतना मास व हिन्दी दिवस का शुभारम्भ भारत मंडपम, नई दिल्ली में दिनांक 14–15 सितम्बर के दौरान आयोजित हिन्दी दिवस–2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के शुभारम्भ पर सामूहिक रूप से किया गया।

भाकृअनुप–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र में दिनांक 14.10.2024 को आयोजित हिन्दी चेतना मास–पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के मुख्य अतिथि आचार्य मनोज दीक्षित जी, माननीय कुलपति, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर ने कहा कि आजादी से पूर्व, राष्ट्रीय चरित्र के कारण हमने हिन्दी भाषा को

अपनाया, अतः देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाली हिन्दी भाषा को गौरव के रूप में लिया जाना चाहिए।

केन्द्र निदेशक व कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. राजेश कुमार सावल ने कहा कि हमें, हिन्दी भाषा को स्वाभिमान के तौर पर अपनाना चाहिए तथा भारत में विश्व से आने वाले विशेषज्ञों आदि को हिन्दी के प्रयोग हेतु प्रभावी तौर पर प्रोत्साहित करना होगा। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जगदीश राणे, निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

हिन्दी चेतना मास–2024 के तहत पुरस्कार वितरण/समापन समारोह

वर्ष 2024 के हिंदी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2023 (द्विभाषी)
- ऊँटनी के दूध में गुणवत्ता सुधार से आय में वृद्धि–विस्तार पत्रक
- ऊँट में परजीवी नियंत्रण–प्रबंधन रणनीतियां–विस्तार पत्रक
- वार्षिक उष्ट्र पालन कार्यक्रम–2024 कैलेंडर
- मरू क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने हेतु पशु पोषण की पौराणिक एवं नूतन तकनीकियां–विस्तार पत्रक
- ऊँट आधारित उद्यमों के सामाजिक–आर्थिक पहलू (द्विभाषी)

हिन्दी कार्यशालाएं

हिंदी कार्यशाला: 04 मार्च, 2024

राजभाषा नीति कार्यान्वयन के अन्तर्गत दिनांक 04 मार्च 2024 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. राजेश कुमार सावल, प्रधान वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी (राजभाषा) द्वारा कार्यशाला के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डाला गया।

राजभाषा कार्यशाला: 12 अप्रैल, 2024

केन्द्र द्वारा दिनांक 12 अप्रैल 2024 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. अच्युत त्रिवेदी, प्रबंध निदेशक, पण्डित कृष्णा चन्द्र मेमोरियल न्यूरोसाइंस सेंटर, बीकानेर ने 'मानवीय व्यवहार में परिवर्तनः मानसिक स्वास्थ्य के विकार' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

राजभाषा कार्यशाला: 22 अगस्त, 2024

भाकृअनुप–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में एनआरसीसी–सभागार में दिनांक 22 अगस्त, 2024 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस राजभाषा कार्यशाला में 'हिन्दी में कार्य करने की सुगमता' विषयक व्याख्यान रखा गया।

• राजभाषा कार्यशाला: 30 दिसम्बर, 2024

केन्द्र द्वारा दिनांक 30 दिसम्बर 2024 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में केन्द्र के निदेशक डॉ. आर. के. सावल द्वारा 'हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक लेखन' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर डॉ. राकेश रंजन, प्रधान वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी (राजभाषा) द्वारा कार्यशाला के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डाला।

केन्द्र में पहली बार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बीकानेर की बैठक का सफल आयोजन

भाकृअनुप–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर में पहली बार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बीकानेर की दिनांक 14.05.2024 को छमाही बैठक (मार्च 2024 को समाप्त) आयोजित की गई। इस अवसर पर केन्द्र के निदेशक डॉ. आर्तबन्धु साहू ने संस्थान के शोध कार्यों एवं इनके

प्रयोजन के बारे में जानकारी संप्रेषित करते हुए केन्द्र में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति और इसके उत्तरोत्तर प्रसार के बारे में बताया।

भाकृअनुप–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र बीकानेर को राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार मिला।

माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान से डॉ. घोरूई, केन्द्र निदेशक शील्ड प्राप्त करते हुए

भाकृअनुप-भारतीय सरसों अनुसंधान संस्थान, भरतपुर

भाकृअनुप–भारतीय सरसों अनुसंधान संस्थान, भरतपुर में संघ की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन अत्यंत प्रभावी ढंग से किया जा रहा है, जो भाषा के सम्मान और संवर्धन के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह केवल एक संवैधानिक अनुपालन नहीं, बल्कि हमारे दैनिक कार्यों और अनुसंधान गतिविधियों में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने का एक सक्रिय प्रयास है। संस्थान ने राजभाषा नीति के सफल क्रियान्वयन के लिए एक सुदृढ़ और सुनियोजित तंत्र विकसित किया है। नियमित रूप से राजभाषा बैठकों का आयोजन किया जाता है, जिसमें नीति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा और उसके क्रियान्वयन की समीक्षा की जाती है। हिंदी कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित अंतराल पर आयोजित किए जाते हैं, जिससे कर्मचारियों की हिंदी में कार्य करने की क्षमता और आत्मविश्वास में वृद्धि हो सके। इसके अतिरिक्त, संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा और हिंदी दिवस जैसे आयोजनों को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इन आयोजनों के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध लेखन, वाद–विवाद, और काव्य पाठ का आयोजन किया जाता है, जो कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि और अपनत्व की भावना को जागृत करते हैं।

वर्ष 2024 में संस्थान ने राजभाषा हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए कई सफल कार्यक्रम आयोजित किए। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप, वर्ष 2024 के दौरान संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जिससे राजभाषा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2024 के दौरान किए गए प्रयास

नियमित कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण सत्र

कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने और उनकी दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से, संस्थान ने वर्ष 2024 में कुल 04 हिन्दी कार्यशालाओं तथा सह राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया। इन कार्यशालाओं में विशेष रूप से हिंदी टाइपिंग, मसौदा लेखन और पत्राचार पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिनमें संस्थान के लगभग सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कार्यशालाओं का संक्षिप्त विवरण

- 12 जनवरी 2024: राजभाषा कार्यान्वयन नियम व अधिनियम तथा संसदीय समिति निरीक्षण

- 05 जून 2024: जनसंचार माध्यम और हिंदी, और भाषा में शब्द चयन
- 26 सितंबर 2024: कार्यालयी अनुवाद की प्रमुख समस्याएं एवं निवारण
- 30 दिसंबर 2024: आज के संदर्भ में हिंदी की उपयोगिता।

हिन्दी माह 2024 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों/ प्रतियोगिताओं का विवरण

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में, संस्थान में 13 से 30 सितंबर 2024 तक 'हिंदी पखवाड़ा' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस भव्य आयोजन का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों के बीच हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता और उसके दैनिक उपयोग को बढ़ावा देना था। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में, 13 सितंबर 2024 को हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता संस्थान के तत्कालीन निदेशक, डॉ. प्रमोद कुमार राय ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अशोक कुमार गुप्ता, प्रोफेसर–हिंदी, एम.एस.जे. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर, उपस्थित थे, जिनकी गरिमामय उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस उद्घाटन समारोह में संस्थान के विभिन्न अनुभागों के प्रभारीगण, वैज्ञानिकगण, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारी सहित सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समारोह के अंत में, डॉ. राम लाल चौधरी ने निदेशक तथा मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त करते हुए सभी प्रतिभागियों से हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आग्रह किया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान, कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें हिंदी टिप्पण लेखन, निबंध लेखन, अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, गायन, कंप्यूटर पर यूनिकोड में हिंदी टंकण, सामान्य ज्ञान, कविता पाठ और वाद–विवाद प्रतियोगिताएं शामिल थीं। इन सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 30 सितंबर, 2024 को सम्पन्न हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता तत्कालीन निदेशक डॉ. प्रमोद कुमार राय ने की, और मुख्य अतिथि के रूप में श्री मानस सिंह (भारतीय वन सेवा), उप वन संरक्षक, केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, उपस्थित रहे।

प्रोत्साहन योजनाएँ

हिंदी में अधिक कार्य करने वाले विभागों और कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए।

राजभाषा पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भरतपुर ने संस्थान को राजभाषा उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया है। यह पुरस्कार संस्थान को वर्ष 2020–21 और 2023–24 के लिए मिला है।

भाकृअनुप-भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

हिंदी चेतना मास समारोह

भाकृअनुप–भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 14 सितंबर से 13 अक्टूबर, 2024 के दौरान हिंदी चेतना मास समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं ने 18 सितंबर, 2024 को दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा संस्थान के सभी कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई। इस समारोह के दौरान आशुभाषण, टिप्पण व आलेखन, अनुवाद, अंत्याक्षरी तथा

पोस्टर प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। उपरोक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक कार्मिकों, अनुसंधान सहयोगियों, वरिष्ठ व कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं आदि ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। इसके अलावा, उक्त माह के दौरान हिंदी में एक हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने आधिकारिक दस्तावेजों पर हिंदी में हस्ताक्षर किए।

संस्थान में 15 अक्तूबर 2024 को हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं हेतु पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् गान से हुआ। तत्पश्चात डॉ. जिनु जेकब, वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिंदी कक्ष ने समारोह में उपस्थित पदाधिकारियों का स्वागत किया तथा संस्थान में 2023–2024 के दौरान संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। डॉ. महेश कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी सहभागियों, निर्णायकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

डॉ. (श्रीमती) सी तारा सत्यवती ने श्रीमती ऋतु दलाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी तथा श्रीमती जी सरस्वती, आहरण एवं संवितरण अधिकारी को अधिकाधिक नेमी कार्य हिंदी में करने हेतु प्रेरणास्वरूप नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। इसके अलावा उन्होंने हिंदी चेतना मास समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र वितरित किए तथा अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए। डॉ. तारा सत्यवती ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के निर्णायकों एवं संचालकों को भी स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

डॉ. तारा सत्यवती ने इस भव्य समारोह में नव–नियुक्त कार्मिकों के उत्साह व उमंग को देखकर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि किसी भी संस्थान की प्रगति दल–भावना से ही संभव है, अतः सभी को एक–दूसरे की सहायता करते हुए संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को नए आयाम प्रदान करने चाहिए। हिंदी ही एक ऐसा स्तंभ है जो विविध संस्कृति, भाषा, भाव, व्यंजन, व्यवहार आदि से सराबोर भारत को एक सूत्र में बांधे हुए है। प्रत्येक अधिकारी का यह कर्तव्य है कि वह गलतियों के कारण होने वाली झिझक से दूर रहकर हिंदी में कार्य को प्रमुखता दें और संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन को तीव्र गति प्रदान करें। अंत में डॉ. महेश कुमार के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन, तत्पश्चात राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। संस्थान में संपन्न पूरे हिंदी चेतना मास समारोह के कार्यक्रमों का संचालन एवं समन्वय डॉ. सी तारा सत्यवती के दिशा–निर्देश में डॉ. जिनु जेकब तथा डॉ. महेश कुमार के द्वारा किया गया।

हिंदी कार्यशालाएं

भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने 8 मार्च, 2024, 24 जून, 2024, 26 सितंबर 2024 तथा 19 दिसंबर, 2024 को चार हिंदी कार्यशालाएं आयोजित कीं। श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, भूतपूर्व प्रभारी एवं उप निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण

उप–संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्रीमती ऋतु दलाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी तथा डॉ. महेश कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राभा), भाकृअनुप–भाश्रीअनुसं, हैदराबाद ने राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिए एवं प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। उक्त कार्यशालाओं का समन्वय डॉ. सी तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं के मार्गदर्शन डॉ. जिनु जेकब तथा डॉ. महेश कुमार ने किया।

वर्ष 2024 के दौरान संस्थान के हिंदी प्रकाशन

- संस्थान का मासिक समाचार पत्र
- वार्षिक प्रतिवेदन 2023
- लोकप्रिय लेख

  सी तारा सत्यवती तथा महेश कुमार, 2024. ''श्रीअन्न संग वैश्विक आहार एवं पोषण सुरक्षा'', ईक्षु – श्रीअन्न विशेषांक जनवरी–जून, 2023, भाकृअनुप–आईआईएसआर, लखनऊ। पृ.सं. 7–11.

  सी तारा सत्यवती तथा महेश कुमार, 2024. ''श्री अन्नः पोषण से भरपूर एवं कम संसाधन, ज्यादा अर्जन'', नवोन्मेषी कृषि द्वारा स्वास्थ्य एवं समृद्धि – क्षेत्रीय कृषि मेले की एक स्मारिका 03–05 फरवरी, 2024. भाकृअनुप–आईआईवीआर, वाराणसी। पृ.सं. 9–13.
- पुस्तिका/पैंपलेट

  संगप्पा, महेश कुमार, डी रफी, अब्बू सेठ, के श्रीनिवास बाबू तथा सी तारा सत्यवती, 2024। किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ)। भाकृअनुप–भाश्रीअनुसं, हैदराबाद।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, मऊ

हिंदी चेतना मास 2024

भाकृअनुप–राष्ट्रीय बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, मऊ (मुख्यालय), क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु एवं कृषि विज्ञान केंद्र, भदोही में दिनांक 14 सितम्बर 2024 से 13 अक्टूबर 2024 के मध्य हिंदी चेतना मास मनाया गया जिसके अंतर्गत निम्न कार्यक्रम आयोजित किए गए:

कार्यक्रम/प्रतियोगिता		दिनांक
हिंदी दिवस एवं राजभाषा प्रतिज्ञा		17 सितम्बर, 2024
हिंदी टिप्पण एवं प्रारूपण लेखन प्रतियोगिता		23 सितम्बर, 2024
हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता		23 सितम्बर, 2024
हिंदी निबंध प्रतियोगिता		24 सितम्बर, 2024
हिंदी निबंध प्रतियोगिता (अहिन्दी भाषी)		24 सितम्बर, 2024
हिंदी शीर्षक लेखन प्रतियोगिता		24 सितम्बर, 2024
हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता	हिंदी से अंग्रेजी	25 सितम्बर, 2024
	अंग्रेजी से हिंदी	
हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता		26 सितम्बर, 2024
हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता		27 सितम्बर, 2024
हिंदी यूनिकोड टंकण प्रतियोगिता		07 अक्टूबर, 2024
प्रश्नमंच, काव्यपाठ, समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण		15 अक्टूबर, 2024

उक्त कार्यक्रमों में संस्थान के वैज्ञानिक/तकनीकी/प्रशासनिक संवर्ग के हिंदी भाषी/गैर हिंदीभाषी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं संविदाकर्मियों द्वारा उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया गया।

हिंदी कार्यशालाएं 2024

कार्यशाला का विषय	दिनांक
विश्व जल दिवस	22.03.2024
पृथ्वी दिवस	22.04.2024
स्वच्छता कर्मियों एवं सफाई मित्रों के लिए केंद्र सरकार द्वारा संचालित स्वास्थ्य योजनाएं	26.09.2024
कार्यालयीन हिंदी	31.12.2024

राजभाषा संबंधी उपलब्धियां 2024

- वर्ष 2024 में चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन।
- वर्ष 2024 में हिन्दी चेतना मास का आयोजन।
- नराकास, मऊ के प्रतिनिधि कार्यालय के रूप में भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, मऊ का उत्कृष्ट प्रदर्शन।

राजभाषा हिन्दी से सम्बंधित आलेख

संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय (भारत सरकार) एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा समय–समय पर जारी दिशा–निर्देशों के अनुकूल वर्ष की प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाना अनिवार्य है। तदनुसार, भाकृअनुप–भारतीय बीज विज्ञान संस्थान मऊ, में वर्ष 2023–24 में निम्न कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का विषय	कार्यशाला के आयोजन का दिनांक
सरकार द्वारा संचालित कल्याणकारी योजनाओं द्वारा अल्पसंख्यकों का उत्थान	21.06.2023
पर्यावरण, पृथ्वी और मानव	22.09.2023
अपशिष्ट पदार्थों से धनार्जन	22.12.2023
विश्व जल दिवस	22.03.2024

उपरोक्त एकदिवसीय कार्यशालाओं के आयोजन का उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रति अभिरूचि का विकास तथा हिंदी में कार्यालयीन कामकाज में निरंतर वृद्धि, गैर–हिंदी भाषी कार्मिकों को हिंदी भाषा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन तथा हिंदी भाषा में कार्य करने में आ रही समस्याओं का निदान है।

चूंकि, भारतीय बीज विज्ञान संस्थान मऊ, एक वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान है अतः कार्यशाला में प्रायः ऐसे विषयों को समाविष्ट किया जाता है जिनसे हिंदी भाषा के साथ–साथ वैज्ञानिक अभिरूचि वाले विषयों पर भी चर्चा की जा सके। प्रत्येक कार्यशाला में 50 से अधिक संस्थान कार्मिकों की प्रतिभागिता रही।

भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

भाकृअनुप–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में हिंदी पखवाड़ा (14–30 सितंबर, 2024) का आयोजन किया गया। दिनाँक 30 सितम्बर, 2024 को हिंदी पखवाड़ा में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को संस्थान के प्रेक्षागृह में आयोजित समारोह में पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता डॉ एस. पी. दीक्षित, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने किया, उन्होने राजभाषा के भविष्य पर अपना व्याख्यान दिया। आयोजित प्रतियोगिताओं जैसे– यूनिकोड में हिंदी टंकण, निबंध प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, हिंदी के सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी, हिंदी में स्वरचित कविता पाठ, भाषण प्रतियोगिता, टिप्पणी एवं परिपत्र, वर्ष भर में किए गए हिंदी कार्य की समीक्षा एवं पूरे वर्ष के दौरान हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए विभागों एवं कृषि विज्ञान केंद्र एवं हिंदी कार्यशाला इत्यादि में संस्थान के लगभग 150–170 कर्मिकों ने भाग लिया। पखवाड़ा के दौरान दिनांक 26.09.2024 को

"राजभाषा हिंदी के 75 वर्ष" विषय पर प्रो. पवन अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा एक व्याख्यान दिया गया। समापन समारोह का संचालन हिंदी अधिकारी श्री अभिषेक कुमार सिंह ने किया।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

- दिनांक 27 जून, 2024 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 37 कार्मिकों ने भाग लिया।
- दिनांक 26 सितम्बर,2024 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 39 कार्मिकों ने भाग लिया।
- दिनांक 30 दिसम्बर, 2024 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 39 कार्मिकों ने भाग लिया।
- दिनांक 27 मार्च, 2025 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 34 कार्मिकों ने भाग लिया।

वर्ष 2024-25 की प्रमुख उपलब्धियाँ

- दिनांक 14 अप्रैल 2024 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ हिमांशु पाठक महोदय का संस्थान में भ्रमण एवं विद्यार्थियों के छात्रावास का भूमि पूजन एवं विद्यार्थियों के साथ विचार–विमर्श कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें संस्थान की राजभाषा पत्रिका "इक्षु" का विमोचन किया गया।
- दिनांक 18 जून 2024 को पी एम किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त के हस्तांतरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें माननीय केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं संचार राज्य मंत्री डॉ चंद्रशेखर पेम्मासानी जी ने किसानों को प्रमाण पत्र प्रदान किया एवं संस्थान की राजभाषा पत्रिका "इक्षु" का विमोचन किया गया।
- संस्थान द्वारा भाकृअनुप की उत्तर प्रदेश, बिहार एवं झारखंड राज्यों को सम्मिलित करने वाली चतुर्थ क्षेत्रीय समिति की 27 वी बैठक का आयोजन दिनांक 14 नवम्बर, 2024 को किया गया था। जिसमें मुख्य अतिथि श्री सूर्य प्रताप शाही, कैबिनेट मंत्री, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकारय भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ हिमांशु पाठक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहनिदेशक डॉ यू.एस. गौतम एवं डॉ एस. के. सिंह ने भाग लिया। साथ ही इस बैठक में मुख्य मंत्री के आर्थिक सलाहकार डॉ के. बी. राजू एवं मुख्यमंत्री के सलाहकार श्री अविनाश अवस्थी के साथ ही साथ उत्तर प्रदेश, बिहार एवं झारखंड राज्यों के भाकृअनुप के निदेशक ने भाग लिया। इस दौरान संस्थान की राजभाषा पत्रिका "इक्षु" वर्ष 13 अंक 1 का विमोचन किया गया।

अन्य कार्य

नराकास (कार्यालय-3) की बैठक

25 जून, 2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन

समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें नराकास कार्यालय –3 के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा विभाग से श्री अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, गाजियाबाद ने भाग लिया जिसमें 11 कार्यालयों को हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु एवं 03 कार्यालयों को राजभाषा पत्रिका हेतु पुरस्कृत किया गया।

28 नवम्बर, 2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें नराकास कार्यालय –3 के कार्यालय प्रमुखों एवं हिंदी अधिकारियों ने भाग लिया था। जिसमें 10 कार्यालयों को हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु एवं 03 कार्यालयों को राजभाषा पत्रिका हेतु पुरस्कृत किया गया।

वर्ष के दौरान प्रकाशित हिंदी प्रकाशन

- इक्षु राजभाषा पत्रिका अंकः वर्ष 12, अंक 2 (पुस्तक)
- इक्षु राजभाषा पत्रिका अंकः वर्ष 13, अंक 1 (पुस्तक)

भाकृअनुप-केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

वर्ष 2024–2025 के दौरान केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में दिनांक 8.3.2024 को 'राजभाषा हिंदी 'राजभाषा नीति, कार्यान्वयन एवं प्रयोग' विषय पर, दिनांक 21.5.2024 को "राजभाषा के नियम तथा यूनिकोड प्रणाली द्वारा कंप्यूटर में हिंदी टाइपिंग" विषय पर, दिनांक 25.9.2024 को "कंप्यूटर में हिंदी टंकण हेतु यूनिकोड प्रणाली का अनुप्रयोग", दिनांक 20.12.2024 एवं दिनांक 23.12.2024 को "कंप्यूटर टंकण में यूनिकोड का प्रयोग" विषय पर तथा दिनांक 28.3.2025 को "ई–ऑफिस में हिंदी का प्रगतिशील प्रयोग" शीर्षक पर संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, प्रशासनिक एवं तकनीकी कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक दोनों रूपों में यूनिकोड की समग्र जानकारी प्रदान की गई।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

भाकृअनुप–केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में 13 सितंबर 2024 को हिंदी पखवाड़ा–2024 शुभारंभ कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ तथा हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक महोदय डॉ. ए.के. नायक ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की एवं इस अवसर पर सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दी। इस समारोह में संस्थान के विभिन्न प्रभागों एवं अनुभागों के अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी तथा प्रशासनिक कर्मचारी उपस्थित थे। निदेशक महोदय डॉ. ए. के. नायक ने उपस्थित सदस्यों को हिंदी भाषा के महत्व, हिंदी दिवस का इतिहास और वर्तमान सूचना क्रांति की दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बढ़ते प्रयोग तथा देश एवं देशों में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता, सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता के संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत किया।

संस्थान के निदेशक डॉ. ए.के. नायक ने हिंदी पखवाड़ा–2024 का पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता की। विभिन्न प्रभागों एवं अनुभागों के अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी तथा प्रशासनिक कर्मचारी उपस्थित थे। संस्थान में 14 से 30 सितंबर 2024 की अवधि के दौरान हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, हिंदी अनुवाद, हिंदी लिप्यंतरण, सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, हिंदी टिप्पणी, हिंदी अंत्याक्षरी, स्मृति प्रतिधारण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संस्थान का निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा भाकृअनुप–केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान,

कटक का दिनांक 23.10.2024 को राजभाषायी निरीक्षण किया गया। उक्त निरीक्षण के दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं भाकृअनुप–सीआरआरआई कार्यालय द्वारा प्रस्तुत संसदीय प्रश्नावली के विभिन्न मदों पर माननीय समिति के संयोजक और सदस्यगण द्वारा चर्चा की गई और सुझाव दिए गए।

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास, कटक तथा इसके सदस्य कार्यालयों का निरीक्षण/विचार-विमर्श कार्यक्रम

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिनांक 27.02.2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का अध्यक्ष कार्यालय भाकृअनुप–केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान समेत इसके अधीन छह सदस्य कायालयों जैसे केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर कार्यालय, कटक, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, कंपनी रजिस्ट्रार–सह–शासकीय समापक कार्यालय, भारतीय खेल प्राधिकरण, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल तथा भारतीय जीवन बीमा निगम, कटक मंडल कार्यालय का राजभाषायी निरीक्षण भुवनेश्वर में किया गया।

भाकृअनुप-सीआरआरआई, कटक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 59वीं बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कटक की 59वीं बैठक दिनांक 19 मार्च 2025 को केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में संस्थान के निदेशक एवं नराकास, कटक के अध्यक्ष डॉ. अमरेश कुमार नायक की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में नराकास कटक के अंतर्गत कटक में अवस्थित केंद्र सरकार के 22 सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग अध्यक्ष महोदय ने सूचना दी कि राजभाषा विभाग द्वारा आगामी दिनों में नराकास कटक तथा ओडिशा के अन्य शहरों के नराकास निकायों के सहयोग से कटक में राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। सीआरआरआई के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री दिलीप रॉय ने राजभाषा की सतत् प्रगति के लिए एवं नराकास की सुचारू रूप से कार्य हेतु बैठक में कार्यालयाध्यक्षों की उपस्थिति को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु

भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु ने 21 फरवरी 2024 को "अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस" का आयोजन किया। इस कार्यशाला में ब्यूरो के निदेशक डॉ. एस. एन. सुशील ने कार्यालय में राजभाषा के अनुपालन एवं कार्यान्वयन हेतु "मातृभाषा" के संदर्भ में ब्यूरो के कर्मचारियों को संबोधित किया तथा मानव जीवन में मातृभाषा के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु में 14 से 30 सितंबर, 2024 तक ''हिंदी पखवाड़ा'' का आयोजन किया गया। ''हिंदी पखवाड़ा'' कार्यक्रम के दौरान महापुरुष/स्थान/ऐतिहासिक क्षण या स्थान के बारे में चित्र देखकर अभिव्यक्ति से संबंधित प्रतियोगिता, हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता, द्वि और ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, हिन्दी गीत गायन/कविता वाचन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

''हिंदी पखवाड़ा'' के समापन समारोह के अवसर पर ब्यूरो के माननीय निदेशक डॉ. एस.एन. सुशील ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए तथा अन्य सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करने के लिए सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए।

भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु में 24 सितंबर, 2024 को "विशेष हिन्दी दिवस" मनाया गया। इसी संदर्भ में "विशेष हिन्दी दिवस" का उदघाटन ब्यूरो के निदेशक महोदय, डॉ. एस. एन. सुशील, कार्यक्रम के मुख्य

अतिथि, सहायक कमांडेंट, श्री सुधीर कुमार, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.), यलहंका, बेंगलूरु, ब्यूरो के विभागाध्यक्ष– जननद्रव्य संग्रहण और लक्षणीकरण, डॉ. सुनील जोशीय प्रधान वैज्ञानिक एवं नेशनल फेलो, डॉ. के. श्रीदेवी और प्रशासनिक अधिकारी, श्री जे. मैथ्यू ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का उदघाटन किया।

तदोपरांत ब्यूरो के निदेशक महोदय, डॉ. एस.एन. सुशील ने अपने सम्बोधन में समस्त कर्मचारियों को "विशेष हिन्दी दिवस" के सफल आयोजन पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को बधाई दी। ब्यूरो के निदेशक महोदय, डॉ. एस.एन. सुशील ने कहा कि हमारा देश विविधताओं का देश है हमारे देश में अनेक भाषा–भाषी लोग रहते हैं, कहावत भी है कि "कोस–कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वाणी अर्थात हमारे देश भारत में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और चार कोस पर भाषा यानि वाणी भी बदल जाती है। इस संदर्भ में आवश्यकता है कि सभी भाषाओं का सम्मान करते हुए राजभाषा में सामंजस्य अपनाते हुए इनका प्रयोग किया जाए। हमारे ब्यूरो में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल के जवानों के लिए प्रशिक्षण हिन्दी में दिए जा रहे हैं।

भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरू में भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में सरकारी कार्यालयों में कर्मचारियों/अधिकारियों को राजभाषा से संबंधित प्रावधानों, नियम, अधिनियम और समय–समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी दिशा–निर्देशों और स्वदेशी अनुवाद टूल "कंठस्थ–2.0" से अवगत कराने एवं कार्यालयों में अधिकाधिक प्रयोग के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही के दौरान–10.01.2024, 29.04.2024, 24.09.2024 और 20.12.2024 को हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में बेंगलूरु स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों–भारतीय पशु पोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थानय भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान,केन्द्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु केन्द्र, भारतीय पशु–चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु केन्द्र, राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु केन्द्र, राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, बेंगलूरु केन्द्र और राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो के वैज्ञानिक, प्रशासनिक और तकनीकी अधिकारी उपस्थित रहे।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु के निदेशक की अध्यक्षता में ब्यूरो में नियमित अंतराल पर राजभाषा कार्यान्वयन की तिमाही बैठकें आयोजित की गई।

पहली तिमाही बैठक (जनवरी से मार्च, 2024) 04.01.2024 कोय दूसरी तिमाही बैठक (अप्रैल से जून, 2024) 08.04.2024 कोय तीसरी तिमाही बैठक (जुलाई से सितंबर, 2024) 03.07.2024 को और चौथी तिमाही

बैठक (अक्टूबर से दिसंबर, 2024) 08.10.2024 को ब्यूरो के निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

भाकृअनुप-केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

संस्थान में वर्ष 2024 के दौरान आयोजित हिन्दी पखवाड़ा

राजभाषा हिन्दी का व्यापक प्रचार–प्रसार एवं जन–जन तक हिन्दी के संदेश को पहुँचाने के उद्देश्य से पूरे देश में हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन श्री अमित शाह, माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिनांक 14.09.2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित "हिन्दी दिवस एवं दो दिवसीय चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन" के साथ शुभारंभ हुआ। राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने हेतु संस्थान में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए दिनांक 13.09.2024 से 27.09.2024 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। हिन्दी पखवाड़ा (दिनांक 13–27 सितम्बर, 2024) के दौरान सात प्रतियोगिताएं जैसे "तत्कालिक भाषण (एक्सटेम्पोर) प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण तथा प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी श्रुतिलेखन एवं पठन प्रतियोगिता एवं वाद–विवाद प्रतियोगिता" आयोजित की गई ।

संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी में कार्य करने के दौरान होने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु संस्थान में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इस प्रकार वर्ष 2024 के दौरान चार कार्यशालाएं {प्रथम दिनांक 16.02.2024, मुख्य वक्ता डॉ. चंद्र गोपाल शर्मा, पूर्व–उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलवे, कोलकाता, द्वितीय दिनांक 26.06.2024, तृतीय दिनांक 27.09.2024, मुख्य वक्ता श्री अनवर हुसैन, प्राध्यापक, सरोजनी नायडू कालेज फॉर वुमेन तथा चतुर्थ दिनांक 30.12.2024, मुख्य वक्ता डॉ. विचित्रसेन गुप्त, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), निजाम पैलेस, कोलकाता} आयोजित की गई ।

वर्ष 2024 के दौरान संस्थान के राजभाषा संबंधी महत्पूर्ण उपलब्धियाँ

संघ की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु वर्ष 2023–24 के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्व क्षेत्र के अंतर्गत संस्थान को "प्रथम" क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

संस्थान द्वारा प्रकाशित होने वाली गृह पत्रिका "रेशा–किरण 2024"के दो अंकों {7(1) तथा 7(2)} का सफल प्रकाशन किया गया है।

संस्थान द्वारा वर्ष 2024 के दौरान प्रकाशित हिन्दी प्रकाशनों की सूची

- रेशा–किरण {अंक 7, भाग 1 प्राकृतिक रेशा पर आधरित अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका}
- रेशा–किरण {अंक 7, भाग 2 प्राकृतिक रेशा पर आधरित अर्धवार्षिक राजभाषो पत्रिका}

वर्ष के दौरान संस्थान को प्राप्त पुरस्कार/सम्मान

राजभाषा क्षेत्रीय पुरस्कार (पूर्व क्षेत्र): भारत

सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा संस्थान को वर्ष 2023–24 हेतु हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए दिनांक 05 मार्च, 2025 को गुवाहाटी में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान संघ के राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए 'ग' क्षेत्र में इस संस्थान (भाकृअनुप–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान) को "प्रथम" पुरस्कार प्रदान किया गया है।

यह पुरस्कार केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, माननीय श्री नित्यानन्द राय एवं असम के माननीय मुख्य मंत्री श्री हेमन्त विश्व शर्मा जी के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया था।

भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली

हिंदी चेतना मास

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा सितम्बर मास (01.09.2024 से 30.09.2024) को हिन्दी चेतना मास के रूप में मनाया गया। हिन्दी चेतना मास कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह 01 सितम्बर, 2024 को आयोजित किया गया। डॉ. विश्वनाथन चिन्नुसामी, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान), डॉ. पी.एस. ब्रह्मानंद, पीडी (डब्ल्यूटीसी) इस अवसर पर उपस्थित थे। श्रीमती सीमा चोपड़ा, पूर्व निदेशक (राजभाषा), आईसीएआर और श्री सारस्वत मोहन मनीषी, प्रसिद्ध कवि इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उद्घाटन कार्यक्रम के बाद कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी चेतना मास के दौरान निर्धारित तिथियों पर अन्य प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। जैसे कि आशुभाषण प्रतियोगिता, वैज्ञानिक, प्रशासनिक और तकनीकी श्रेणी, तथा आरए/ एसआरएफ/ जेआरएफ/वाईपी/ परियोजना सहायक/ संविदा कार्यालय सहायक/ संविदा आशुलिपिक अलग–अलग श्रेणियों में, प्रश्न मंच, चित्र पर आधारित कहानी या कविता लेखन, श्रुतलेख, टिप्पण एवं प्रारूपण, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता (वर्णनात्मक) (एमटीएस के लिए), हिंदी टाइपिंग आदि प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इसके अलावा संस्थान के कई प्रभागों/क्षेत्रीय केंद्रों ने भी अपने स्तर पर हिंदी दिवस/ प्रतियोगिता/पखवाड़े का आयोजन किया।

संस्थान के विभिन्न प्रभागों – बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रभाग, आनुवंशिकी प्रभाग, सूत्रकृमि विज्ञान प्रभाग, जैव रसायन प्रभाग, कृषि रसायन प्रभाग एवं सूक्ष्मजीव विज्ञान प्रभाग द्वारा हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं।

हिंदी वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

गत वर्ष दिनांक 02 मई, 2024 को संस्थान में हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह एवं ''तकनीकी नवाचारों का नया युग एवं राजभाषा हिंदी'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित वरिष्ठ प्रौद्योगिकी लेखक एवं वक्ता श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच थे। वे भारतीय भाषा प्रौद्योगिकियों पर माइक्रोसॉफ्ट के प्रवक्ता हैं तथा निदेशक–स्थानीय भाषा एवं सुगम्यता के पद पर कार्यरत हैं। उक्त समारोह में मुख्य अतिथि ने राजभाषा की छमाही गृह पत्रिका पूसा सुरभि के 22 वें अंक का विमोचन भी किया। साथ ही उन्होंने हिंदी जागरूकता मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं और वर्ष भर चलने वाली अन्य प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

कार्यशाला जनवरी से मार्च, 2024

संस्थान के जल प्रौद्योगिकी केंद्र में दिनांक 22 मार्च, 2024 को विश्व जल दिवस समारोह के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसका विषय– 'शांति के लिए जल' रखा गया। कार्यक्रम के आकर्षण और मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मौजूद रहे।

कार्यशाला जुलाई से सितंबर, 2024

संस्थान के कीट विज्ञान संभाग में कार्यरत वैज्ञानिक/तकनीकी/प्रशासनिक वर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 23 जुलाई, 2024 को 'राजभाषा कार्यान्वयनः समस्या और समाधान' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागियों को राजभाषा हिंदी के सही प्रयोग, सरकारी कार्यों में हिंदी का प्रभावी उपयोग और राजभाषा नीति के अनुपालन के बारे में जानकारी दी गई।

कार्यशाला अक्तूबर से दिसम्बर, 2024

संस्थान में नवनियुक्त सहायकों को राजभाषा के कार्यान्वयन एवं नीति से अवगत कराने तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा देने एवं उसमें आने वाली तकनीकी कठिनाईयों को दूर करने के लिए ''राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन'' विषय पर दिनांक 13 दिसंबर, 2024 को अपराह्न 2:30 बजे लेक्चर हॉल (ऑडिट विंग) चतुर्थ तल, एनेक्सी भवन, निदेशालय में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था।

हिंदी प्रकाशनों की सूची

नियमित हिंदी प्रकाशन

- पूसा सुरभि (अर्धवार्षिक) (आईएसएसएनः 2348–2656)
- वार्षिक रिपोर्ट 2023 (आईएसएसएनः 0972–7299)
- पूसा समाचार, अक्टूबर–दिसम्बर, 2023, जनवरी–मार्च 2024, अप्रैल–जून, 2024 एवं जुलाई–सितम्बर, 2024 प्रसार दूत (त्रैमासिक)
- भा.कृ.अ.स. सामयिकी (मासिक) (केवल संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध)

इसके अलावा, अन्य हिंदी प्रकाशनों के रूप में 13 बुलेटिन भी प्रकाशित किए गए।

भाकृअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई

राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 2024

संस्थान में 01 जनवरी 2024 से 31 दिसंबर 2024 की अवधि के दौरान आयोजित राजभाषा गतिविधियों का विवरण निम्नलिखित हैः

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 106, 107, 108 और 109 वीं बैठकें क्रमशः दिनांक 24 जनवरी 2024, दिनांक 06 मई 2024, दिनांक 30 जुलाई 2024 और दिनांक 06 नवंबर 2024 को आयोजित की गईं।

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

दिनांक 15 फरवरी, 2024 को मुख्यालय के प्रशासनिक वर्ग के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए "राजभाषा कार्यान्वयन में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री ए.के. जगदीशन ने उक्त विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बहुत ही सरल शब्दों में राजभाषा कार्यान्वयन में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने राजभाषा के संवैधानिक प्रावधानों और राजभाषा नियम व अधिनियम का उल्लेख करते हुए कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए उपलब्ध साधनों से प्रतिभागियों को अवगत कराया, जिसमें फोनेटिक की बोर्ड का इस्तेमाल तथा वॉइस टाइपिंग के माध्यम से कैसे हिन्दी मे टंकण किया जा सकता है, आदि के बारे में जानकारियां दी गईं। व्याख्यान के बाद प्रतिभागियों से व्यावहारिक अभ्यास भी करवाया गया।

दिनांक 28 जून 2024 को संस्थान के निदेशक/कुलपति डॉ. रविशंकर, सी. एन. की अध्यक्षता में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु 'राजभाषा कार्यान्वयन: समस्या एवं समाधान' विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्रीमती सीमा चोपड़ा, पूर्व निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने उक्त विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने राजभाषा के संवैधानिक प्रावधानों का विस्तार से उल्लेख किया और कहा कि हिन्दी सरल भाषा है। इस भाषा में संप्रेषण करना आसान है। हमें राजभाषा के विकास के लिए भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने प्रतिभागियों की शंकाओं का भी समाधान किया।

हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा/हिंदी चेतना मास

भाकृअनुप–केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के मुंबई स्थित मुख्यालय में दिनांक 02–30 सितंबर, 2024 के दौरान हिंदी चेतना मास मनाया गया तथा इसके क्षेत्रीय केंद्रों में 14–21 सितंबर, 2024 के दौरान हिंदी सप्ताह मनाया गया।

भाकृअनुप–केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई में दिनांक 02 सितंबर 2024 को हिंदी चेतना मास का शुभारंभ मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर करुणाशंकर उपाध्याय ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक व कुलपति डॉ. रविशंकर सी.एन. ने की।

निदेशक व कुलपति डॉ. रविशंकर ने कहा कि हिंदी भाषा बोलने या इसमें काम करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी केंद्र सरकार की राजभाषा होने के कारण हिंदी में काम करना हमारा कर्तव्य है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में संस्थान कई सफल कदम उठा रहा है। उन्होंने भारत के विकास में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। इस अवसर पर संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. एन.पी. साहू ने भी संबोधित किया और सभी से आग्रह किया कि राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में अपना योगदान दें। इस अवसर पर संस्थान की पत्रिका 'जलचरी' के 30वें अंक का विमोचन भी किया गया।

विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

संस्थान में दिनांक 10 जनवरी 2024 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस दौरान संस्थान और इसके क्षेत्रीय केंद्रों के कर्मचारियों एवं छात्रों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता के लिए दो विषय जैसे कर्मचारियों के लिए विकसित भारत अभियान में हिंदी की भूमिका और छात्रों के लिए वैश्विक परिदृश्य में हिंदी की भूमिका दिए गए थे।

मुख्य अतिथि दीप प्रज्वलित करते हुए

'जलचरी' पत्रिका का विमोचन

हिंदी जलवाणी पाठ्यक्रम

इस संस्थान में देश–विदेश से आए छात्र–छात्राओं के लिए मात्स्यिकी विषय से संबंधित उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है। इस संस्थान के एमएफएसएसी के प्रथम वर्ष के छात्र–छात्राओं के लिए वर्ष 2003 से नियमित रूप से हिन्दी जलवाणी नामक पाठयक्रम संचालित किया जा रहा है, जिससे उनका हिंदी ज्ञान बढ़ सके। पाठयक्रम की रचना इस प्रकार से की गई है कि हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले और नहीं रखने वाले छात्र अलग समूहों में इसका अध्ययन कर सकें।

भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचिन

संस्थान में दिनांक 1 जनवरी, 2024 से 31 दिसम्बर, 2024 तक आयोजित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का विवरण:

विश्व हिंदी दिवस 2024

संस्थान में 10 जनवरी, 2024 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर माननीय निदेशक ने संदेश दिया, जिसे संस्थान के मुख्यालय, कोच्चि और अनुसंधान केंद्रों के कर्मचारियों के लिए संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड किया गया जिसमें उन्होंने सभी से आग्रह किया कि हमारे शोध कार्य और इसके परिणामों को हिंदी भाषा के माध्यम से प्रसारित करें। विश्व हिंदी दिवस 2024 के सुअवसर पर संस्थान के प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें संस्थान के सभी प्रकाशनों को प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन निदेशक महोदय डॉ. जोर्ज नैनान द्वारा संस्थान के प्रभागाध्यक्षों के समक्ष किया गया। तद्उपरांत संस्थान के कार्मिकों ने प्रदर्शनी में भाग लिया।

भाकृअनुप-केमाप्रौसं विशाखापट्टणम अनुसंधान केन्द्र राजभाषा शील्ड से सम्मानित

भाकृअनुप–केमाप्रौसं विशाखपट्टणम अनुसंधान केन्द्र, विशाखपट्टणम को वर्ष 2023–24 के दौरान अपने कार्यक्षेत्र में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए तृतीय स्थान की शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र 24 मई 2024 को श्री सौरभ प्रसाद, अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, विशाखापट्टणम एवं मंडल रेल प्रबंधक, पूर्वी तट रेलवे, वालतेरु मंडल से प्राप्त किया।

भाकृअनुप-केमाप्रौसं, कोच्ची राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी से सम्मानित

भाकृअनुप–केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्ची को वर्ष 2022–23 के दौरान संस्थान में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) के स्वायत्त संगठन की

श्रेणी में द्वितीय स्थान की रोलिंग ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

भाकृअनुप-केमाप्रौसं, कोच्ची की विज्ञान पत्रिका जलधि वर्ष 2022 राजभाषा रोलिंग ट्राफी से सम्मानित

भाकृअनुप–केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचिन की विज्ञान पत्रिका जलधि 2022 को वर्ष 2022–23 के दौरान प्रकाशित पत्रिका के लिए कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) के तृतीय स्थान की रोलिंग ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। जलधि 2022 डॉ. जोर्ज नैनान, निदेशक, भाकृअनुप–केमाप्रौसं, कोचिन द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. पी. शंकर, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, भाकृअनुप–केमाप्रौसं, कोचिन द्वारा संपादित की गई है।

राजभाषा कार्यान्वयन पर कार्यशाला

संस्थान के प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए दिनांक 07.06.2024 को राजभाषा कार्यान्वयन पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। श्री एम.एन. विनोद कुमार, प्रभारी कार्यालयाध्यक्ष के उद्घाटन भाषण के साथ यह कार्यशाला प्रारंभ हुई। डॉ. पी. शंकर, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, इस कार्यशाला के व्याख्याता थे। इस कार्यशाला में राजभाषा नियम 1976 और धारा 3(3) के दस्तावेजों की विस्तृत चर्चा की गई। प्रत्येक कर्मचारी की कार्य प्रकृति पर चर्चा के पश्चात, हिन्दी में टिप्पण और मसौदा लेखन की जानकारी दी गई। अंत में ई–ऑफिस की सूचना के साथ उसमें उपलब्ध अनुवाद व्यवस्था की जानकारी भी दी गई। सहभागियों की ओर से श्रीमती सुबीन जॉर्ज, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा संकाय और राजभाषा अनुभाग को धन्यवाद ज्ञापन के साथ यह कार्यशाला समाप्त हुई। इस में कुल 6 अवर एवं प्रवर श्रेणी के लिपिकीय प्रशासनिक कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान के सात नवनियुक्त तकनीकी कर्मचारियों के लिए दिनांक 22.08.2024 को राजभाषा कार्यशाला सेमिनार कक्ष में आयोजित की गई। डॉ. पी. शंकर, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने इस कार्यशाला के संकाय सदस्य के नाते इसको उचित रूप से संचालित किया। राजभाषा नियम, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा संकल्प और भारत के भाषा क्षेत्र क, ख एवं ग में हिन्दी का प्रयोग और उसका प्रतिशत, प्रोत्साहन योजना आदि से संबंधित जानकारी कार्यशाला में दी गई। कार्यशाला में कुल 7 प्रतिभागी थे, जिनको अपनी कार्य डायरी हिन्दी में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रशासनिक कार्यशाला

संस्थान के प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए दिनांक 12.11.2024 को राजभाषा कार्यान्वयन पर एक राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. जॉर्ज नैनान, निदेशक के उद्घाटन भाषण के साथ यह कार्यशाला प्रारंभ हुई। डॉ. संतोष अलेक्स, मुख्य तकनीकी अधिकारी, इस कार्यशाला के व्याख्याता थे। इस कार्यशाला में राजभाषा नियम 1976 और धारा 3(3) के दस्तावेजों की जानकारी दी गई। इसमें कुल 9 प्रशासनिक सहायकों ने भाग लिया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर

हिंदी पखवाड़ा 2024 समारोह

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु भाकृअनुप–केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान ने 13 सितम्बर से 27 सितम्बर 2024 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया। हिन्दी दिवस तथा हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ प्रमोद कुमार साहू के मार्गदर्शन में 13 सितम्बर, 2024 को किया गया। उन्होंने भारत में हिन्दी की गति एवं स्थिति के बारे में सभी को अवगत कराया और सीफा की तकनीकों को जनमानस तक पहुँचाने हेतु हिंदी भाषा को प्रभावी माध्यम के रूप में प्रयोग करने का आग्रह किया, जिससे हमारे कृषकगण इसका अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।

हिंदी पखवाड़ा समापन एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह (पुरस्कार वितरण एवं हास्य कवि सम्मेलन) 27 सितंबर 2024 को आयोजित किया गया। संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के समापन एवं कवि सम्मेलन का शुभारंभ डॉ प्रमोद कुमार साहू, निदेशक, भाकृअनुप–सीफा एवं उपस्थित कवियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने कवियों को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर श्री एच एल मीणा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, भाकृअनुप–सीफा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संचालन करते हुए प्रभारी राजभाषा अधिकारी डॉ. डी.के. वर्मा ने इस अवसर पर उपस्थित कवियों का परिचय कराया। इस अवसर पर भुवनेश्वर के प्रतिष्ठित कवि श्री किशन खंडेलवाल, कवि, सिद्ध ांतकार एवं हिन्दी अनुज पुस्तकालय के संस्थापक, श्री विक्रमदायित्व सिंह, भारतीय रेल विभाग, भुवनेश्वर एवं श्री अबिनाश दास, होटल प्रबंधन संस्थान, भुवनेश्वर उपस्थित थे। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

हिंदी कार्यशाला

दिनांक 19 मार्च 2024 को "राजभाषा हिंदी दक्षता के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद और लेखन उपकरण का कार्यान्वयन" विषय पर राजभाषा तिमाही कार्यशाला का आयोजन

भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर में दिनांक 19 मार्च, 2024 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियम, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन संस्थान के सम्मेलन कक्ष में किया गया। कार्यशाला का विषय "राजभाषा हिंदी में दक्षता के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद और लेखन उपकरण" का कार्यान्वयन

था। कार्यालीन कार्यों में हिंदी में होने वाली सामान्य त्रुटियों एवं उनके समाधान पर विस्तार से चर्चा की गई तथा उन्होंने राजभाषा हिंदी में दक्षता के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता हेतु विभिन्न उपकरणों का विस्तार से परिचय कराया साथ ही राजभाषा संबंधी अधिनियम, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन पर भी बल दिया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. धनंजय कुमार वर्मा, प्रभारी राजभाषा अधिकारी, भाकृअनुप–सीफा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

दिनांक 28 जून 2024 को ''राजभाषा को लागू करने के लिए संवैधानिक प्रावधान और विभिन्न ऐप्स" विषय पर राजभाषा तिमाही कार्यशाला का आयोजन

भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर में दिनांक 28 जून, 2024 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियम, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन संस्थान के सम्मेलन कक्ष में किया गया। कार्यशाला का विषय ''राजभाषा को लागू करने के लिए संवैधानिक प्रावधान और विभिन्न ऐप्स" था।

दिनांक 23.09.2024 को ''संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण एवं महत्व'' विषय पर राजभाषा तिमाही कार्यशाला का आयोजन

भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर के समस्त, अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु ''संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण एवं महत्व'' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 23.09.2024 को संस्थान के सम्मेलन कक्ष में किया गया। इस कार्यक्रम में वक्ता के रूप में श्री एच एल मीणा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, भाकृअनुप–सीफा, द्वारा व्याख्यान दिया गया।

दिनांक 09 दिसंबर 2024 को ''कार्यालय के कार्यो में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में नए टूल्स एवं तकनीकों का प्रयोग" विषय पर राजभाषा तिमाही कार्यशाला का आयोजन

हिंदी प्रकाशन

- संस्थान का त्रैमासिक सीफा समाचार 2024 (4 अंक) का प्रकाशन।
- संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन 2023 का प्रकाशन।
- संस्थान का राजभाषा पत्रिका ''नीलीतिमा'' अंक 14 वर्ष 2024 का प्रकाशन।

भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2024

भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2024 तक विविध कार्यक्रमों के साथ हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विविध कार्यक्रम, जो कि हिन्दी स्मृति परीक्षा, और हिन्दी अंत्याक्षरी प्रतियोगिताएं ऑफलाइन में और हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, हिन्दी भाषण और हिन्दी टंकण प्रतियोगिताएं हाईब्रिड मोड में आयोजित की गयीं। प्रतियोगिताओं में सीएमएफआरआई मुख्यालय और सभी क्षेत्रीय केंद्र/स्टेशनों के कार्मिकों ने भाग लिया। हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह दिनांक 18 अक्तूबर, 2024 को सम्मेलन कक्ष 201 में आयोजित किया गया।

एमएफआरआई के सभी क्षेत्रीय केन्द्रों, स्टेशनों में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ हिन्दी सप्ताह/पखवाड़ा मनाया गया।

मुख्यालय, कोच्ची में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन कार्यक्रमों में प्रमुख है हिन्दी कार्यशाला का आयोजन। हर तिमाही में एक हिन्दी

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में हिन्दी पखवाड़ा

विषिंजम क्षेत्रीय केंद्र में हिन्दी पखवाड़ा समारोह

कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इस अवधि के दौरान कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने का प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से दिनांक 30 सितंबर, 2024 को कार्यालयीन हिन्दी विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी। मुख्यालय में दिनांक 10.01.2024 को बोलचाल की हिन्दी, 26.06.2024 और 13.12.2024 को राजभाषा नीति पर कार्यशालाएं आयोजित की गयीं।

पुरस्कार

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) कोच्ची को राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार 2023–24 प्राप्त हुआ। दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम क्षेत्रों के लिए कर्नाटक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, कॉन्वकेशन भवन, मैसुरु, कर्नाटक में दिनांक 04 जनवरी, 2025 को आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान डॉ. ग्रिन्सण जॉर्ज, निदेशक, सीएमएफआरआई और श्री हरीश नायर, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (वरिष्ठ ग्रेड) एवं प्रभारी अधिकारी (राजभाषा) ने बिहार के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान और केंद्रीय गृह

राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय से पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पुरस्कार

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची को वर्ष 2022–23 के दौरान कोच्ची स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम स्थान की रॉलिंग ट्रॉफी प्राप्त हुई। संस्थान की अर्ध–वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'मत्स्यगंधा' के लिए उत्कृष्ट पत्रिका के प्रथम स्थान की ट्रॉफी प्राप्त हुई।

संस्थान के हिन्दी प्रकाशन

- **मत्स्यगंधा:** केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान मुख्यालय एवं अधीनस्थ केन्द्रों के वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों द्वारा लिखे गए अनुसंधान लेखों और साहित्यिक रचनाओं तथा राजभाषा से संबंधित सूचनाओं का समावेश करते हुए प्रकाशित अर्ध वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका।

- **समुद्री शैवाल पैदावार में अच्छी प्रबंधन प्रथाओं पर पुस्तिका:** समुद्री शैवाल पैदावार में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसका चरण–दर–चरण वर्णन किया है।
- **मात्स्यिकी शब्दावली:** यह मात्स्यिकी के विविध और जटिल क्षेत्र में प्रयुक्त शब्दावली को समझने के अद्यतन और विस्तृत संस्करण है।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ

हिंदी सप्ताह समारोह

भाकृअनुप–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के बीच सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा अभिरुचि उत्पन्न करने हेतु दिनांक 14–20 सितंबर के दौरान हिन्दी सप्ताह 2024 का आयोजन किया गया। इस अवधि में कुल 08 प्रतियोगिताओं जैसे कि हिंदी निबंध, कम्प्यूटर पर यूनिकोड में हिंदी टंकण, हिंदी अनुवाद, हिंदी टिप्पण लेखन, स्वरचित हिंदी काव्य पाठ, वाद–विवाद प्रतियोगिता, हिंदी आशुभाषण तथा हिंदी प्रश्नोत्तरी (क्विज) का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के सभी कार्मिकों ने पूरे उत्साह के साथ सक्रियता से भाग लिया।

हिंदी सप्ताह 2024 के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 3 अक्टूबर, 2024 को संस्थान के तत्कालीन निदेशक डॉ. उत्तम कुमार सरकार की अध्यक्षता में संस्थान के मुख्यालय, लखनऊ में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. (ब्रिगेडियर)

पी. जायसवाल, प्रमुख, एएमसी, लखनऊ थे। श्री सुभाष चन्द्र, प्रभारी, राजभाषा अनुभाग ने हिंदी सप्ताह 2024 के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्यालय तथा पीएजीआर केंद्र, कोच्चि में आयोजित हिंदी सप्ताह कार्यक्रमों की प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विजयी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं पारितोषिक प्रदान किये गये।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

संस्थान में सभी कार्मिकों को अपना काम हिन्दी में करने को प्रोत्साहित करने और रोजमर्रा के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2024 के दौरान निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया:

- दिनांक 11 मार्च, 2024 को 'महिला सशक्तिकरण' विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- दिनांक 24 जून, 2024 को 'राजभाषा कार्यान्वयन' पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- दिनांक 25 सितम्बर, 2024 को 'मत्स्य संरक्षण विज्ञान में नई दिशाएँ' विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी–सह–कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- दिनांक 31 दिसंबर, 2024 को 'राजभाषा का सत्यनिष्ठा पूर्वक कार्यान्वयन' विषय पर नराकास (कार्यालय–3) के लखनऊ स्थित सभी कार्यालयों को सम्मिलित करते हुए एक नगर स्तरीय राजभाषा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

राजभाषा पुरस्कार

भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–3), भाकृअनुप–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा संस्थान को निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए गए:

- संस्थान द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका मत्स्यलोक, अंक 12, 2023 को अक्तूबर 2023–मार्च 2024 छमाही अवधि में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- संस्थान द्वारा प्रकाशित हिंदी राजभाषा पत्रिका मत्स्यलोक, अंक 13, 2024 को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- संस्थान को अक्तूबर 2023–मार्च, 2024 की छमाही अवधि में अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।
- संस्थान को अप्रैल–सितंबर, 2024 की छमाही अवधि में अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ।

हिंदी प्रकाशनों की सूची

राजभाषा हिंदी पत्रिका

- राजभाषा हिंदी पत्रिका मत्स्यलोक, अंक 12, 2023
- राजभाषा हिंदी मत्स्यलोक, अंक 13, 2024

हिंदी पुस्तकें

- सरकार, उत्तम कुमार, ललित कुमार त्यागी, ताराचन्द कुमावत एवं सुभाष चन्द्र (संपादक), 2024। भारत के जलीव आनुवंशिक संसाधनों का सतत संरक्षण और प्रबंधन: नवीन दृष्टिकोण। प्रकाशक: भाकृअनुप–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ, pp. 352.
- सरकार, उत्तम कुमार, राजीव कुमार सिंह, ललित कुमार त्यागी, चंद्र भूषण कुमार, ताराचन्द कुमावत, सुभाष चन्द्र एवं अखिलेश कुमार मिश्र (संपादक), 2024। मत्स्य संरक्षण विज्ञान

में नई दिशाएँ (सारांश पुस्तक). प्रकाशकः भाकृअनुप–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ, pp. 126.

- सरकार, उत्तम कुमार, राजीव कुमार सिंह, ललित कुमार त्यागी, चंद्र भूषण कुमार, ताराचन्द कुमावत, सुभाष चन्द्र एवं अखिलेश कुमार मिश्र (संपादक), 2024. मत्स्य संरक्षण विज्ञान मे नई दिशाएँ। प्रकाशकः भाकृअनुप–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ, pp. 231.

प्रशिक्षण मैनुअल

गुप्ता, मोनिका, राघवेंद्र सिंह, आदित्य कुमार एवं उत्तम कुमार सरकार (2024)। सजावटी मत्स्य आनुवंशिक संसाधनों का संरक्षण और जीविकोपार्जन हेतु उनका सतत उपयोग प्रकाशकः भाकृअनुप–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ, पृष्ठ 207।

भाकृअनुप-औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद

भाकृअनुप-औसपाअनुनि में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में 14–29 सितंबर, 2024 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा हर्षोल्लास से मनाया गया, जिसके अन्तर्गत हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके दौरान हिन्दी निबंध, हिन्दी पत्र लेखन, हिन्दी टंकण, वाद–विवाद, काव्यपाठ एवं सामान्य हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। ये सभी प्रतियोगिताएं हिन्दी एवं अहिन्दी भाषियों के लिए अलग–अलग आयोजित की गई थीं, जिसमें निदेशालय के सभी श्रेणी के कार्मिकों ने भाग लिया। हिन्दी पखवाड़े की शुरूआत हिन्दी दिवस 14 सितंबर, 2024 को की गई।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 30 सितंबर, 2024 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत आईसीएआर गीत के साथ हुई। श्री बृजेश कुमार मिश्र, हिंदी अधिकारी ने मंचासीन का स्वागत करते हुए वर्ष के दौरान राजभाषा हिंदी में किए गए कार्यों एवं हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के बारे में बताया। निदेशालय के निदेशक डॉ. मनीष दास ने मुख्य अतिथि श्रीमती लीना गर्ग, कवयित्री, बडौदा को औषधीय पौधा भेंट कर पुष्पगुच्छ द्वारा स्वागत किया तथा डॉ. मनीष कुमार सुथार, वैज्ञानिक ने विशेष अतिथि श्रीमती अमृता दास एवं डॉ. पी. बालमुरुगन, नराकास सदस्य सचिव को औषधीय पौधा भेंट कर पुष्पगुच्छ द्वारा स्वागत किया। तत्पश्चात मंचासीन द्वारा दीप प्रज्जवलन किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह के उपरान्त सदस्य सचिव, नराकास आणंद ने अपने वक्तव्य के दौरान इस संस्थान द्वारा राजभाषा हिंदी के लिए उठाए जा रहे अनूठे कदमों की सराहना की।

विशेष अतिथि महोदया ने अपने वक्तव्य में हिंदी भाषा पर प्रकाश डालते हुए कार्यालय तथा व्यवहार में हिंदी भाषा को अधिक से अधिक प्रयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने सभी श्रोताओं को अपनी स्वरचित कविता द्वारा मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं निदेशक डॉ. मनीष दास ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी के प्रति निदेशालय के कार्मिको की सराहना करते हुए कार्यालय में हिंदी भाषा को अपना धर्म मानकर ज्यादा से ज्यादा हिंदी में काम करने की अपील की।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह में निदेशालय के वैज्ञानिक, अधिकारी एवं समस्त कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री बृजेश कुमार मिश्र, तकनीकी अधिकारी, भाकृअनुप–औसपाअनुनि द्वारा किया गया। समारोह के अंत में डॉ. मनीष कुमार सुथार, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–औसपाअनुनि ने धन्यवाद ज्ञापन दिया और राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

हिंदी कार्यशाला

भाकृअनुप–औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय में राजभाषा क्रियान्वयन समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आणंद के तत्वावधान में दिनांक 21 अगस्त 2024 को "कार्यालय में सरल हिन्दी का प्रयोग एवं हिन्दी के बढ़ते कदम" विषय पर एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में निदेशालय के सभी श्रेणी के कार्मिकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त नराकास, आणंद के सभी सदस्य कार्यालयों ने भी भाग लिया। कार्यशाला में दो सत्रों का आयोजन किया गया।

हिन्दी अधिकारी श्री बृजेश कुमार मिश्र ने कार्यशाला से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की। तत्पश्चात् निदेशालय के निदेशक डॉ. मनीष दास ने गणमान्य अतिथियों को पर्यावरण को ध्यान में रखकर मुख्य अतिथि डॉ. नवनीत चौहान, भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. जगदीश पाटील, जिला अग्रणी प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, आणंद को फूलों का गुलदस्ता एवं औषधीय पौधा देकर स्वागत किया। तत्पश्चात डॉ. पी.एल. सारण, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर–डीएमएपीआर ने मुख्य वक्ता श्री राजेश त्रिवेदी, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, डॉ. एम. जे. कलेढोणकर, केन्द्राध्यक्ष, मृदा एवं जल सरक्षण संस्थान, अनुसंधान केंद्र, वासद एवं निदेशालय के निदेशक डॉ. मनीष दास का भी फूलों का गुलदस्ता एवं औषधीय पौधा देकर स्वागत किया।

पुरस्कार

- डॉ. मनीष दास, निदेशक आईसीएआर–डीएमएपीआर को नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति, आणंद द्वारा राजभाषा स्तंभ (2024–25) के रूप में सम्मानित किया गया।
- श्री बृजेश कुमार मिश्र, तकनीकी अधिकारी, आईसीएआर–डीएमएपीआर को नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति, आणंद द्वारा राजभाषा रत्न पुरस्कार (2024–25) प्रदान किया गया।
- नगर राजभाषा कार्यांवयन समिति के तत्वावधान में भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान के अनुसंधान केंद्र वासद द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में श्री सुरेश पटेलिया, प्रधान निजी सचिव, आईसीएआर–डीएमएपीआर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- ओएनजीसी, खंभात द्वारा आयोजित अखिल गुजरात राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता में श्री सुनील व्यास, सहायक एवं श्री रघुवीर प्रजापति, वरिष्ठ लिपिक को तृतिय पुरस्कार तथा श्री बृजेश कुमार मिश्र, तकनीकी अधिकारी को प्रोत्साहन पुरस्कार मिला।
- भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून द्वारा ऑनलाइन आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में श्रीमती पी. एम. पुरोहित, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, आईसीएआर–डीएमएपीआर को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- निदेशालय में 2023–24 के दौरान मूल रूप से हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत श्री रघुबीर प्रजापति, वरिष्ठ लिपिक, आईसीएआर–डीएमएपीआर को प्रथम पुरस्कार दिया गया।

भाकृअनुप-राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह

भाकृअनुप–राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे में दिनांक 13 से 26 सितंबर 2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 13 सितंबर 2024 को निदेशक महोदय की अध्यक्षता में अपराह्न 4.00 बजे सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने की शपथ दिलवाकर हिंदी पखवाड़ा प्रारंभ किया गया। निदेशक महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों में सहभागिता करने हेतु अधिकारियों तथा कर्मचारियों से आग्रह किया।

दिनांक 30 सितंबर 2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर हिंदी के जाने माने लेखक श्री. संजय भारद्वाज जी मुख्य अतिथि थे।

श्री विट्ठल गायकवाड़, सहायक ने वर्ष 2023–24 के दौरान कार्यालय द्वारा राजभाषा में किये जा रहे कार्यों से अवगत कराया। डॉ. रोशनी समर्थ, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा हिंदी पखवाड़ा में आयोजित हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे – आशुभाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, प्रश्न मंच प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, हिंदी काव्य पाठ, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, कंप्यूटर पर यूनिकोड में हिंदी टायपिंग इत्यादि के बारे में जानकारी दी गई। पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं में केंद्र के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हर्ष उल्हास के साथ सहभागिता की। हिंदी पखवाड़ा में आयोजित प्रतियोगिताओं के द्वारा होने वाले सकारात्मक बदलाव, पर्याप्त मात्रा में प्रतिभागियों की उपस्थिति और राजभाषा में किए जा रहे कार्यों में वृद्धि से निदेशक महोदय ने प्रशासनिक और वित्त अनुभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों की प्रशंसा की।

मुख्य अतिथि श्री संजय भारद्वाज जी ने अपने संबोधन में इस संस्थान द्वारा राजभाषा में किए जा रहे कार्यालयीन कार्यों की प्रगति की प्रशंसा की तथा संतोष व्यक्त किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों और पर्यवेक्षकों की सराहना की गई। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पुणे में स्थित कार्यालयों में से यह कार्यालय राजभाषा के क्षेत्र में बहुत ही अच्छा कार्य कर रहा है। हिंदी भाषा सभ्यता को संस्कारित करने वाली वीणा एवं संस्कृति को शब्द देने वाली वाणी है। भारत सरकार हिंदी और भारतीय भाषाओं को शासन, प्रशासन और शिक्षा मे समुचित स्थान दे रही है, यह प्रसन्नता की बात है। आनेवाला समय भारतीय भाषाओं का है। उन्होंने सलाह दी कि प्रत्येक कर्मचारी हिंदी में काम करने की अपनी जिम्मेवारी समझे।

समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा पारितोषक वितरण किये गये। इसके साथ ही हिंदी में अधिक कार्य करने वाले कर्मचारियों को भी पुरस्कार दिए गये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रोशनी समर्थ द्वारा किया गया। डॉ. अजय कुमार शर्मा द्वारा विजेताओं को शुभकामनाएं दी गईं तथा धन्यवाद ज्ञापन दिया। सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए समापन समारोह कार्यक्रम सांय 5.10 बजे समाप्त हुआ।

भाकृअनुप-भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

भाकृअनुप–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने एवं समस्त कार्यालय कर्मियों में राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरुचि पैदा करने के उद्देश्य से 10–26 सितंबर 2024 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों/प्रतियोग्तिाओं जैसे निबंध लेखन, आशुभाषण, हिंदी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, हिन्दी टंकण, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन के साथ–साथ वर्ष 2023–24 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य/लेखन करने संबंधी प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। सभी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं में सभी संवर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। पखवाड़े के समापन के अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ सुनील कुमार ने विजयी प्रतिभागियों को बधाई देते हूँ, सभी वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से अपने अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में करने तथा शोधकार्यों को हिंदी पत्रिकाओं में लोकप्रिय लेखों के माध्यम से किसानों तक पहुँचा कर उनकी समस्याओं का समाधान करने का आग्रह किया।

संस्थान द्वारा ''कार्यालय एवं प्रयोगशाला सुरक्षा'' पर एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ में दिनांक 11 जून 2024 को त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य विषय कार्यालय एवं प्रयोगशाला सुरक्षा पर केंद्रित रहा। कार्यक्रम का उदघाटन संस्थान के निदेशक एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ सुनील कुमार ने किया। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि आज के बदलते परिवेश एवं पर्यावरण में विभिन्न मानव निर्मित एवं प्राकृतिक आपदाओं जैसे आग लगने, गैस रिसाव इत्यादि की घटनाए, आम हो चली हैं और शोध संस्थानों में जहां पर कि प्रयोगशालाओं में विभिन्न प्रकार के रसायनों का प्रयोग होता है, वहां पर इस तरह की आपदाओं की चुनौती निरंतर बनी रहती है। इसलिए, सभी संबंधित कार्यालय कर्मियों को इसके प्रति जागरुक एवं प्रबंधन तकनीकी के प्रायोगिक ज्ञान से परिपूर्ण होना चाहि, ताकि हर व्यक्ति अपने स्तर पर इन आपदाओं से निपटने में सक्षम हो। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ ललित कुमार ने प्रयोगशाला,वं कार्यालय में रसायनों के प्रयोग के दौरान सावधानियों के ऊपर अपना विस्तृत व्याख्यान दिया।

संस्थान में वर्ष 2024 के दौरान रा.का.स. की त्रैमासिक बैठकों का विवरण

कार्यक्रम	दिनांक
रा.का.स. की त्रैमासिक बैठक	06.02.2024
रा.का.स. की त्रैमासिक बैठक	10.06.2024
रा.का.स. की त्रैमासिक बैठक	23.08.2024
रा.का.स. की त्रैमासिक बैठक	27.12.2024

वर्ष 2024 के दौरान संस्थान के प्रमुख हिंदी प्रकाशन

- कृषि प्रणाली आलोक 2023

वर्ष 2024 के दौरान संस्थान द्वारा विभिन्न सम्मेलनों/कार्यक्रमों में भागीदारी

कार्यक्रम	दिनांक	प्रतिभागिता करने वाले अधिकारी का नाम
न.रा.का.स. की बैठक	22 मई, 2024	डॉ सुनील कुमार, निदेशक, श्री आलोक शर्मा, कार्यालय प्रमुख एवं श्रीमती दीपशिखा, सदस्य सचिव, रा.का.स.
न.रा.का.स. की बैठक	04 अक्टूबर, 2024	डॉ चन्द्रभानु, प्रधान वैज्ञानिक एवं श्री अलोक शर्मा, कार्यालय प्रमुख
हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन, भारत मंडपम, नई दिल्ली	14–15 सितंबर, 2024	डॉ चन्द्रभानु, प्रधान वैज्ञानिक

कृषि प्रणाली संस्थान में ''एक पेड़ मां के नाम'' कार्यक्रम का शुभारंभ

भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ द्वारा दिनांक 21 अगस्त, 2024 को एक पेड़ मां के नाम'' कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। संस्थान द्वारा 500 पेड़ लगाने के लक्ष्य को लेकर शुरू किए गए। इस कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ सुनील कुमार के कर कमल द्वारा किया गया। निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में बताया कि कृषि प्रणाली संस्थान भारत सरकार के फ्लैगशिप प्रोगाम ''एक पेड़ मां के नाम'' को वृहद स्तर पर आयोजित करने के लिए कृत संकल्प है। समेकित कृषि प्रणाली में पेड़ों को समाहित करने से वातावरण की कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके बहुत दीर्घ अवधि तक ठोस अवस्था में संरक्षित करके पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को कम किया जा सकता है।

भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

हिंदी पखवाड़ा 2024

प्रतियोगिता

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा के दौरान निबंध, यूनिकोड टंकण, व्याकरण, शब्दार्थ, प्रश्नमंच, आशुभाषण, स्वरचित काव्य पाठ, अंताक्षरी एवं हिंदी कार्यशाला जैसी बहुआयामी प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी रही। प्रतियोगिताओं के समुचित संचालन हेतु विभिन्न समन्वयक एवं निर्णायक भी बनाए गए थे। हिंदी और हिंदीतर भाषियों के लिए पृथक मूल्यांकन व्यवस्था सुनिश्चित की गई थी, जिससे सहभागिता और अधिक समावेशी बन सके।

समापन-सह-पुरस्कार वितरण समारोह

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना में हिंदी पखवाडा–2024 का समापन समारोह दिनांक 30 सितम्बर 2024 को संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. नजीर अहमद, पूर्व कुलपति, एस.के.यू.ए.एस.टी., कश्मीर, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. टी.के. बेहेरा, निदेशक, भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु और डॉ. आर. के. यादव, प्रोफेसर–सह–प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली उपस्थित थे। सभी गणमान्य अतिथियों ने संस्थान द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि आगे भी इसी तरह सरल हिंदी भाषा का प्रयोग कर इसे जन–जन तक पहुंचाते रहें।

डॉ. शिवानी, प्रधान वैज्ञानिक ने मंच का संचालन करते हुए उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों एवं कर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया, जिसके उपरांत डॉ. आशुतोष उपाध्याय, प्रभागाध्यक्ष, भूमि एवं जल प्रबंधन ने संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति और राजभाषा हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इस पखवाड़ा में दिनांक 14.09.2024 से 29.09.2024 तक आयोजित प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी दी।

डॉ अनुप दास ने अपने अभिभाषण में राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्यालयी कार्य करने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि हमारा संस्थान 'क' क्षेत्र में आता है। अतः, यह हम लोगों नैतिक एवं संवैधानिक जिम्मेदारी है कि हम अपने सभी कार्यालयीन कार्य 100% हिंदी में ही करें, ताकि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिए गए लक्ष्य को पूरा कर सकें। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों को सरल हिंदी का प्रयोग करते हुए कृषि से संबंधित तकनीकों को संकलित एवं प्रकाशित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में गणमान्य अतिथियों एवं निदेशक, डॉ. दास के कर कमलों से संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रदर्शन के आधार पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान कर उत्साहवर्धन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. आशुतोष उपाध्याय, प्रभागाध्यक्ष, भूमि एवं जल प्रबंधन ने अपनी प्रेरणात्मक हिंदी कविता से और डॉ. तन्मय कुमार कोले, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डॉ. अभिषेक कुमार, वैज्ञानिक ने हिंदी गीत से सभागार में उपस्थित सभी कर्मियों का दिल जीत लिया।

पखवाड़ा कार्यक्रम के सफल आयोजन में डॉ. रजनी कुमारी, डॉ. ज्योति कुमार, डॉ. कुमारी शुभा, श्रीमती प्रभा कुमारी, हिंदी अनुवादक उमेश कुमार मिश्र तथा प्रशासनिक एवं तकनीकी अधिकारियों की सराहनीय भूमिका रही। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

हिंदी प्रकाशन

पत्रिकाः अक्षय खेती

प्रसार पुस्तिका

- सूखे किण्वित चावल से देसी मुर्गियों का आहार लागत प्रभावी एवं स्थाई विकल्प।
- केंद्रीय योजनाओं द्वारा कृषक–सशक्तिकरण।

तकनीकी बुलेटिन

- वैज्ञानिक विधि से सूर्यमुखी की खेती
- सूक्ष्म पोषक तत्वों के कार्य
- उत्तरी छोटानागपुर पठारी क्षेत्रों में आलू की वैज्ञानिक खेती
- स्वच्छ पशुशाला
- थनैला रोग
- किसानों के लिए सरकारी योजनाएं

भाकृअनुप-केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोवा

हिंदी पखवाड़ा 2024

हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह दिनांक 13 सितंबर, 2024 को सादगी एवं गरिमा के साथ शुरू हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के माननीय निदेशक डॉ. प्रवीण कुमार एवं राजभाषा अधिकारी डॉ. मतला जूलियट गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया।

निदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी आज हर क्षेत्र में अपना प्रभाव सशक्त रूप से स्थापित कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि अधिक से अधिक सरकारी कार्य, जनसम्पर्क हिंदी भाषा में किए जाएँ, तो उसकी उपयोगिता एवं सार्थकता और भी बढ़ जाती है। अतः हम सभी का दायित्व है कि राजभाषा हिंदी को सरकारी कार्यों में निरंतर बढ़ावा दें। उन्होंने संस्थान के सभी कर्मचारियों से हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित होने वाली विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

पखवाड़े में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम निम्नलिखित प्रकार से हैः

प्रतियोगिता/कार्यक्रम

- हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह।
- सुलेख प्रतियोगिता–सभी कर्मचारियों तथा संविदा कर्मचारियों के लिए।
- हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता–सभी कर्मचारियों तथा संविदा कर्मचारियों के लिए।
- हिंदी अंत्याक्षरी प्रतियोगिता (प्रथम चरण)–सभी कर्मचारियों तथा संविदा कर्मचारियों के लिए।
- कंप्यूटर पर यूनिकोड में टंकण दृसभी कर्मचारियों तथा संविदा कर्मचारियों के लिए।

कर्मचारियों के बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं

- प्रतिभा दर्शन।
- चित्रकला।
- उत्तर गोवा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों एवं भाकृअनुप के सभी कर्मचारियों तथा संविदा कर्मचारियों के लिए कार्यशाला एवं अशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन।
- हिंदी अंत्याक्षरी का अंतिम चरण।
- काव्यपाठ प्रतियोगिता–सभी कर्मचारियों तथा संविदा कर्मचारियों के लिए एवं हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह तथा पुरस्कार वितरण।

श्री राहुल कुलकर्णी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (मृदा विज्ञान) एवं सह राजभाषा अधिकारी ने कार्यक्रम का संचालन एवं आभार व्यक्त किया।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह

भाकृअनुप–केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोवा में 13 सितंबर से 30 सितंबर, 2024 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे सुलेख प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर यूनिकोड में

टंकण, हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता, अंताक्षरी प्रतियोगिता और हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता। इसके अतिरिक्त बच्चों के लिए भी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। सभी वर्ग के कर्मचारियों ने इन प्रतिस्पर्धाओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। पखवाड़ा के समापन समारोह में डॉ एच के गुप्ता और श्री राजेश तिवारी जी सम्माननीय अतिथि एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता के लिए निर्णायक के रूप में मंच पर उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत काव्य पाठ प्रतियोगिता से की गई। तत्पश्चात् मान्यवरों के हाथों दीप प्रज्वलन किया गया।

- भाकृअनुप–केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोवा में "राजभाषा की दशा एवं दिशा" पर कार्यशाला
- "कार्यालय में हिंदी का प्रयोग एवं हिंदी वर्तनी, उच्चारण और सामान्य व्याकरण" पर कार्यशाला
- "हिंदी राजभाषा का प्रचार एवं प्रसार कैसे किया जा सकता है" पर कार्यशाला

नोट्स

भाकृअनुप
ICAR